देवी प्रतिमा के रक्षक

सुनील दीपक

देवी प्रतिमा के रक्षक

(उपन्यास)

सुनील दीपक

कथा-सार

बहुत साल पहले त्रिनेत्र के गुरु जी, कोरिया से एक मूर्ति के साथ भागे थे और अब भारत में रहते हैं। उस मूर्ति में एक विशेष शक्ति है, कि उसके साथ रहने से बच्चों में छिपी हुई गुप्त-शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं।

एक जापानी गैंग उस मूर्ति को चाहता है और उसे पाने के लिए एक याकूज़ा-खूनी ताकानोरी को भारत भेजता है। जैसे ही गुरु जी को उसके आने का आभास होता है, वह उस मूर्ति को छुपा कर जीवित समाधी ले लेते हैं। वह मूर्ति कहाँ छुपी है, यह रहस्य एक कविता-पहेली में छुपा है।

एक ओर खूनी ताकानोरी और उसके साथी गुँडे हैं, और दूसरी ओर हैं गुरु जी के शिष्य - त्रिनेत्र, आभा और अनाथ आश्रम के गुप्त शक्ति वाले पाँच बच्चे।

क्या त्रिनेत्र और उसके साथी अपने गुरु जी और मूर्ति की रक्षा कर पायेंगे? असम, सिक्किम और मणिपुर की पृष्ठभूमि में रचा, सुनील दीपक का नया फैंटेसी उपन्यास।

लेखक परिचय

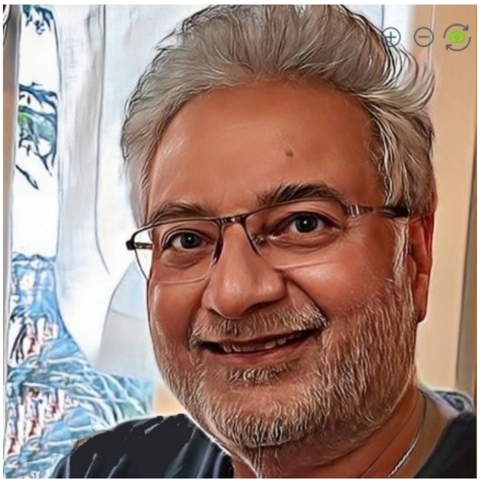

डॉ. सुनील दीपक भारतीय मूल के रिटायर्ड डॉक्टर हैं जो उत्तर-पूर्वी इटली में रहते हैं। वह 2005 से एक ब्लॉग "जो न कह सके" पर लिखते हैं। इस ब्लॉग के माध्यम से आप उनके अन्य उपन्यास और लेखों की जानकारी पा सकते हैं।

उन्होंने हिंदी उपन्यास लिखना 2022-23 में शुरु किया है।

आप उनके ब्लॉग से (https://jonakehsake.blogspot.com/) या ईमेल से (sunil@kalpana.it) उनसे सम्पर्क कर सकते हैं।

Copyright

देवी प्रतिमा के रक्षक

प्रथम संस्करण – अप्रैल 2026 © सुनील दीपक

Devi Pratima Ke Rakshak

Hindi Fantasy Fiction by Sunil Deepak

Cover Art & Design – AI, Marco & Sunil Deepak

सर्व-अधिकार सुरक्षित। इस पुस्तक को या इसके किसी हिस्से को प्रकाशक-लेखक की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में कॉपी करना, फोटोकॉपी करना, फाईल बनाना, परिवर्धित करना, प्रकाशित करना, इसकी कहानी पर वीडयो या फ़िल्म बनाना निषेध है।

मार्को और सेरेना
के लिए

1. पूर्वाध्याय: बिष्णुपुर, बांकुरा, पश्चिम बंगाल, 2014

उस मंदिर की दीवारों पर राधा और कृष्ण की कहानियाँ लाल पक्की मिट्टी की शिल्पकला से सजी हुईं थीं। मंदिर के सामने, सड़क के पार, दो बड़े तालाब थे, जिनके किनारों पर ऊँचे-घने पेड़ों की कतारें थीं। उनके पीछे तीन गोलाकार छोटे तालाब और थे, जिनमें काई की वजह से उनके जल का रंग हरे पन्ने जैसा चमकता था। उन तालाबों के पीछे घरों की कतारें थीं, लेकिन उनके बीच में भी बहुत से छोटे-बड़े ताल-तलैया थे।

ऐसे ही एक छोटे से तालाब के किनारे वह झोपड़ी थी, जहाँ पर त्री अपने पिता समान गुरु जी के साथ बड़ा हुआ था।

विष्णुपुर के पक्की मिट्टी की शिल्प कला से सजे वैष्णव मंदिर, बंगाल ही में नहीं, सारे भारत में प्रसिद्ध हैं। शायद उन्हीं से प्रेरणा पा कर त्री शिल्पकार बना है। उसकी लाल रंग की पक्की मिट्टी की घोड़ों की मूर्तियाँ, मंदिर में आने वाले तीर्थयात्रियों और पर्यटकों में खूब बिकती हैं और उनसे उसकी अच्छी कमाई होती है।

वह गुरु जी से कहता है, “अब मैं अच्छा कमा लेता हूँ, फिर जब आप के घटनों में दर्द हो रहा है, तो आप हर रोज़ भिक्षा माँगने के लिए यहाँ-वहाँ क्यों भटकते हैं? आप को आराम करना चाहिये।”

लोग उसके गुरु जी को जामुन बाबा बुलाते हैं, हालाँकि उनका असली नाम जून-मिन है। वह कोरिया देश से आये हैं। वह कहते हैं, "बेटा तुम कमाते हो तो अपने पैसे जोड कर रखना सीखो, एक दिन तुम्हारे काम आयेंगे। मैं तो भिक्षुक हूँ, भिक्षा माँगना मेरा धर्म है।"

सुबह उठ कर गुरु जी अपना कटोरा ले कर भिक्षा माँगने निकल जाते हैं और शाम को घर लौटते हैं। त्री सुबह शिल्प बनाता है और फिर सारा दिन मंदिर के बाहर ग्राहक ढूँढ़ता है। सालों से उनका जीवन ऐसे ही चल रहा था, लेकिन एक दिन उनकी यह दिनचर्या बदल गयी।

उस दिन वह सुबह मुँह-अँधेरे, ईंट वाली भट्टी पर अपनी मूर्तियों को पकाने गया था। पक्की मिट्टी के शिल्प को पकाने के लिए बड़ा कौशल चाहिये। पहली बात है कि मूर्तियाँ पूरी तरह से सूखी होनी चाहिये। दूसरी बात, भट्टी का तापमान सही होना चाहिये। और तीसरी, पकने के बाद उन्हें धीरे-धीरे ठंडा करना चाहिये। अगर इन बातों का ध्यान न रखो, तो मूर्तियाँ टूट जाती हैं और सारी मेहनत बेकार हो जाती है।

वह ठेले से मूर्तियाँ उतार कर झोपड़ी में रख रहा था जब गुरु जी ने उसे बुलाया।

“क्या हुआ गुरु जी, आज आप की तबियत ठीक नहीं है?” इस समय तक वह अपनी भिक्षा का कटोरा ले कर निकल गये होते हैं, लेकिन उस दिन वह घर पर थे।

“भीतर से माँ की प्रतिमा उठा लो और मेरे साथ चलो", गुरु जी ने कहा, वह गम्भीर लग रहे थे।

उनके यहाँ एक हरे रंग की माँ तारा की देवी मूर्ति है। गुरु जी कहते हैं कि बौद्धिसत्व अवलोकितेश्वर की करुणामयी आँखों से जब आँसू निकले तो दाहिनी आँख के आँसू से हरित तारा बनी। वह मूर्ति करीब बारह इँच की है, लेकिन भारी नहीं है।

त्री ने अपने ठेले को प्लास्टिक की तिरपाल से ढका और उस मूर्ति को ले आया। तालाबों के बीच से होते हुए, वह मंदिर की ओर आये और उसके प्रांगण के दक्षिण में बनी कीर्तनशाला के चबूतरे पर बैठ गये।

उस समय वहाँ मंदिर देखने वाले इक्का-दुक्का पर्यटक थे, और कीर्तनशाला वाला हिस्सा खाली था। त्री ने माँ तारा की मूर्ति को ध्यान से पास में रख दिया। वह समझ गया था कि आज गुरु जी को कोई विशेष बात करनी है, क्योंकि उससे पहले वह कभी उस मूर्ति को उसके पूजा-स्थान से उठा कर बाहर नहीं लाये थे।

“बताओ गुरु जी, क्या हो गया?” उसने चिंता के साथ पूछा।

गुरु जी कुछ देर तक उसकी ओर देखते रहे, उनकी करुणामय आँखों में नमी चमक रही थी। फिर धीरे से बोले, “तुम्हारे यहाँ से जाने का समय आ गया है।"

त्री स्तब्ध रह गया, कुछ बोल नहीं पाया। बचपन से गुरु जी ने उसे कई बार कहा था कि एक दिन उनके जीवन की राहें अलग हो जायेंगी और तब उसे उन्हें छोड कर कहीं दूर जाना पड़ेगा, लेकिन उसे विश्वास नहीं होता था कि ऐसा कभी होगा।

वह बोले, “भिक्षुक सब कुछ त्याग देता है, घर, परिवार, रिश्ते, नाते, उसके लिए कुछ नहीं होते। मैंने भी बहुत कोशिश की, कि तुमसे स्नेह और लगाव न बने, लेकिन मैं उसमें असफल रहा। तुम्हें अपने से दूर भेजना, मेरे लिए आसान नहीं है, लेकिन करना ही होगा।"

“क्यों?”

“क्योंकि अब तुम्हें अपने जीवन की नयी राह बनानी है। मैं तुम्हें हमेशा के लिए अपने से दूर नहीं भेज रहा, हम लोग मिलते रहेंगे। लेकिन मैं चाहता हूँ कि जितना मैंने तुम्हें सिखाया है, तुम उसके लिए एक नया भविष्य बनाओ ताकि वह हमारे साथ समाप्त नहीं हो, आगे चलता रहे।"

त्री ने धीरे से सिर हिला कर हामी भरी।

"तुमने अपने माता-पिता के बारे में मुझसे कई बार पूछा है, आज मैं तुम्हें वह सारी बात बताऊँगा। तुम मुझे गुवाहाटी में मिले थे। जहाँ गुवाहाटी का हवाई अड्डा है, उसके पास एक झील है, दीपोर बील। झील के बीच में एक पुल है जहाँ से रेल गुज़रती है। पुल के दूसरी ओर झील का एक छोटा सा कटा हुआ हिस्सा है, जहाँ मैं रहता था। झील के पास, एक कूड़े की पहाड़ी थी। दिन भर शहर से ट्रक आते थे और उस पहाड़ी पर कूड़ा गिराते थे। वहाँ पास में कुछ गरीब लोग रहते थे, जो उस कूड़े में काम की चीज़ें खोजते और बेचते थे। एक दिन शाम को मैं वहाँ से गुज़र रहा था, अँधेरा होने लगा था और कूड़े में खोजने वाले सब लोग चले गये थे। वहाँ मैंने तुम्हें देखा, तुम सड़क के किनारे बैठे थे, तीन-चार साल के थे।"

“वहाँ पास में रशीद नाम का कबाड़ी वाला रहता था, जिसे मैं जानता था। मैंने तुम्हारा हाथ पकड़ा और रशीद के पास गया, पता चला कि तुम्हारी माँ की मृत्यु हो गयी थी और तुम्हारा और कोई नहीं था। वह बोला कि पुलिस थाने में खबर दे दी है, तुम्हें अनाथाश्रम ले जाने के लिए वह किसी को भेजेंगे। मैं तुम्हें वहाँ अकेला नहीं छोड़ना चाहता था, तुम्हारे पास बैठ गया, सोचा कि जब पुलिसवाला तुम्हें लेने आयेगा, तब मैं अपनी कुटिया में लौट जाऊँगा। लेकिन रात हो गयी, कोई नहीं आया। तब मैंने सोचा कि उस रात को तुम मेरी कुटिया में रह सकते हो, तुम्हें अपने साथ ले आया। मैं चकित था कि तुम एक बार भी नहीं रोये, न ही कुछ कहा। चुपचाप उठ कर मेरे साथ कुटिया में आ गये। मेरे पास एक ही दरी थी जिस पर मैं सोता था, तुम मेरे साथ ही सोये।"

त्री मूक गुरु जी को देख रहा था, उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

“उस रात मेरे सपने में माँ तारा आयीं, वैसा सपना मैंने पहले कभी नहीं देखा था। माँ मेरे सिरहाने खड़ी थीं, चारों ओर उनका प्रकाश फ़ैला था। माँ ने मेरे माथे पर हाथ रखा और मुस्करायीं, तब मैंने देखा कि सपने में तुम भी हो। उस सपने में और क्या हुआ, मुझे याद नहीं, लेकिन जब सुबह हुई तो माँ की वह स्मृति मेरे मन में जीवित थी। उसी दिन मैंने अपनी दरी, भिक्षा की कटोरी और माँ की प्रतिमा समेट लीं, तुम्हें साथ लिया और यात्रा पर निकल पड़ा। घूमते-घूमते, डेढ़-दो साल के बाद हम यहाँ विष्णुपुर आये और रुक गये। जिस दिन तुम मुझे मिले थे, वह आज का ही दिन था, अठारह फरवरी, और इस बात को आज चौदह साल हो गये हैं।"

कुछ देर तक त्री रोता रहा, फिर आँसू पोंछ कर बोला, “मेरा नाम, त्रिनेत्र, मुझे आप ने ही दिया?”

गुरु जी ने एक थैली से एक काला धागा निकाला जिस पर एक छोटा सा त्रिशूल लटक रहा था, उसकी ओर बढ़ाते हुए बोले, “जब तुम मिले तब यह धागा तुम्हारे गले में था, शायद तुम्हारी माँ शिव-भक्त थीं? त्रिनेत्र माने शिव जी का तीसरा नेत्र, उसे आत्म-ज्ञान और दिव्य दृष्टि का प्रतीक मानते हैं। तुम्हारी गुप्त शक्ति की वजह से मैंने तुम्हारे लिए यह नाम चुना।"

“मेरी गुप्त शक्ति के बारे में आप को कब पता चला?”

गुरु जी मुस्कराये, बोले, “जब मैंने कूड़े की पहाड़ी के पास तुम्हें बैठे देखा था, तभी मुझे तुम्हारे भीतर छिपी शक्ति की अनुभूति हो गयी थी।"

त्री की गुप्त शक्ति है कि वह जब चाहे तब गुम हो सकता है। एक क्षण पहले वह सामने बैठा है और दूसरे क्षण, वह चाहे तो दिखाई नहीं देता। लगता है जैसे उसकी शक्ति से उसके शरीर के अणु-परमाणु बेरंग या पारदर्शी हो जाते हैं। बचपन से उसने गुरु जी से ध्यान लगाना, मन को एकाग्र करना और उस शक्ति पर नियंत्रण करना सीखा है। अब वह उस शक्ति के संचालन में इतना दक्ष है कि उसे न दिखाई देने के लिए सोचना नहीं पड़ता।

गुरु जी फिर मुस्कराये, बोले, “लेकिन मैंने तुम्हें कभी अपनी गुप्त शक्ति के बारे में नहीं बताया।"

त्री भौचक्का हो गया, बोला, “आप भी लुप्त हो सकते हैं?”

“नहीं", गुरु जी ने सिर हिला कर मना किया, बोले, “मेरी गुप्त शक्ति तुमसे भिन्न है। दुनिया में दस हज़ार में से एक बच्चे में गुप्त शक्ति की छिपी हुई सम्भावना होती है। अगर उसे बचपन में जागृत और विकसित न किया जाये तो वह शक्ति मुरझा कर मर जाती है। किसी की श्रवण शक्ति होती है, किसी की दृष्टि शक्ति और किसी की मानस-शक्ति। हमारी यह माँ तारा की प्रतिमा", उन्होंने पास रखी मूर्ति की ओर इशारा किया, “यह सामान्य मूर्ति नहीं है, जब यह पास हो तो इससे बच्चों की गुप्त शक्ति जागृत, विकसित और प्रबल हो जाती है।"

“माँ की इस मूर्ति से शक्ति जागृत होती है?”

“हाँ, और इस प्रतिमा की रक्षा के लिए सालों से मैं अपना देश त्याग कर भटक रहा हूँ। कुछ बुरे लोग हैं जो इसे छीनना चाहते हैं। वह शक्ति का प्रयोग गलत कामों के लिए करना चाहते हैं, बच्चों को चोर, डाकू और खूनी बनाना चाहते हैं। उन्होंने इसके लिए मेरे गुरु जी को मार दिया। मैं चाहता हूँ कि तुम इस प्रतिमा को ले कर कहीं दूर चले जाओ, वहाँ एक अनाथाश्रम खोलो और गुप्त-शक्ति वाले बच्चे खोज कर, उनकी शक्तियाँ विकसित करके, उन्हें अच्छे कामों के लिए तैयार करो।"

*****

2. टोकियो, जापान, 1 जनवरी 2026

नये वर्ष के पहले दिन, रिकू यामागुची ने ताकानोरी को टेलीफोन करके अपने घर बुलाया, “ओरी सान, तुम्हारे लिए एक काम है।"

ओरी ने रात को देर तक जश्न मनाया था और सुबह तीन बजे थक कर, दो युवतियों के साथ सोने गया था। फिर भी, हर रोज़ की तरह वह सुबह सात बजे उठ कर तैयार हो कर दोजो में व्यायाम करने गया था। 'दोजो' एक पाराम्परिक व्यायामशाला है, जहाँ वह प्रतिदिन सशस्त्र और शस्त्रहीन लड़ाई के अभ्यास करता है।

वहाँ जाते हुए वह सोच रहा था कि वह तीस साल का हो चुका है, अब यह मारा-मारी और लड़ाई के काम वह अधिक दिनों तक नहीं कर पायेगा। लेकिन अगर वह यह नहीं करेगा तो क्या करेगा? उसने बचपन से केवल यही सीखा है। सब जानते हैं कि उसके जैसा काबिल खूनी पूरे टोकियो में, या शायद पूरे जापान में और कोई नहीं है।

जिस काम को कोई और नहीं कर पाता, वह कर लेता है। उसके शिकार कितनी भी कोशिश कर लें, वह उनकी छिपी हुई कमज़ोरियों में से, उन्हें मारने का कोई न कोई रास्ता निकाल लेता है। जापानी भाषा में उसके जैसे लोगों को याकूज़ा कहते हैं लेकिन वह अपने आप को समुराई-योद्धा मानता है। किसी में हिम्मत नहीं है कि उसके मुँह पर उसे याकूज़ा कह सके।

दोजो में उसके गुरु जी उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे, उसने झुक कर उनका अभिवादन किया। उसके गुरु जी उसे बचपन से जानते हैं, उन्हें वह पिता समान मानता है। उस दिन जब उसने अभ्यास पूरा किया और वहाँ से जाने लगा तो गुरु जी ने उसे रुकने का इशारा किया, झुक कर बोले, “ओरी सान, आज मेरा यहाँ आखिरी दिन है, मैं तुमसे विदा लेता हूँ।"

ओरी को उनकी बात समझ में नहीं आयी, पूछा, “आखिरी दिन? इसका क्या मतलब?”

“यामागुचि सान का आदेश है। वह कहते हैं कि मेरे रिटायर होने का समय आ गया है।"

यामागुचि सान, यानि रिकू यामागुचि। रिकू जानता है कि गुरु जी उसके लिए कितने महत्वपूर्ण हैं, उसने यह जानबूझ कर किया है। ताकानोरी के मन में आग सी लग गयी, एक क्षण के लिए उसने सोचा कि वह जा कर उसे मार डाले।

गुरु जी उसके मन की बात बिना कहे ही समझ गये, उसकी बाजू पर हाथ रखा, धीरे से बोले, “क्रोध में दिमाग काम नहीं करता, कुछ करने से पहले ठँडे दिमाग से सोचो। यह सच है कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ और इस दोजो को नये और जवान शिक्षकों की आवश्यकता है। आज नहीं तो कल मुझे रिटायर होना ही है। लेकिन तुम इतने सालों से उनके लिए वफ़ादारी से काम करते हो, यामागुचि सान को मुझे यह बात कहने से पहले तुमसे बात करनी चाहिये थी।"

“मैं अब उसके लिए काम नहीं करूँगा।"

गुरु जी ने सिर हिला कर मना किया, बोले, “समझदार व्यक्ति जल्दबाज़ी में निर्णय नहीं लेता। शायद वह चाहते हैं कि तुम गुस्से में ऐसा कोई निर्णय लो? तुम उसका उल्टा करो, उन्हें ऐसे दिखाओ कि तुम्हें मेरी कुछ परवाह नहीं है, और यह समझने की कोशिश करो कि वह तुम्हें रास्ते से क्यों हटाना चाहते हैं?”

चौबिस सालों से वह गुरु जी का शिष्य रहा है। उनके बिना उसे यह दोजो ही नहीं, अपना जीवन भी अधूरा सा लगेगा। वह सोच में पड़ गया।

गुरु जी बोले, “ओरी सान, मुझे वचन दो कि तुम जल्दबाजी में कुछ नहीं करोगे।"

ताकानोरी ने धीरे से सिर हिला कर हामी भरी।

अंत में जाते हुए वह बोले, "मैं आज-कल में अपने गाँव लौट जाऊँगा। जब तुम्हें समय मिले, तब मुझसे मिलने घर आना। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा।"

कुछ घंटे बाद, ताकानोरी घर में बैठा था जब रिकू का टेलीफोन आया। तब तक उसका गुस्सा ठँडा हो गया था। उसने फैसला किया कि जैसी सलाह गुरु जी ने दी है, वह रिकू से गुरु जी के बारे में कुछ नहीं कहेगा।

उसने जल्दी से कपड़े पहने और यामागुचि सान के घर आया। उनका घर ऊँची चारदीवारी से घिरा है, और चारों ओर पहरेदार हैं। भीतर अलग-अलग घर बने हैं। यामागुचि दादा जी करीब नब्बे साल के हैं, और कोने वाले छोटे से घर में रहते हैं। उनकी यादाश्त कमज़ोर हो गयी है, इसलिए उनके साथ हमेशा एक नर्स रहती है। वह पहले उनसे मिलने गया।

दादा जी की सभी नर्सें उसे पहचानती हैं। रिकू की तरह वह भी उन्हें ओजीसान यानि दादा जी बुलाता है। जब वह वहाँ पहुँचा तो वह नाश्ता कर रहे थे। उसे देख कर मुस्कराये तो वह बोला, “ओजीसान, कैसे हैं आप?”

दादा जी, सब को देख कर मुस्कराते हैं लेकिन किसी को पहचानते नहीं हैं। वह कुछ नहीं बोले, चुपचाप नाश्ता करते रहे।

ताकानोरी अपने पिता की मृत्यु के बाद पैदा हुआ था और अक्को शहर में अपनी माँ के साथ रहता था। उसके पिता भी यामागुचि परिवार के लिए काम करते थे। उस समय यामागुचि दादा जी सारा काम देखते थे। उनके कई धँधे थे - जूएघर चलाना, वैश्याघर और एस्कोर्ट का धँधा, नशीले पदार्थों की तस्करी और बेचना, और लोगों के खून करवाना। दादा जी उसकी माँ को घर चलाने के लिए पैसे देते थे। उनका पोता रिकू जिस स्कूल में पढ़ता था, उन्होंने ताकानोरी को उसी स्कूल में पढ़ने भेजा था।

जब वह सात साल का था, जब दादा जी ने उसकी गुप्त-शक्ति को पहचान लिया था और कहा था कि वह उनके लिए काम करेगा। उसे मार्शियल आर्ट और विभिन्न शस्त्रों की ट्रेनिन्ग दी गयी थी। लेकिन गुप्त-शक्ति के बारे में दादा जी की जानकारी सीमित थी और उनकी अपनी शक्ति विशेष प्रबल नहीं थी, इसलिए वह उसकी शक्ति को पूरा विकसित नहीं करा पाये थे।

ताकानोरी की दो गुप्त-शक्तियाँ हैं, लोगों के मन की बात को पढ़ना और दूर से गुप्त-शक्ति वाले व्यक्तियों की शक्ति-लहरों को खोजना। लेकिन उसकी इन शक्तियों के बारे में दादा जी भी पूरी तरह से नहीं जानते थे।

जब उसकी स्कूल की पढ़ाई पूरी हुई थी, तब तक दादा जी रिटायर हो गये थे और उनका बेटा बिज़नेस चलाता था। एक साल पहले, एक दर्घटना में उनके बेटे के सिर में चोट आयी थी। उसके बाद से बिज़नेस की ज़िम्मेदारी रिकू ने सम्भाल ली है। वह ओरी से करीब दस साल बड़ा है।

ओरी को लगता है कि रिकू उससे जलता है। उनके धँधे में उसका बहुत नाम है, जिसे कोई नहीं मार पाता, उसे वह मार सकता है। शायद रिकू को यह बात अच्छी नहीं लगती?

दादा जी के पास कुछ देर बैठ कर, वह रिकू से मिलने आया। वह भीतर घुसा तो देखा कि रिकू चटाई पर पालथी मार कर बैठा चाय पी रहा है।

“कोन्नीछिवा बॉस", कह कर उसने हलका सा झुक कर, मुस्कराते हुए उसका अभिवादन किया।

शायद रिकू सोच रहा था कि वह गुस्से में होगा और उसे मुस्कराता देख कर उसे थोड़ा सा आश्चर्य हुआ। वह बोला, “ओजीसान से मिल आये? आओ, यहाँ बैठो", और उसके लिए चाय लाने का इशारा किया, “तुम्हारे लिए एक विषेश काम है, तुम्हें तुरंत इंडिया जाना है और वहाँ से हमारे लिए एक प्रतिमा खोज कर लानी है।"

एक प्रतिमा? उसने सोचा कि वह याकूज़ा है, इस तरह के छोटे-मोटे काम के लिए क्या उनके पास अन्य व्यक्ति नहीं हैं? लेकिन गुरु जी की बात को याद करके, वह कुछ नहीं बोला, चुपचाप रिकू की ओर देखता रहा।

“पिता जी कहते हैं कि यह काम तुम्हें सौंपना चाहिये, वह सोचते हैं कि तुम उस मूर्ति को पहचान लोगे क्योंकि उसमें कुछ विशेष शक्ति है। हम उसे बहुत सालों से खोजने की कोशिश कर रहे हैं। कई बार हमें उसकी खबर मिली, लेकिन हर बार वह भिक्षुक हमसे बच कर भाग गया। अब यह काम तुम्हें करना है।"

"इतने सालों के बाद, हमें उस भिक्षुक का पता कैसे चला?” ओरी ने पूछा।

“तुम हरूकी को जानते हो? उसने उस भिक्षुक को एक वीडियो में देख कर पहचान लिया और हमें खबर की। बहुत साल पहले, एक बार हरूकी उस भिक्षुक को पकड़ने थाईलैंड गया था, पर वह उसके वहाँ पहुँचने से पहले ही भाग गया था। यह वीडियो हिन्दुस्तान के उत्तर-पूर्व में जोरहाट नाम के शहर से है। तुम्हें वहाँ जा कर उस भिक्षुक को खोजना है और उस प्रतिमा को लाना है। किसी भी कीमत पर हमें वह मूर्ति चाहिये। कहते हैं कि उस भिक्षुक के पास कोई गुप्त शक्ति है, इसीलिए वह किसी की पकड़ में नहीं आता।"

“गुप्त शक्ति?”

“इस बात में कितना सच है, मैं नहीं जानता।"

ओरी ने अपना चेहरा निर्विकार रखा लेकिन यह बात सुन कर उसके मन में खलबली सी मच गयी। उसने अपनी शक्तियों को सबसे छुपाया है। अगर भिक्षुक में उसके जैसी कोई शक्ति है, तो उससे इस बारे में बात करना बहुत दिलचस्प हो सकता है।

*****

3. मजूली, असम, 2 मार्च 2026

सुबह मुँह-अँधेरे जब बाबा अपने आश्रम से निकले, तो उन्हें पहचानना कठिन था। उन्होंने भिक्षुक के केसरी वस्त्र को उतार कर, गंदे मटमैले से कुर्ता-पजामा पहने थे, उनका सिर और चेहरा गमछे से ढका था और कँधों पर एक पुराना कम्बल लिपटा था। वह कोई गरीब गाँववाला लगते थे। अँधेरे में वह वृक्षों और झाड़ियों के बीच में से छाया की तरह जा रहे थे।

उनकी छोटी सी नाव, नदी के तट के पास पुराने चिथड़ों और सूखे पत्तों से ढ़की थी, जो आसानी से नहीं दिखती थी। वह उसे धकेल कर नदी में ले गये और उसमें बैठे। उनका चप्पू इस कोण से नदी के जल में घुसता है, जैसे मक्खन में गर्म चाकू, ज़रा सी भी आवाज़ नहीं होती। उस दिन भी उनकी नाव पानी को तीर की तरह चीरती हुई जा रही थी।

जब त्री उनसे पूछता है, "गुरु जी, आप का कभी अपने कोरिया देश लौटने का मन नहीं करता?"

तो वह कहते हैं, "मेरे लिए तो तुम ही मेरा परिवार हो, वहाँ लौट कर मैं क्या करूँगा? वहाँ मुझे जानने वाला अब कोई नहीं है।"

नदी पार करके, चंगेली-सूती द्वीप पर उन्होंने नाव को झाड़ियों के बीच में छुपा दिया। इस द्वीप के चप्पे-चप्पे को वह अच्छी तरह पहचानते हैं। तब तक क्षितिज पर अँधेरा कम गहरा होने लगा था। यहाँ भी वह पेड़ों और झाड़ियों के बीच से छाया की तरह निकले। द्वीप पर इक्का-दुक्का घर ही हैं, लेकिन वहाँ कुत्ते हैं, इसलिए वह उन घरों से दूर से, लम्बा चक्कर लगा कर गये।

द्वीप के दूसरे किनारे पर, उन्होंने एक झोपड़ी के बाहर चारपाई पर सोये एक आदमी के कँधे पर हाथ रख कर जगाया, फुसफुसा कर बोले, “जागो शिबेन, सुबह हो गयी, अभी तक सो रहे हो?”

शिबेन उन्हें कई सालों से जानता है। हर बार वह ऐसे ही आते हैं, सुबह मुँह-अँधेरे, और उसे इसी तरह जगाते हैं। वह आँखे मलते हुए, उबासी लेते हुए उठा। पहले उनके पैर छूए, बोला, “कैसे हो बाबा? इस बार इधर बहुत दिनों के बाद आये?”

उसे पता है कि अक्सर वह भिक्षुक-वस्त्र उतार कर, भेस बदल कर आते हैं। कभी वह गँजे सिर वाला बूढ़ा बनते हैं, तो कभी लम्बी मूछों वाला पहलवान। बाबा ने उसे बताया था, “कुछ लोग मेरे पीछे पड़े हैं, वह मुझे मारने की धमकी देते हैं, इसलिए आश्रम से बाहर निकलूँ तो मुझे भेस बदलना पड़ता है। कोई तुमसे मेरे बारे में पूछे तो कहना कि मुझे नहीं जानते, कि मैं तुम्हारे यहाँ कभी नहीं आया।"

आज शिबेन ने जब उनका भेस देखा तो हँसने लगा, “आज क्या बने हैं? गाँव वाले या मछुआरा? जो भी है, आप ने अच्छा भेस बनाया है, बिल्कुल पहचान में नहीं आते। कहिये, आज किधर जाना है?”

“जल्दी चलो, मुझे चापोड़ी में किसी से मिलने जाना है।"

“एक चाय भी नहीं पीयेंगे?”, शिबेन ने पूछा। सुबह-सुबह बिना चाय पीये उसका काम करने का मन नहीं करता।

बाबा बोले, "आज नहीं, मुझे जल्दी है।"

तब उसने एक बाल्टी से पानी ले कर अपना मुँह धोया। उसकी नाव नदी के तट पर एक खूँटे से बँधी थी। उन्हें नाव में बिठाया और तेज़ी से उसे मिस्सामोरा-चापोड़ी के घाट की ओर ले गया। वहाँ पहुँचने में उन्हें करीब बीस मिनट लगे।

जब वह नाव से उतरे तब तक पूर्व में पेड़ों के पीछे से आकाश में हलकी सी लालिमा झलकने लगी थी। उसे पैसे दे कर वह आगे बढ़े।

चापोड़ी से उन्हें नारायणपुर जाना है, लेकिन वहाँ जाने वाले आटो इतनी सुबह नहीं मिलते। घाट के पास दो-तीन ढाबे हैं, बाबा उनमें से एक ढाबे पर गये और चाय के लिए कहा। वहाँ उन्हें किसी ने नहीं पहचाना। चाय का कुल्हड़ ले कर, वह वहाँ चुपचाप अलग हो कर बैठे, कम्बल सिर पर लपेट लिया, किसी से बात नहीं की।

जब सूरज आकाश में ऊपर चढ़ा और सड़क पर लोग आने-जाने लगे तो आटो वाले भी आ गये। तब वह भी उठे और नारायणपुर के लिए आटो खोजने निकले।

इस यात्रा का निर्णय उन्होंने आज सुबह-सुबह ही किया था। पता नहीं क्यों उनकी नींद समय से पहले खुल गयी थी और उनके भीतर से विचार उठा था कि आज उन्हें नारायणपुर जाना चाहिये। वह अपने अंतरमन को जानते हैं, इसलिए जब उन्हें ऐसे संकेत मिलते हैं तो वह सोचते नहीं हैं, उन्हें स्वीकार कर लेते हैं। ऐसे संकेतों ने पहले कई बार उनकी जान बचायी है।

वह डकरोंग पोस्ट आफिस वाली सड़क के कोने पर आटो से उतरे और सीधा ब्राइट बुक स्टोर की ओर बढ़े। दुकान अभी बंद थी, लेकिन उसके साथ जो सीढ़ियाँ ऊपर जा रही थीं, उनका दरवाज़ा खुला था। वह सीढ़ियाँ चढ़े और ऊपर जा कर घर का दरवाज़ा खटखटाया।

एक लड़के ने दरवाज़ा खोला, वह उन्हें पहचान नहीं पाया, पूछा, “कौन हो तुम? क्या चाहिये?”

बाबा ने धीरे से कहा, “बेटा, अपने दादू से कहो कि जामुन बाबा आये हैं।"

उनका नाम सुन कर वह लड़का उन्हें पहचान गया, बोला, “बाबा, आज आप ने यह कैसा भेस बनाया हैं? आईये, भीतर आ जाईये।"

उन्हें बिठा कर वह भीतर अपने दादा जी को जगाने गया और दो मिनट बाद लौटा, बोला, “दादू अभी आते हैं।"

थोड़ी देर के बाद ब्राइट बुक स्टोर के मालिक बोरा साहब, हाथ-मुँह धो कर बाहर आये, हाथ जोड़ कर उनका अभिवादन किया और बोले, “बाबा, नीचे चलते हैं, आप की एक चिट्ठी आयी थी, वह वहीं रखी है।" फिर उन्होंने अपने पोते को आवाज़ लगायी, “छोटू, माँ से कहो कि चाय बना दे और उसे नीचे ले आओ।"

बोरा साहब भी उनकी भेस बदलने की आदत को जानते हैं, बोले, "आज भेस बदलने के लिए आप को साफ़ कपड़े नहीं मिले थे क्या?”

नीचे सीढ़ियों के पीछे से दुकान में जाने का भीतरी दरवाज़ा है, उन्होंने उसका ताला खोला, बत्ती जलायी और बाबा को भीतर बिठाया। फिर दराज़ से एक चिट्ठी निकाल कर उन्हें दी, कहा, “यह आप की यह चिट्ठी है, पिछले हफ्ते आई थी।"

बाबा ने चिट्ठी ली, देखा कि त्री की है और उसे अपने झोले में रख लिया। फिर उस झोले से एक प्लास्टिक का डिब्बा निकाला, बोले, “आप की दीदी ने आप के लिए यह गोंद के लड्डू बना कर भेजे हैं।"

बोरा साहब की बड़ी बहन विधवा हैं। वह मुश्किल में थीं, क्योंकि उनके बेटे की बहू उनसे बुरा व्यवहार करती थी। बोरा साहब बहन के लिए बहुत चिंतित थे, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि उसकी कैसे मदद करें। तब बाबा ने उनकी बहन को अपने वृद्धाश्रम में जगह दी थी। इस तरह से उनकी जान-पहचान बनी थी।

डिब्बे को ले कर बोरा साहब की बाछें खिल गयीं, बोले, “ऐसे लड्डू मेरी माँ बनाती थी, इन्हें खाता हूँ तो बचपन के दिन याद आ जाते हैं। माँ कहती थीं कि इनसे जोड़ों के दर्द में आराम मिलता है, इसलिए सर्दियों में इन्हें बनाती थी। वही परम्परा अब दीदी चला रही हैं।"

तब तक ऊपर से उनका पोता चाय ले कर आ गया। उसे पीते हुए उन्होंने कुछ देर तक वृद्धाश्रम की बातें कीं।

बोरा साहब बोले, “पहले घरों के बड़े-बूढ़े, हमारे परिवारों का हिस्सा होते थे, यहाँ पूरे क्षेत्र में कोई वृद्धाश्रम नहीं था क्योंकि उसकी आवश्यकता ही नहीं थी। लेकिन आजकल हमारे बच्चे शहरों में रहने चले जाते हैं, और उनके बूढ़े माता-पिता घर में अकेले रह जाते हैं। कई बार, पैसे न होने से, बेचारे सड़कों पर रहने और भीख माँग कर जीने के लिए बाध्य होते हैं। गुवाहाटी में मैंने देखा, कि बहुत से बूढ़े लोग पुलों के नीचे रहते हैं।"

बाबा बोले, "इसीलिए हर महीने हमारे यहाँ एक-दो नये लोग आ रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि हमारा वृद्धाश्रम आत्मनिर्भर होना चाहिये, ताकि मेरे बाद भी वह चलता रहे।"

बोरा साहब बोले, “लेकिन आप का स्वास्थ्य तो ठीक चल रहा है न?”

बाबा हँसे, बोले, “स्वास्थ्य तो ठीक है लेकिन उम्र हो रही है। पतझड़ का पत्ता, पता नहीं कब वृक्ष से गिर जाये? इसलिए वृद्धाश्रम की सारी ज़िम्मेदारी उनके सहकारी संघ को सौंपी है।"

थोड़ी देर तक बातें करने के बाद बाबा उठ खड़े हुए, "अच्छा बोरा साहब, अब मैं चलता हूँ, मुझे आश्रम के लिए बाज़ार से कुछ सामान खरीदना है। ईश्वर चाहेंगे तो अगली बार मुलाकात होगी।" यह कह कर वह उन्हें हाथ जोड़ कर दुकान से बाहर निकल आये।

बोरा साहब भी उनके साथ बाहर आये, बोले, "दीदी को मेरा प्रणाम कहियेगा, मुझे जैसे ही मौका मिलेगा, मैं उनसे मिलने आऊँगा।"

अचानक बाबा को करंट सा लगा। ऐसा लगा मानो किसी ने उनके दिमाग के भीतर उन्हें बिजली से छुआ हो। जैसे ही वह अनुभूति महसूस हुई, उनका आत्म-संयम और प्रशिक्षण ऐसे थे कि उन्हें सोचना नहीं पड़ा, उन्होंने तुरंत अपने मस्तिष्क की शक्ति-लहर को ढक लिया। वह समझ गये कि किसी ने अन्वेषण-किरण की शक्ति से उनके मस्तिष्क को छुआ है।

बोरा साहब ने बाबा के चेहरे पर पीड़ा का भाव देखा, बोले, "क्या हुआ बाबा? तबियत ठीक नहीं है?"

जामुन बाबा समझ गये थे कि कोई उन्हें खोजते हुए नारायणपुर आया है। कुछ ही देर में वह यहाँ भी आयेगा और बोरा साहब से उनके बारे में पूछताछ करेगा। इसलिए उन्हें और उनके परिवार को इस खतरे से बचाने के लिए यहाँ से कहीं दूर भेजना चाहिये।

वह बोले, "देव-कृपा से मुझे आने वाले खतरों के संकेत मिल जाते हैं। मुझे लगता है कि एक जानलेवा खतरा आप के परिवार की ओर आ रहा है। आप घर लौटिये और जल्दी से अपना सामान तैयार कीजिये, मैं तुरंत आप के लिए गाड़ी का प्रबंध करता हूँ। आप सब लोग आज सुबह ही एक सप्ताह के लिए गुवाहाटी चले जाईये, मैं आप के लिए वहाँ रहने का प्रबंध भी कर दूँगा। जाने से पहले अड़ोस-पड़ोस में सबसे झूठमूठ कह दीजिये कि आप लोग एक महीने के लिए दिल्ली जा रहे हैं। मेरी बात समझ गये? जैसा मैंने कहा है, वैसा करिये। मैं आप सब के लिए प्रार्थना करूँगा कि आप का अमँगल न हो।"

"कैसा खतरा?", बोरा साहब घबरा गये, "क्या होने वाला है?"

"अभी बात करने का समय नहीं है, जब विपदा टल जायेगी तब आप को बताऊँगा। अभी आप तुरंत घर जाईये और एक सप्ताह के लिए सामान तैयार कर लीजिये।"

बोरा साहब सीढ़ियों की ओर भागे और बाबा ने अपनी जान-पहचान वाले ट्रैवल-एजैंट को फोन करके बोरा साहब के लिए कार और गुवाहाटी में रहने का प्रबंध करने के लिए कहा, फिर तेज़ चल कर उसी सड़क पर थोड़ा आगे गये।

सड़क की बायीं ओर एक झोपड़ी थी, जिसके बाहर एक महिला एक चबूतरे पर कपड़े प्रेस कर रही थी, पास में एक चारपाई बिछी थी। बाबा ने स्वर को कातर बना कर उसे कहा, "बेटी, मुझे चक्कर आ रहे हैं, मेरी तबियत ठीक नहीं है। मैं उधर नाली के पास थोड़ी देर बैठ कर आराम कर लूँ?"

"उधर गन्दगी में मत बैठो, यहाँ चारपाई पर लेट जाओ", वह महिला बोली और झोपड़ी से उनके लिए एक लोटे में पानी ले आयी।

बाबा चारपाई पर लेट गये, शरीर को कँबल से ढक लिया, बोले, "बस थोड़ी देर आराम कर लूँ, फिर चला जाऊँगा।" उनकी दृष्टि गली के दूसरे सिरे पर, बोरा साहब की दुकान पर लगी थी। वह महिला वापस अपने कपड़े प्रैस करने के काम में लग गयी।

अभी तक बाबा को यामागुचि के भेजे आदमियों से बच कर भागने में दिक्कत नहीं हुई थी। लेकिन वह समझ गये कि इस बार उनका पीछा करने वाला कोई सामान्य व्यक्ति नहीं है। इस बार यामागुचि ने जिस आदमी को उन्हें खोजने भेजा है, उसके पास अन्वेषण-किरण की गुप्त-शक्ति है, इस बार उन्हें बहुत सावधान रहना पड़ेगा।

*****

4. नारायणपुर, असम, 2 मार्च 2026

जैसे ही ताकानोरी ने अन्वेषण-किरण से बाबा की शक्ति को महसूस किया, उसे भी झटका सा लगा। लेकिन वह नहीं समझ पाया कि शक्ति-लहर की वह अनुभूति एक क्षण के बाद ही लुप्त कैसे हो गई?

सोच कर वह इस नतीजे पर पहुँचा कि शायद उस भिक्षुक को अपनी शक्ति-लहर को छुपाना आता है। उसने तुरंत नक्शे से यह अन्दाज़ लगाने की कोशिश की कि वह भिक्षुक उस समय किस दिशा में, किस जगह पर है।

ओरी को भारत आये कई महीने हो चुके थे। जापान में हरूकी ने उसे कहा था कि उसने जून मिन को जोरहाट नाम के शहर में देखा था। भारत आ कर ओरी सबसे पहले जोरहाट ही गया। वह सोचता था कि अन्वेषण किरण की सहायता से वह जून मिन को आसानी से खोज लेगा लेकिन वह अन्वेषण-किरण को घुमाते-घुमाते परेशान हो गया था, पर जून मिन का पता नहीं चला था।

अन्वेषण किरण चलाने के लिए उसे ध्यान लगाना पड़ता है और उसे आधा घंटा भी चलाये तो इतना थक जाता है कि पाँच-छह घंटे तक सोता है। जोरहाट के आसपास वह बहुत घूमा लेकिन कुछ फायदा नहीं हुआ। उसकी अन्वेषण-किरण छह-सात किलोमीटर की परिधि में काम करती है, उसके बाहर नहीं। इसलिए उसने बहुत शहर बदले, बहुत घूमा, पर बात नहीं बनी।

उसने रिकू यामागुची से टेलीफोन पर बात की और अपनी असफलता के बारे में बताया, तो रिकू बोला, "इतनी जल्दी उस बूढ़े से हार मान गये? ठीक है, यह तुम्हारे बस की बात नहीं, तुम जापान लौट आओ। जून मिन को खोजने मैं किसी और को भेजूँगा।"

लेकिन ओरी वापस नहीं लौटा। बल्कि उसने यामागुची से कहा कि वह थाईलैंड से सोमचाई नाम के एक कम्प्यूटर एक्सपर्ट को बुलायेगा और उसे कुछ हिन्दुस्तानी आदमी भी चाहिये जो उसके साथ काम कर सकें।

ओरी ने पहले भी कई बार सोमचाई के साथ काम किया था। वह जोरहाट आया तो ओरी ने उसे जून मिन की तलाश करने के लिए कहा। कुछ ही दिनों में सोमचाई ने, चेहरे पहचानने वाली एप्प और आर्टिफिशयल इन्टैलीजैंस की सहायता से जून मिन का पता लगा लिया और ओरी को बताया, "ब्रह्मपुत्र नदी की दूसरी ओर एक शहर है नारायणपुर, वहाँ की कुछ वेबकैम-फीड में मुझे जून मिन दिखा है। मेरे विचार में जून मिन नारायणपुर में नहीं रहता लेकिन महीने में दो-तीन बार वह वहाँ जाता है। वह शायद किसी गाँव में या ऐसी जगह रहता है जहाँ पर वेबकैम नहीं लगे। उसे खोजने के लिए हमें नारायणपुर जाना चाहिये।"

पंद्रह दिन पहले ओरी ने नारायणपुर में, उस क्षेत्र में किराये पर घर लिया है, जहाँ पर सोमचाई को वह दिखा था। तब से वह दिन में तीन-चार बार, थोड़ी देर के लिए अन्वेषण-किरण घुमा कर उसे खोजता है। आज सुबह भी उसने वैसे ही अन्वेषण किरण घुमाई थी और इस बार वह जून मिन को खोजने में सफल हुआ था।

वह तुरंत उठ कर सोमचाई के पास गया, और उसे नारायणपुर का नक्शा दिखा कर बोला, "जिस भिक्षुक को मैं खोज रहा हूँ, इस समय वह शहर में डकरोंग क्षेत्र में आया है। तुम उस क्षेत्र में जितने वीडियो-कैमरे लगे हैं, उनमें उसे खोजो। तब तक मैं आदमियों को ले कर वहाँ जाता हूँ, शायद वह हमें मिल जाये। अगर वह तुम्हें किसी वीडियो में दिखे तो मुझे फोन करके बताओ कि कहाँ है, किस दिशा में जा रहा है।"

उनके साथ मदद के लिए तीन हिन्दुस्तानी हैं, जिन्हें यामागुची के जानकार एक हिन्दुस्तानी गैंग ने वहाँ भेजा है - बटेर, लक्की और मटरू।

ओरी ने बटेर से कह कर अपनी जीप निकलवायी और उसे डकरोंग पोस्ट आफिस की ओर जाने के लिए कहा। उनका घर वहाँ से दूर नहीं था, वहाँ पहुँचने में उन्हें दस मिनट भी नहीं लगे। वहाँ पहुँच कर वह जीप से उतर कर इधर-उधर घूमा तो उसे बोरा साहब की दुकान के आसपास, एक शक्ति-लहर की हलकी सी प्रतिध्वनि महसूस हुई, वह समझ गया कि वह सही जगह आया है। उसने बटेर, लक्की और मटरू को गली में आसपास के लोगों से पूछताछ करने के लिए कहा कि शायद किसी ने उस दिन सुबह वहाँ पर एक बूढ़े कोरियाई बौद्ध भिक्षुक को देखा हो।

उसने जीप में बैठ कर आँखें बंद की और ध्यान लगा कर अपनी अन्वेषण-शक्ति को भी आसपास घुमाया, लेकिन बाबा ने अपनी शक्ति-लहर को पूरा ढका हुआ था, वह उन्हें नहीं खोज पाया। चारपाई पर लेटे हुए बाबा वहीं से उन सब को ध्यान से देख रहे थे। ताकानोरी उनमें अकेला जापानी था, उसे देखते ही वह पहचान गये कि वही उनका सरदार है।

बाबा जब छोटे थे तब कोरिया में उनके गुरु जी ने उन्हें अपनी गुप्त-शक्ति पर नियंत्रण करना और उनकी शक्ति-लहरों को छिपाना सिखाया था।

उनके गुरु जी कहते थे, "हर मानव शरीर में विद्युत और चुम्बकीय शक्तियाँ होती हैं, इन शक्तियों से मस्तिष्क सोचता है और नसों का तंत्र-जाल काम करता है। गुप्त-शक्तिवान लोगों में यह विद्युत और चुम्बकीय शक्ति अधिक तीव्र होती है, इसलिए अन्वेषण-किरण से उनकी शक्ति-लहरों को खोज सकते हैं। लेकिन अन्वेषण-किरण की शक्ति थोड़ी कठिन होती है, इसका सही उपयोग करने के लिए बहुत अभ्यास की आवश्यकता होती है। उसका ठीक से उपयोग नहीं करो तो जिसके मस्तिष्क को वह किरण छूती है, उसे पीड़ा होती है और वह तुरंत जान जाता है कि कोई उसे खोज रहा है।"

इसलिए बाबा समझ गये थे कि उस जापानी को अपनी अन्वेषण-किरण का ठीक से उपयोग करना नहीं आता। लेकिन वह नहीं जानते थे कि उस जापानी की अन्य कौन सी गुप्त शक्तियाँ हैं?

लोगों से पूछते-पूछते, मटरू कपड़े प्रैस करने वाली महिला के पास आया और उससे भी भिक्षुक बाबा के बारे में पूछा। वह बोली, "कोरिया का बौद्ध भिक्षुक? ऐसे किसी आदमी को मैंने नहीं देखा। मैं सुबह से यहाँ हूँ, ऐसा कोई विदेशी आदमी यहाँ से नहीं गुज़रा।"

मटरू ने पीछे चारपाई पर लेटे बाबा को देखा तो उनकी ओर जाने लगा, तब उस महिला ने उसे रोका, बोली, "उनकी तबियत ठीक नहीं है, बेचारे सो रहे हैं, उन्हें मत जगाओ, उन्होंने भी किसी को नहीं देखा।"

बटेर, लक्की और मटरू ने आसपास, आगे-पीछे, हर ओर चक्कर लगाये लेकिन उन्हें बाबा का कुछ पता नहीं चला। ओरी को समझ नहीं आया कि जिसकी शक्ति-लहर उसने महसूस की थी, वह उसे कैसे खोजे। शायद जून मिन उसकी अन्वेषण किरण को महसूस करते ही वहाँ से भाग कर कहीं पर छिप गया है? लेकिन वह अपनी शक्ति-लहर को कब तक छिपायेगा, शक्ति-लहर को छिपाना बहुत मेहनत का काम है, और वह बूढ़ा है। आखिर में तो उसे बाहर निकलना ही पड़ेगा, वह एक बार उसे मिला है, वह उसे दोबारा भी खोज निकालेगा।

यह सोच कर उसने बटेर, लक्की और मटरू को जीप में बिठाया और वह लोग अपने घर वापस लौट गये।

घर जा कर ओरी ने सोमचाई से दोबारा बात की, बोला, "वह भिक्षुक आज सुबह डकरोंग पोस्ट आफिस वाली गली में आया था। शायद वह भाँप गया कि मैं उसके पीछे हूँ, इसलिए वह वहाँ से भाग गया। तुम उस जगह के आसपास के सभी वीडियो-कैमरे खोजो, और उनकी जाँच करो। अगर वहाँ कोई वीडियो-कैमरे नहीं हों, तो सैटेलाइटों से जाँच करो, उस समय की तस्वीरें किसी न किसी सैटेलाइट में अवश्य मिलेंगी। किसी भी हालत में हमें पता लगाना है कि वह कैसा दिखता है, यहाँ पर किससे मिलने आया था और कहाँ गया? सुबह आठ बजे वह उस गली में था, तुम्हें उसे खोजना है।"

तीन घंटे की मेहनत के बाद सोमचाई ने बाबा का पता लगा लिया।

उसने ओरी को अपने लैपटॉप पर दिखाया, बोला, "यह वीडियो देखो, उस गली के पास की एक दुकान के वैबकैम से लिया है। आज सुबह साढ़े सात बजे के करीब, वहाँ पर एक आटो शिव-मन्दिर की ओर से आया और वह डकरोंग गली के पास रुका था। उसमें से यह आदमी उतर कर, उस गली में गया था। इस वीडियो में उसका चेहरा ठीक से नहीं दिखता, उसने सिर और मुँह पर गमछा लपेटा है, लेकिन चाल-ढाल से वह आदमी बूढ़ा लगता है। इसका मतलब है कि उसने बौद्ध भिक्षुक के वस्त्र नहीं पहने थे।"

फिर उसने एक दूसरी फाईल खोली, बोला, "यहाँ देखिये, इसमें मैंने उसी समय की सैटेलाइट-फीड से मैंने डकरोंग गली की तस्वीरें ली हैं। पहले वह आदमी गली में आ कर, इस दुकान के साथ वाले दरवाज़े से भीतर गया और आधे घंटे बाद वहाँ से दो लोग बाहर आते हैं। एक तो वही सुबह वाला आदमी है, दूसरा आदमी भी बूढ़ा लगता है। वह दोनों आदमी, दुकान के सामने थोड़ी देर तक बातें करते हैं। फिर दूसरा वाला आदमी उसी दरवाज़े में वापस लौट जाता है और पहले वाला आदमी, गली में थोड़ा सा आगे जा कर, एक औरत के पास चारपाई पर लेट जाता है। इस अगली तस्वीर में यह देखिये, आप की जीप उस गली में घुसती है, आप और तीनों आदमी नीचे उतरते हैं। यहाँ देखिये, इसमें मटरू उस चारपाई पर लेटे हुए आदमी के पास भी गया था लेकिन उससे बात नहीं की थी। जब आप लोग वहाँ से जीप में बैठ कर चले गये, तब वह बूढ़ा चारपाई से उठ कर, गली में आगे जा कर, उधर पेड़ों के नीचे चला गया। लेकिन उसके बाद वह कहाँ गया, यह मुझे दिखायी नहीं दिया। आप वहाँ जा कर पता कीजिये, उस औरत से पूछिये, और उन पेड़ों में देखिये, शायद उसके सुराग मिल जायेंगे।"

ताकानोरी ने वीडियो और तस्वीरों को ध्यान से देखा, बोला, "इसका मतलब है कि आज सुबह जब मैं वहाँ गया था, जून मिन उस गली में ही था, वह चारपाई से लेट कर मुझे देख रहा था, और मटरू उसके पास भी गया लेकिन उसे पहचान नहीं पाया।"

उसने तुरंत बटेर, लक्की और मटरू को बुलाया, उन्हें पूरी बात समझायी और डकरोंग गली में पूछताछ करने वापस भेजा।

उन्होंने लौट कर बताया कि उस दुकान पर और उसके ऊपर वाले घर के दरवाज़े पर ताला लगा है। उन्होंने पड़ोसियों से पूछा तो पता चला कि वह पूरा परिवार आज सुबह ही किसी काम से एक महीने के लिए दिल्ली गया है।

उन्होंने प्रैस करने वाली औरत से भी पूछा तो पता चला कि वह चारपाई वाले आदमी को नहीं जानती थी, वह कोई गरीब बूढ़ा था जिसकी तबियत ठीक नहीं थी, वहाँ पर कुछ देर तक आराम करने के लिए लेटा था, और फिर वह चुटियागाँव की ओर चला गया था।

पेड़ों के बीच में उन्हें तह किये हुए कपड़े और कँबल मिले लेकिन किसी ने उस बूढ़े को वहाँ से जाते हुए नहीं देखा था। ओरी को उन कपड़ों में भी शक्ति की हलकी सी प्रतिध्वनि महसूस हुई लेकिन यह नहीं समझ पाया कि उनसे वह जून मिन को कैसे खोज सकता है।

ओरी देर तक सोचता रहा कि क्या करे। वह इतना समझ गया है कि उस बूढ़े भिक्षुक में अपनी शक्ति-लहर को छिपाने की क्षमता तो है ही, वह बहुत चालाक भी है, उसे पकड़ना आसान नहीं होगा।

*****

5. नारायणपुर से मजूली, असम, 2 मार्च 2026

जैसे ही ताकानोरी की जीप गली से गई, बाबा चारपाई से उठे। उन्होंने उस प्रैस वाली औरत से कहा, “बेटी, आराम करने से मेरी तबियत अब पहले से कुछ ठीक लग रही है। मुझे चुटियागाँव जाना है, मैं चलता हूँ।"

वहाँ से निकल कर, कुछ दूर जा कर, वह एक पेड़ों के झुरमुट के पीछे छिप गये। वहाँ उन्होंने अपने कम्बल, गमछे और कुर्ते को उतारा और तय करके एक पेड़ के नीचे रख दिया। फिर, अपने थैले से एक नीला खद्दर का कुर्ता निकाल कर पहना और एक नारंगी रंग के रामनामी साफे को अपने सिर और गले पर लपेट लिया।

अभी तक वह सड़क पर बूढ़े आदमी की तरह थोड़ा सा झुक कर चल रहे थे। अब वह कमर सीधी करके सीधे चले, ताकि उम्र कम लगे।

फिर घरों के पीछे-पीछे से होते हुए, वहाँ लगे पेड़ों और झाड़ियों के बीच में छिपते हुए, वह मेन रोड पर आये। उन्होंने अपने मस्तिष्क की शक्ति लहरों को अभी भी ढका हुआ था। मेन रोड़ पर अब उन्हें कोई देखने वाला, सुबह वाले बूढ़े के रूप में नहीं पहचान सकता था। वह वहीं एक पेड़ के पीछे छिप कर खड़े रहे जब तक टैक्सी नहीं आई और बोरा साहब अपने परिवार के साथ वहाँ से चले नहीं गये।

उनकी टैक्सी के जाने के बाद वह पेड़ के पीछे से बाहर निकले। देखा कि गली के किनारे दो आदमी चापोड़ी जाने वाले आटो की प्रतीक्षा में खड़े हैं, वह भी उनके पास जा कर खड़े हो गये।

चापोड़ी घाट पहुँच कर उन्होंने अपने थैले से अपना दस साल पुराना मोबाइल फोन निकाला और त्रिनेत्र को फोन किया।

"त्री, जिस पक्षी के लिए दाना डाल कर जाल बिछाया था, वह पक्षी यहाँ पहुँच चुका है।" उन्होंने उसे संक्षिप्त संदेश दिया।

“कैसे? कब? कहाँ पर? आप ठीक तो हैं?", त्री ने पूछा।

बाबा ने छोटा सा उत्तर दिया, “आज सुबह नारायणपुर में उसने मुझे खोज लिया है, उसके पास अन्वेषण-किरण है लेकिन मैं उससे बच कर निकलने में सफल हुआ।"

अन्वेषण किरण की बात सुन कर त्री ने एक क्षण के लिए सोचा, फिर बोला, “गुरु जी, हम वहाँ आ रहे हैं, आप जल्दबाज़ी में कोई कदम नहीं लें।"

“तुम मेरी चिंता नहीं करो। तुम सब सावधान रहना, अपना ध्यान रखना और बच्चों की जान को व्यर्थ में खतरे में मत डालना", कह कर उन्होंने फोन काट दिया। उस जापानी के लिए इतने पुराने मोबाईल के सिग्नल को खोजना कठिन होगा लेकिन फिर भी वह खतरा नहीं लेना चाहते थे, उन्होंने कुछ आगे जा कर एक सुनसान जगह देख कर उस मोबाइल को नदी में फैंक दिया।

फिर जिस रास्ते से वह सुबह मिस्सामोरा-चापोड़ी घाट आये थे, वैसे ही नाव ले कर वह पहले चंगेली सूती द्वीप लौटे, लेकिन इस बार शिबेन के घर के पास नहीं उतरे, बल्कि द्वीप के उत्तर में जा कर उतरे। अभी भी उनके मस्तिष्क की शक्ति-लहर ढकी हुई थी।

शक्ति-लहर को ढकने में बहुत उर्जा लगती है, थकान हो जाती है, लेकिन उन्होंने सारा जीवन आत्म-संयम और आत्म-नियंत्रण का अभ्यास किया है, उन्होंने उस थकान की ओर ध्यान नहीं दिया।

वहाँ से वह तेज़ी से चलते हुए उधर गये जहाँ सुबह उन्होंने अपनी छोटी नाव छुपायी थी। आसपास देखा कि कोई देख तो नहीं रहा, फिर नाव निकाल कर नदी में ले गये। नदी पार करके, दूसरे किनारे पर मजूली द्वीप पहुँच कर, उन्होंने फिर

से नाव को चिथड़ों और पत्तों के नीचे छुपा दिया। मजूली द्वीप के दक्षिण में उनका वृद्धाश्रम है, जिसके साथ एक जँगल जुड़ा है। पिछले कई सालों में उन्होंने उस जँगल में और बहुत से पेड़ लगवाये हैं जिससे वह और भी घना हो गया है।

उस जँगल के बीच से छिपते हुए वह आश्रम के पास में अपने घर लौटे और पिछले गेट से घर में घुसे। घर में उन्होंने केवल पानी पीया, फिर तुरंत कपड़े बदल कर बौद्ध-भिक्षुक के वस्त्र पहने।

बहुत साल हो गये हैं उन्हें यामागुचि से बच कर भागते हुए। एक बार वियतनाम में और एक बार थाईलैंड में वह उसके आदमियों से बाल-बाल बचे थे। पिछले तीस सालों से, जब से वह भारत आये हैं, इस दिन के लिए उन्होंने सालों से प्रतीक्षा की है, पर कभी यह नहीं सोचा था कि यामागुचि उनके पीछे किसी गुप्त-शक्ति वाले व्यक्ति को भी भेज सकता है।

अभी तक उनका पीछा करने वाले सामान्य गुंडे थे, अपनी शक्ति की मदद से बाबा उन्हें दूर से पहचान लेते थे। लेकिन इस बार जो व्यक्ति उनका पीछा कर रहा है, उसके पास अन्वेषण-किरण के अतिरिक्त कौन सी शक्तियाँ हैं?

अब उन्हें क्या करना चाहिये? उन्होंने सोचा था कि यहीं रह कर कुछ ऐसा जाल बिछायेंगे कि शिकारी खुद ही फंदे में फँस जाये, लेकिन क्या वह इस शिकारी का सामना कर पायेंगे? और अगर इस शिकारी से लड़ने में त्री को या उसके अनाथाश्रम के किसी बच्चे को कुछ हो गया तो क्या वह अपने आप को क्षमा कर पायेंगे? कैसे फैसला करें कि उन्हें क्या करना चाहिये?

अंत में यह निर्णय लेने के लिए वह माँ तारा की प्रतिमा के सामने कुछ देर तक ध्यान लगा कर बैठे। अब उन्हें अपना नहीं, त्रिनेत्र और उसके बच्चों के भविष्य के बारे में सोचना है।

जब वह माँ का ध्यान लगाते हैं तो उन्हें समय का पता नहीं चलता और उनका मानस सहज आनन्द की अनुभूति में खो जाता है। आज उनके ध्यान लगाने में एक बाधा थी कि उन्हें अपनी शक्ति-लहर को ढके रखना था ताकि उस जापानी को इस वृद्धाश्रम का पता नहीं चले। उस बाधा के बावजूद ध्यान लगाने पर माँ तारा ने उन्हें राह दिखायी।

उठ कर उन्होंने कुछ देर तक माँ की दिखायी राह के बारे में सोचा, फिर घर से निकल कर वृद्धाश्रम में आये।

आश्रम के संचालक एक रिटायर हुए हैडमास्टर जगदीशचन्द्र हैं, वह दफ्तर में बैठे कोई पत्रिका पढ़ रहे थे। जब उन्होंने बाबा को देखा तो हाथ जोड़ कर खड़े हो गये, बोले, "जामुन बाबा, इस समय आप यहाँ कैसे?"

बाबा बोले, "जगदीश बाबू, मुझे क्षमा कीजिये कि आप को पहले सूचना नहीं दे पाया, पर मुझे हमारे सहकारी संघ से एक बहुत ज़रूरी बात करनी है। क्या आप दोपहर में सभी सदस्यों को सभा-कक्ष में इकट्ठा कर सकते हैं?"

आश्रम में कुल चौबीस वृद्ध लोग रहते हैं, सतरह महिलायें और सात पुरुष। बीच-बीच में किसी की मृत्यु हो जाती है, और नये सदस्य भी आते रहते हैं, पर कई सालों से उनके सदस्य तेईस-पच्चीस के आसपास ही चल रहे हैं। वहाँ रहने वाले सभी लोग, जिससे जितना हो सके, आश्रम के दैनिक कामों में हाथ बँटाते हैं ताकि आश्रम, अधिक आत्मनिर्भर हो। कुछ लोग खेतों में सब्ज़ियाँ उगाते हैं, कुछ मधुमक्खियाँ-पालन में, कुछ मुर्गियों, गायों और भैसों की देखरेख में, कुछ सफाई में और कुछ रसोई में काम करते हैं।

दोपहर के भोजन के बाद बाबा सभा कक्ष में आये और वहाँ एकत्रित लोगों से बोले, "यह आप लोगों के आराम करने का समय है, इस समय आप को यहाँ बुलाने के लिए आप से क्षमा माँगता हूँ।"

सभी वृद्ध लोग उनकी ओर देख रहे थे, कई लोगों के चेहरों पर चिंता झलक रही थी, क्योंकि ऐसी सभा वहाँ आज पहली बार हो रही थी।

बाबा बोले, "मैं आप को एक आवश्यक सूचना देना चाहता हूँ। मैंने आज समाधी लेने का निश्चय किया है, आज शाम को पाँच बजे मैं मंदिर के सामने समाधी लूँगा।"

उनकी बात को सुन कर सभी लोग स्तब्ध रह गये।

आखिर में जगदीश बाबू बोले, "जामुन बाबा, यह आप क्या कह रहे हैं? समाधी लेने का क्या अर्थ है?"

“कि आज मैं धरती माता के गर्भ में लौट जाऊँगा।"

“कितनी देर के लिए?”

"पता नहीं”, बाबा मुस्कराये, "सम्भव है कि हमेशा के लिए।"

लोग आपस में घुसपुस बातें करने लगे, कुछ लोग रोने लगे। सामने बैठी एक वृद्धा रोते हुए बोली, “इसका मतलब है कि आश्रम बंद हो जायेगा और मुझे अपने बेटे के घर लौटना पड़ेगा?”

बाबा ने उन्हें शाँत करने के लिए अपने दाहिने हाथ को अभय-दान मुद्रा में ऊपर उठाया, बोले, “आप लोग शाँत रहिये। यह आश्रम हमारा सहकारी संघ चलाता है, यहाँ की ज़मीन भी सहकारी संघ की है। आप लोगों की मेहनत से आश्रम की अच्छी मासिक आय होती है। आश्रम के पास अपनी ज़मीन है, आप सब के रहने की जगह है, फिर यहाँ पर मेरे होने या न होने से आप को कोई फर्क नहीं पड़ेगा। आप लोग यहाँ जैसे रहते हैं, वैसे ही रहेंगे। आप आश्रम में नये लोगों को भी स्वीकार कर सकते हैं, किसी को यहाँ से जाने की कोई आवश्यकता नहीं होगी। मेरे बाद, ज़रूरत पड़ने पर आप मेरे शिष्य त्रिनेत्र से बात कर सकते हैं। वह यहाँ आता रहता है, आप में से बहुत से लोग उसे जानते हैं, मेरे बाद वही मेरा उत्तराधिकारी होगा।"

कई लोग कुर्सियों से उठ कर उनके पास आने लगे तो उन्होंने इशारा करके सब को रुकने के लिए कहा, बोले, “मेरा निर्णय अब नहीं बदलेगा। मुझे अपनी समाधी की तैयारी करनी है, अभी मेरे पास आप से बात करने का समय नहीं है। लेकिन बाद में आप जब चाहें मेरी समाधी पर मुझ से बात करने आ सकते हैं। मेरा शरीर यहाँ नहीं होगा लेकिन मैं हमेशा आप के साथ रहूँगा।"

एक वृद्धा बोली, “जामुन बाबा, तुम्हारे इस आश्रम में मुझे शरण मिली है, बुढ़ापे में गरिमा से जीने का अवसर मिला है, मैं तुम्हारा यह उपकार कभी नहीं भूलूँगी।" यह बात सुन कर बहुत से अन्य लोगों ने भी सिर हिला कर हामी भरी।

लोगों को एक-एक करके नमस्कार करते और उनसे विदा लेते हुए बाबा को कुछ समय लगा।

जगदीश बाबू उनके साथ आश्रम के द्वार तक आये, बोले, “बाबा, मेरा सारा जीवन स्कूल में हैडमास्टरी करते हुए निकल गया। मैं अपने आप पर, अपने पद और ज्ञान पर अभिमान करता था, लेकिन जब मेरी पत्नि की मृत्यु हुई और मैं बिल्कुल अकेला रह गया तब समझ में आया कि समय हर अभिमान को मिट्टी में मिला देता है। मैं विदेश में बेटी के पास रहने गया लेकिन वहाँ भी सारा दिन अकेला खाली बैठा रहता था, वहाँ भी मेरा दिल नहीं लगा। मेरे जीवन के आखिरी दिनों को अन्य वृद्धों की सेवा का मौका दे कर आप ने जो मुझ पर उपकार किया है, मैं उसका ऋण कैसे चुकाऊँगा?”

बाबा बोले, “ऋण तो हम सब को इस पृथ्वी और इस प्रकृति का चुकाना है। आप जो काम कर रहे हैं वह करते रहिये और ऐसा कीजिये कि यह वृद्धाश्रम आत्मनिर्भर और स्वतंत्र बना रहे, यहाँ से कभी किसी ज़रूरतमंद वृद्ध को निराश हो कर नहीं लौटना पड़े।"

जगदीश बाबू ने सिर झुका लिया, फिर आँखें पोंछते हुए पूछा, “आप को तैयारी करने में कुछ मदद चाहिये हो तो मैं साथ चलूँ?”

उन्होंने सिर हिला कर मना किया, बोले, “मेरी तैयारी का मतलब माँ तारा का ध्यान करना है। आप मेरी चिंता नहीं कीजिये, मैं भिक्षुक हूँ, मेरे साथ केवल मेरी भिक्षा का कटोरा और माँ तारा की प्रतिमा जायेंगे, और कुछ भी नहीं।"

उनसे विदा ले कर वह घर लौटे, लेकिन रुके नहीं, सीधा घर के पीछे का दरवाज़ा खोल कर, वह उत्तर की ओर जाती एक पगडँडी से पीछे जंगल की ओर गये।

वहाँ से कुछ दूरी पर झाड़-झंखाड़ से ढका हुआ एक पुराना खण्डहर था, वह उस ओर गये। आसपास देखा कि कोई देख तो नहीं रहा, फिर खण्डहर की एक ईंट को हिलाया। बिना कोई आवाज़ किये, पास में ज़मीन पर एक चकोर द्वार खुल गया, जिसमें से नीचे जाती हुई सीढ़ियाँ दिख रही थीं।

वह उन सीढ़ियों से नीचे उतरे और साथ की दीवार पर लगे एक बटन को दबाया तो वह द्वार बंद हो गया और सीढ़ियों की बत्ती जल गयी। तब उन्होंने लम्बी साँस ली और अपने मस्तिष्क की ढकी हुई शक्ति-लहर के आवरण को हटाया। सुबह से कई घंटों से उसे ढके-ढके वह बहुत थक गये थे।

यहाँ तहखाने में उन्हें कोई खतरा नहीं है। यहाँ वह धरती के नीचे छिपे हैं और उस जापानी पुरुष की अन्वेषण-किरण उन्हें यहाँ पर नहीं खोज सकती। समाधी लेने से पहले, अब वह कुछ देर तक आराम कर सकते हैं।

*****

6. गँगटोक, सिक्किम, 2 मार्च 2026

त्री ने सोचा कि शायद उसने आभा को वहाँ बुला कर गलती की है। वह उसके मित्र विशाल की बहन है और कुछ दिनों के लिए उनके अनाथाश्रम में रहने आयी है।

विशाल का कुर्स्यांग में होटल है, मोयरंग होटल और कैफे। उस जगह पर किसी ज़माने में एक चाय-बागान होता था। होटल-मालिक बनने से पहले विशाल कलाकार बनने के सपने देखता था। होटल मालिक बनने के बाद, अब हर साल वह अपने होटल के विस्तृत बाग में एक कला प्रदर्शिनी आयोजित करता है।

त्री पहले पक्की मिट्टी की मूर्तियाँ बनाता था, पर पिछले कई सालों से वह ताँबे की मूर्तियाँ बनाने लगा है। वह विशाल से एक कला-प्रदर्शनी में मिला था और जल्दी ही दोनों मित्र बन गये थे।

विशाल ने उसे अपनी बहन आभा की दुखद कहानी सुनायी थी। आभा का पति विवेक, एक पत्रकार था और दो साल पहले वह भारत-म्यनमार सीमा पर होने वाली तस्करी के बारे में जानकारी जमा कर रहा था जब किसी ने उसकी कार को बम विस्फोट से उड़ा दिया था। उस समय, उसके साथ उनकी चार साल की बेटी मयूरी भी थी, जो पिता के साथ उस बम विस्फोट में मरी थी।

इस घटना के बाद आभा एक गहन उदासी में डूब गयी थी और करीब एक साल तक घर से बाहर नहीं निकली थी। कुछ महीने पहले विशाल उसे कुर्स्यांग ले कर आया था, जहाँ वह त्री से मिली थी। उसने अपने भाई से त्री के अनाथाश्रम के बारे में सुना था और कला प्रदर्शनी में वह उसकी ताँबे की मूर्तियों से बहुत प्रभावित हुई थी। उसने त्री से पूछा था, “काँसे को मूर्तियों में कैसे ढालते हो? क्या उसे पहले पिघलाना पड़ता है?”

त्री ने कहा था, "यह कैसे करता हूँ उसे बता कर समझाना कठिन है, तुम कुछ दिन हमारे यहाँ आ कर देखो। मेरा अधिकतर समय तो अनाथाश्रम को चलाने में निकलता है, पर जब कुछ खाली समय मिलता है तो मैं शिल्पकार भी बन जाता हूँ। हमारे यहाँ लड़कियों का होस्टल है, तुम वहाँ ठहर सकती हो।"

आजकल त्री सात प्रतिमाओं का गुट बना रहा है, जिसमें एक कृष्ण हैं, एक राधा, एक गाय और तीन गोपियाँ। अभी तक उसने तीन गोपियों और एक गाय की प्रतिमाएँ पूरी की हैं और अब राधा को बनाने में जुटा है। यह काम करते हुए वह ताँबे को काटने वाली मशीन का उपयोग करता है, जिससे बहुत शोर होता है, इसलिए वह कानों पर शोर कम करने वाले इयरफोन लगाता है।

आभा को उनके यहाँ आये हुए करीब एक सप्ताह हुआ है। शायद बच्चियों के बीच में रह कर उसे अपनी बेटी की याद आती है। गार्गी ने त्री को बताया है कि वह अक्सर बालकनी में बैठ कर, दूर पहाड़ों को देखती रहती है, और कभी-कभी रोती भी है। त्री को समझ नहीं आता कि वह उसकी किस तरह से सहायता करे।

हर रोज़ की तरह उस दिन भी सुबह मुँह-अँधेरे, त्री ने अपने शिष्यों के साथ उनकी गुप्त-शक्ति के विकास के लिए अभ्यास किये थे। उनके अनाथाश्रम में गुप्त-शक्ति वाले कुल सात बच्चे हैं लेकिन उनमें से दो बच्चे अभी छोटे हैं, वे पाँच साल के नहीं हुए हैं, इसलिए वह प्रशिक्षण में हिस्सा नहीं लेते। बाकी के पाँच बच्चों के साथ, उनके स्कूल जाने से पहले, त्री हर रोज़ सुबह दो घंटे के लिए उन्हें विशेष अभ्यास कराता है।

यह प्रशिक्षण उनके अनाथाश्रम से कुछ दूर, पेड़ों से घिरे हुए एक अखाड़े में होता है, जिसके चारों ओर बेलों-लताओं से ढकी हुई एक ऊँची दीवार है। ड्रोन से देखें तो उस अखाड़े का पूरा क्षेत्र, पेड़ों की शाखाओं और घने पत्तों से इस तरह ढका हुआ है कि ऊपर से धरती का एक इँच भी दिखाई नहीं देता।

अखाड़े के कोने में एक छोटा सा, परन्तु सुंदर मन्दिर है, जिसमें एक ओर ताँडव नृत्य करते हुए नटराज की प्रतिमा है और दूसरी ओर ध्यानलीन बुद्ध की, उन दोनों के बीच में बौद्धिसत्व अवलोकितेश्वर की प्रतिमा है।

मंदिर के सामने, खुले में एक चबूतरा है जिसके चारों ओर सफेद और हरे रंग की माँ तारा की प्रतिमाओं की कतार बनी है। इस चबूतरे के सामने वह हर रोज़ बच्चों से विभिन्न अभ्यास तथा व्यायाम कराता है।

त्री कहता है कि उन्हें एक-दूसरे के साथ मिल कर एक-जीवात्मा की तरह सोचना सीखना है। वह उन्हें समझाता है, “हमें केवल लड़ना नहीं सीखना, हमें अपने भीतर करुणा, एकाग्रता और ध्यान के गुण भी बढ़ाने हैं, क्योंकि हम अपनी

शक्तियों का प्रयोग केवल निर्बलों और शक्तिहीनों की रक्षा के लिए कर सकते हैं, किसी गलत काम या व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं।"

उसके शिष्यों में रंगनाथ सबसे बड़ा है। वह तेरह साल का है और उसकी प्रमुख शक्तियाँ हैं, सुनना और सूँघना। वह उन ध्वनियों को सुन सकता है जिन्हें सामान्य लोग नहीं सुन पाते। दो सौ मीटर दूर खड़ा व्यक्ति धीमे स्वर में क्या फुसफुसा रहा है, वह उसे सुन सकता है। वह व्यक्तियों, पशुओं, वस्तुओं आदि की गंध को सूँघ कर उन्हें पहचान सकता है। इसलिए उससे कुछ भी छिपाना बहुत कठिन है। उसके दिमाग में सिनेस्थीसिया है, यानि वह विभिन्न गंधों को अलग-अलग रंगों में देखता है।

रंगनाथ के बाद, दूसरे नम्बर पर है गार्गी विनायक, जो बारह साल की है। उसकी प्रमुख गुप्त-शक्ति को वह लोग अजगर-पाश कहते हैं। वह किसी भी व्यक्ति के मस्तिष्क में घुस कर उसकी माँसपेशियों की नसों को बाँध सकती है ताकि वह अपनी जगह से हिल नहीं पाये। उसके पास विचार पढ़ने की शक्ति भी है। किसी के मन में क्या है, वह उसे जान सकती है और लोगों की शक्ति-लहरों को महसूस कर लेती है।

तीसरे नम्बर पर है नौ बरस का वसंत, जिसकी गुप्त-शक्ति विचित्र है। जब त्रिनेत्र ने उसके बारे में गुरु जी को बताया था तो वह भी चकित हो गये थे। उसकी शक्ति वनस्पति जगत से जुड़ी है, वह पेड़ों-पौधों से, यहाँ तक कि घास के तिनकों से भी, बातें कर सकता है। वह जैसा चाहे, पेड़-पौधे उसी दिशा में विकसित हो जाते हैं। अखाड़े के क्षेत्र को पेड़ों की शाखाओं और घने पत्तों से उसी ने ढका है। अगर कोई बीमार हो तो वह पेड़ों से बात करके बता सकता है कि रोगी को किस पत्ते या जड़ी-बूटी को औषधि के रूप में दिया जाये।

चौथे नम्बर पर है आठ साल का माधव, जिसके पास दृष्टि शक्ति है। उसकी आँखें सामान्य रोशनी में बहुत दूर तक देख सकती हैं। साथ ही वह अल्ट्रावायोलैट और इन्फ्रारैड रोशनी को भी देख सकता है, जो सामान्य व्यक्तियों को नहीं दिखतीं। वह लोगों की शक्ति-लहरों को भी विभिन्न रंगों में देखता है।

उनकी पाँचवी और उम्र में सबसे छोटी, छह साल की शिष्या है तृप्ति। उसकी शक्ति लोहे और स्टील जैसी धातुओं से जुड़ी है। उसे अभी अपनी शक्ति को ठीक से संचालित करना नहीं आता, इसलिए जब वह पास होती है तो अक्सर चम्मच और चाकू जैसी चीज़ें मेज़ से उठ कर हवा में उड़ने लगती हैं। उसकी श्रवण शक्ति भी अच्छी है।

उनका अनाथाश्रम कुर्स्यांग से गँगटोक जाने वाली सड़क के पास है। उनके यहाँ अधिकतर बच्चे सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम और उत्तर-पूर्व से आते हैं, एक-दो बच्चे भूटान और नेपाल के भी हैं।

गुरु जी ने त्री को सिखाया था कि गुप्त-शक्तियों वाले बच्चों को अक्सर पढ़ने-लिखने, बात समझने और एक जगह पर शाँत बैठने में कठिनाई होती है। इस वजह से ऐसे बच्चे अक्सर स्कूलों में पढ़ाई में कमज़ोर होते हैं और कभी-कभी तो उन्हें मानसिक रूप से विकलाँग भी समझा जाता है। इस बात को ध्यान में रख कर त्री ने उत्तर-भारत के सभी अनाथाश्रमों में कहलवाया है कि अगर उनके यहाँ कोई बच्चा ऐसा हो जिसे पढ़ने-लिखने में दिक्कत हो, तो वे उसे उनके अनाथाश्रम में भेजें। ज़रूरत पड़े तो ऐसे बच्चों की जाँच करने वह खुद भी जाता है। इस तरह से उनके यहाँ सात गुप्त-शक्ति वाले बच्चे एकत्रित हो गये हैं।

उस दिन व्यायाम और अभ्यास समाप्त होने के बाद, बाकी बच्चे चले गये, लेकिन गार्गी नहीं गयी, बोली, "त्री दादा, आप से एक बात करनी है।"

त्री बोला, "अगर चाहें तो रंगा और तृप्ति, बाहर से भी हमारी बातें सुन सकते हैं, तुम उनके सामने भी मुझसे बात कर सकती थीं, यह अकेले में क्यों?"

वह बोली, "अगर वह दोनों सुनना चाहते हैं तो सुन लें, पर मेरे ख्याल में अभी वह यहाँ नहीं रुकेंगे क्योंकि अभी टीवी पर रंगा दादा की कार्टून फ़िल्म का टाईम हो रहा है।"

त्री मुस्कराया, "अच्छा बताओ, तुम क्या बात करना चाहती हो?"

"हमारे होस्टल में जो आभा दीदी आयी हुई हैं, क्या उनमें भी कोई गुप्त-शक्ति है।"

त्री के माथे पर बल पड़ गये, बोला, "क्यों? क्या तुमने कुछ महसूस किया?"

गार्गी ने सिर हिला कर हामी भरी, बोली, “मुझे उनमें शक्ति-लहरें महसूस होती हैं। जब वह यहाँ आयीं थीं, तब नहीं होती थीं, लेकिन पिछले एक-दो दिनों में होने लगी हैं, शायद उन पर हमारा और हमारी मूर्तियों का प्रभाव पड़ा है?"

त्री सोच में डूब गया। बच्चों की शक्ति को बचपन में विकसित नहीं किया जाये तो वह मुरझा जाती है। शायद आभा का शक्ति-बीज किसी वजह से पूरा नहीं मुरझाया था, और यहाँ रहने से वह फिर से जाग गया है। उसने गार्गी से कहा, “तुमने मुझे बता कर अच्छा किया, मैं इसकी जाँच करूँगा।"

कुछ देर बाद वह आभा को खोजने गया। वह लड़कियों के होस्टल के बाहर एक पेड़ के नीचे बैठी कोई किताब पढ़ रही थी। त्री को देख कर वह उठने लगी तो उसने उसे बैठे रहने का इशारा किया, उसके पास रखी कुर्सी पर बैठ गया और बोला, “आप कुछ दिनों से मेरी शिल्पशाला में नहीं आईं, तो मैं सोच रहा था कि शायद आप की तबियत ठीक नहीं है, इसलिए आप से मिलने चला आया।"

वह बोली, “जब मैं यहाँ आयी थी तो सोचा था कि ताँबे से शिल्प बनाना सीखूँगी, लेकिन वह मेरे बस का नहीं है। आप की ताँबे की परत इतनी भारी होती है कि मैं उसे उठा नहीं सकती। उसे मशीन से काटना, हथौड़ों से पीट कर सीधा करना या मोड़ कर आकार देना, इस सब के लिए जो ताकत चाहिये, वह मेरे बस की बात नहीं। लेकिन यहाँ आप के पास आ कर पता नहीं कैसे, मेरा मन कुछ शाँत हो गया है।"

त्री ने भी महसूस किया कि आभा के माथे से शक्ति-लहर की हलकी सी अनुभूति आ रही है। क्या उसे आभा से इस बारे में बात करनी चाहिये? थोड़ा सा सोच कर वह इस नतीजे पर पहुँचा कि इस विषय में जल्दबाज़ी करना ठीक नहीं होगा।

वह वहाँ से उठ रहा था जब उसके मोबाइल की घंटी बजी। उसने देखा कि गुरु जी का फोन है तो वह समझ गया कि कुछ विशेष बात है क्योंकि वह उसे कभी फोन नहीं करते। उसने उनसे केवल एक मिनट तक ही बात की और फिर फोन बंद कर दिया।

आभा ने सुना कि उसने फोन पर किसी से कहा, “गुरु जी, हम आ रहे हैं" और उसका गम्भीर चेहरा देखा तो पूछा, “क्या हुआ? तुम्हें कहाँ जाना है?”

“एक एमरजैंसी हो गयी है, और हमें कल सुबह ही यहाँ से निकलना होगा। आप को यहाँ अकेला छोड़ना ठीक नहीं होगा, अच्छा होगा कि आप अपने भाई के पास कुर्स्यांग लौट जायें।"

“क्यों? मेरे यहाँ अकेले रहने में क्या कोई दिक्कत है?”

त्री ने सिर हिला कर मना किया, बोला, “हम लोग कुछ दिनों में लौट आयेंगे, तब आप यहाँ वापस आ सकती हैं। लेकिन इन दिनों में अगर आप विशाल के पास चली जायें तो बेहतर होगा।"

*****

7. गँगटोक, सिक्किम, 2 मार्च 2026

दोपहर में बच्चे जब स्कूल से लौटे तो त्रिनेत्र ने रंगनाथ से बाकी शिष्यों को अखाड़े में बुलाने के लिए कहा। थोड़ी देर में ही पाँचों वहाँ आ गये।

त्री ने कहा, “गार्गी, ज़रा देखो कि यहाँ कोई हमारी बात तो नहीं सुन रहा?”

"दादा, और तो कोई नहीं है लेकिन आश्रम में तीन शक्ति-लहरें महसूस हो रही हैं, उनमें से कोई सुन भी सकता है।"

रंगनाथ के माथे पर बल पड़ गये, बोला, “यह तीसरा कौन है?

त्री बोला, “तीसरी आभा है, लेकिन उसकी शक्ति पूरी विकसित नहीं हुई है", फिर माधव से बोला, “क्या तुम देख सकते हो उसकी शक्ति का रंग कौन सा है?”

माधव ने आँखें बन्द कर लीं और कुछ क्षणों के लिए आभा पर ध्यान केन्द्रित किया, फिर बोला, “नहीं दादा, उनकी लहर का रंग बहुत हल्का है।"

तब त्री ने वसंत से कहा, "अखाड़े के आसपास अभेद्य दीवार बनाओ, ताकि वह तीनों भी हमारी बातें नहीं सुनें।

वसंत पेड़ों के माध्यम से हवा में अवरोध पैदा करवा सकता है, जिससे ध्वनि की लहरें रुक जाती हैं और परिधि के बाहर कोई नहीं सुन सकता। उसने कुछ पल के लिए आँखें बन्द कीं, फिर मुस्करा कर धीरे से सिर हिलाया।

त्री बोला, “तुम्हें इसलिए बुलाया है क्योंकि हमें एक विपदा का सामना करना है। मेरे गुरु जी के पीछे बहुत सालों से एक जापानी गैंग लगा हैं, आज सुबह वह लोग उन्हें खोजने में सफल हुए हैं। गुरु जी ने ऐसी परिस्थितियों का पहले भी सामना किया है, वह नहीं चाहते कि हम उनकी चिंता करें। लेकिन इस बार उनका पीछा करने वाला कोई सामान्य व्यक्ति नहीं है, उसके पास गुप्त-शक्ति है, उसने उन्हें अन्वेषण-किरण से खोजा है। आज गुरु जी वहाँ से बच कर निकल आये, लेकिन अगले दिनों में उन्हें खतरा है। मैं उन्हें वहाँ अकेला नहीं छोड़ना चाहता, मैंने फैसला किया है कि मैं उनके पास जाऊँगा।"

सभी शिष्य उसकी ओर गम्भीरता से देख रहे थे।

रंगनाथ ने पूछा, “दादा, वह लोग उनके पीछे क्यों लगे हैं?”

“तुम्हें जितना कम मालूम हो उतना अच्छा है।"

गार्गी बोली, “दादा, क्या आप वहाँ अकेले जाओगे?”

"हाँ, मैं तुम लोगों को खतरे में नहीं डालना चाहता। जब मैं जाऊँगा तब तुम्हें, विशेषकर रंगनाथ और गार्गी को, यहाँ की देखभाल की ज़िम्मेदारी सम्भालनी पड़ेगी।"

रंगनाथ बोला, “दादा, अगर गुरु जी का पीछा करने वालों के पास अन्वेषण-किरण है, तो आप को अपनी शक्ति ढकने की ज़रुरत पड़ सकती है, नहीं तो वह आप को भी खोज लेंगे। आप हमें अपने साथ ले कर जाओ। हम बच्चे हैं, अगर वह जान भी जायेंगे कि हमारे पास शक्तियाँ हैं, तब भी हमें अधिक महत्व नहीं देंगे, वे छोटे बच्चों से नहीं डरेंगे। लेकिन हमारी शक्तियाँ इस लड़ाई में आप के काम आ सकती हैं।"

“मैं जानता हूँ कि तुम्हारी शक्तियाँ इस लड़ाई में मेरे काम आ सकती हैं, लेकिन अगर तुममें से किसी को कुछ हो गया तो मैं अपने आप को कभी क्षमा नहीं करूँगा।"

माधव बोला, “दादा, और अगर आप को कुछ हो गया तो हमारा ध्यान कौन रखेगा? अगर हम आप के साथ में होंगे तो जैसे रंगा दादा कहते हैं, कोई बच्चों को अधिक महत्व नहीं देगा और हम आप की मदद कर सकते हैं। आप ठीक रहोगे तो बाद में हमारी देखभाल भी करोगे।"

गार्गी बोली, “आप हमें उनसे लड़ाई के समय साथ नहीं रखना चाहते, तो भी हम लोग वहाँ पास में कहीं पर रह सकते हैं और वहाँ से आप की कुछ मदद कर सकते हैं।"

त्री कुछ देर तक सोचता रहा, फिर बोला, “मैं यह निर्णय लेने से पहले महादेव का मार्गदर्शन चाहता हूँ।" जब वह मुश्किल में होता है और उसे समझ नहीं आता कि क्या निर्णय लेना चाहिये, तो वह मंदिर में शिव जी के सामने ध्यान

लगाता है और उनसे पूछता है। उसे लगता है कि शिव जी हमेशा उसके अंतरमन के प्रश्नों के उत्तर देते हैं, उसका मार्गदर्शन करते हैं।

वसंत ने पूछा, “दादा, गुरु जी ने और क्या कहा?”

“गुरु जी आज सुबह नारायणपुर गये थे। उनके और मेरे बीच एक मानसिक तार जुड़ा है, वह जब चाहें, मेरे मन में बात कह सकते हैं, लेकिन आज उन्होंने यह बात मुझे टेलीफोन पर बतायी। इसका मतलब है कि उस समय उन्होंने अपनी शक्ति को ढक लिया था, वह उसका प्रयोग नहीं कर सकते थे। तब से मैं उनसे सीधा सम्पर्क नहीं कर पाया हूँ, शायद वह नहीं चाहते कि उनका पीछा करने वालों को उनके आश्रम का पता चले।"

गार्गी बोली, “अगर उन्होंने गुरु जी को अन्वेषण-किरण से खोजा है तो उन्हें केवल एक शक्ति-लहर की अनुभूति हुई होगी, उसे पक्का पता नहीं होगा कि वह गुरु जी ही हैं?”

वसंत बोला, “अगर अब वह लोग गुरु जी की शक्ति-लहर को नहीं खोज पा रहे, और उन्हें वहाँ पर हममें से कोई बच्चा मिल जाये, तो शायद वह सोच सकते हैं कि जो शक्ति-लहर उन्होंने महसूस की थी, वह गुरु जी नहीं थी, बल्कि हमारी थी?”

माधव बोला, “अगर हम लोग नारायणपुर जायें तो रंगा भैया उनकी बातें दूर से सुन सकते हैं और पता लगा सकते हैं कि वह कितना जानते हैं और उनकी आगे की क्या योजना है?”

त्री ने हाथ उठा कर उन्हें चुप कराया, बोला, “तुमने जो कहना था वह कह दिया, अब मुझे सोचने का समय दो और तुम लोग यहाँ से जाओ।"

बच्चे वहाँ से गये तो त्रिनेत्र मन्दिर में नटराज की प्रतिमा के सामने पद्मासन लगा कर बैठ गया और शिव जी का ध्यान लगा कर उनसे मार्गदर्शन माँगा।

कुछ देर के बाद जब वह अखाड़े से बाहर निकला तो देखा कि वहाँ एक पेड़ के पास आभा बैठी है। उसे देख कर वह उठ कर आयी, बोली, “मैं आप से मिलने आयी थी, लेकिन बच्चों ने मुझे कहा कि आप व्यस्त हैं, कोई भीतर नहीं जा सकता।"

“कहिये", त्री ने कहा।

“मैंने विशाल को टेलीफोन किया था, वह मुझे लेने आज नहीं आ सकता, क्या मैं यहाँ से कल सुबह जा सकती हूँ?”

“हाँ, आप विशाल को कहिये कि उसे यहाँ आने की आवश्यकता नहीं, कल सुबह हम लोग रास्ते में आप को वहाँ पर छोड़ देंगे।"

“बच्चे कह रहे थे कि यहाँ एक अखाड़ा है जहाँ वह व्यायाम करते हैं, क्या मैं आप के अखाड़े को देख सकती हूँ?” आभा ने पूछा।

त्री ने एक पल के लिए सोचा कि उसे मना कर दे, फिर बोला, “आईये, मैं आप को दिखाता हूँ।"

उसने अखाड़े का द्वार खोला और वह दोनों भीतर घुसे। आभा वहीं दरवाज़े के पास रुक गयी, बोली, “हरे पत्तों की छाया में ढकी यह जगह बहुत सुंदर है, किसी जँगल का हिस्सा लगती है। यहाँ बहुत शाँति है।" फिर उसने मन्दिर की ओर देखा, बोली, “वहाँ क्या है? लगता है जैसे कोई मुझे उस ओर खींच रहा है। मुझे भीतर से कुछ अजीब सा महसूस हो रहा है।"

इससे पहले कि वह उसे कुछ कहता, आभा ने आँखें बन्द कर लीं और उसके शरीर का ऊपरी हिस्सा धीरे-धीरे आगे-पीछे डोलने लगा। त्री को लगा कि वह ध्यान में चली गयी है।

इसके साथ ही अखाड़े में लगे पेड़-पौधों से अजीब सी सरसराहट की आवाज़ें आने लगी। कुछ ही देर में उनके आसपास की सारी धरती, जीव-जन्तुओं से भर गयी - उनमें कुछ गिलहरियाँ, चूहे और साँप थे, और उनके साथ हज़ारों छोटे-बड़े कीड़े-मकोड़े थे। सभी जीव-जन्तु किसी तंद्रा में डूबे लग रहे थे, वह उनके आसपास चक्कर लगाने लगे।

त्री घबराया, उसने आभा के कँधे पर हाथ रख कर उसे पुकारा तो उसका डोलना रुका। उसने धीरे-धीरे आँखें खोलीं, लेकिन उसकी दृष्टि खाली घूम रही थी, जैसे कि वह कुछ देख नहीं पा रही हो। तब त्री ने ज़ोर से ताली बजायी तो आभा

के सिर को झटका लगा और वह जैसे नींद से जागी। उसी क्षण में जिस शक्ति ने उन जीव-जन्तुओं बाहर बुलाया था, वह क्षीण हो गई तो वह सभी अपने बिलों या पेड़ों की ओर चले गये। एक मिनट में सभी जीव-जन्तु वहाँ से गुम हो गये।

आभा ने आश्चर्य से उन्हें जाते हुए देखा। अक्सर लोग साँपों, कीड़ों-मकोड़ों से डरते हैं, लेकिन उसकी दृष्टि में बिल्कुल भी भय नहीं था। उसने त्री से पूछा, “यह कैसे किया तुमने? मुझे लगा कि मैं कोई सपना देख रही हूँ।"

जब वह कुछ नहीं बोला तो वह बोली, “तुम कोई जादूगर हो? बताओ, तुमने यह कैसे किया?”

त्री ने उसका हाथ पकड़ा, बोला, “चलो, यहाँ से बाहर चलते हैं, फिर तुम्हें बताऊँगा।"

*****

8. गँगटोक, सिक्किम, 2 मार्च 2026

वह दोनों अखाड़े से बाहर आये तो देखा कि रंगनाथ, गार्गी, वसंत, माधव और तृप्ति उधर भागे आ रहे हैं। उनके पीछे, अनाथाश्रम के कुछ कुत्ते और बिल्लियाँ भी थे।

गार्गी ने पूछा, “क्या हुआ? मुझे लगा कि जैसे इधर कोई भूचाल आ रहा हो और कोई मुझे यहाँ खींच रहा हो।"

रंगनाथ बोला, “हाँ, घूँ-घूँ की अजीब सी आवाज़ें आ रही थीं।"

माधव मुस्कराया, बोला, “अखाड़े के ऊपर इन्द्रधनुष जैसी रोशनियाँ डिस्को डाँस कर रही थीं और पशुशाला में मुर्गियाँ, गायें, भैंसे, बछड़े, सभी बाहर निकलने की कोशिश कर रहे थे।"

त्री बोला, “चलो, मेरे घर चलते हैं, वहाँ बात करेंगे।"

त्री का छोटा सा घर, पेड़ों के झुरमुट के बीच में है और अखाड़े से अधिक दूर नहीं है। उसके घर में, एक कमरे में एक ओर कुछ कपड़े टंगे थे और एक स्टूल पर कुछ किताबें रखी थीं, बस, बाकी का सारा घर खाली था।

त्री ने एक दरवाज़े के पीछे से एक लिपटी हुई चटाई को निकाल कर बीच में बिछा दिया, बोला, “यहाँ बैठो", फिर वसंत से कहा, “घर के आसपास अभेद्य दीवार बना दो ताकि कोई हमारी बात नहीं सुन सके।"

इस सारे समय में आभा चुप थी, उनके बातें ध्यान से सुन रही थी।

त्री बच्चों से बोला, “तुमने ठीक देखा था, आभा के भीतर भी गुप्त-शक्ति है। आज जब हम अखाड़े में गये तब वह शक्ति अचानक जाग गयी। मैंने ऐसी शक्ति के बारे में पहले कभी नहीं सुना था। वह जीव-जन्तुओं को, विशेषकर कीड़ों-मकोड़ों को बुला सकती है। हो सकता है कि वह उनसे बातें भी कर सकती है।"

आभा बोली, “तुम लोग मेरे बारे में ऐसे बातें क्यों कर रहे हो जैसे कि मैं यहाँ नहीं हूँ? तुम यह कौन सी गुप्त-शक्ति की बातें कर रहे हो? मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा।"

त्री ने गार्गी को इशारा किया तो उसने आभा के मस्तिष्क में एक क्षण के लिए एक शक्ति-लहर भेजी। आभा को जैसे बिजली का झटका लगा, लेकिन वह समझ गयी कि जो अनुभूति उसने महसूस की है, उसे गार्गी ने भेजा है। उसने आश्चर्य से गार्गी को देखा, पूछा, “तुमने यह क्या किया और कैसे किया?”

तब रंगनाथ बोला, “दीदी, दुनिया में हमारे जैसे कुछ लोग एक गुप्त-शक्ति के साथ पैदा होते हैं। त्री दादा के साथ, हम लोग हर रोज़ ध्यान, व्यायाम और अभ्यास से, उस शक्ति को साधते हैं। अगर बचपन में इस शक्ति को साधा नहीं जाये तो समय के साथ यह मुरझा जाती है। शायद आप भी एक गुप्त-शक्ति के साथ पैदा हुई थीं, लेकिन किसी वजह से आप की शक्ति मुरझाई नहीं, उसका बीज आप के भीतर आज भी जीवित है। हमारी शक्तियों की वजह से, हमारे अखाड़े की मिट्टी में ऐसा वातावरण बना है, जिससे व्यक्तियों के भीतर छिपी शक्तियाँ विकसित और प्रबल हो जाती है। आज अखाड़े में आप के भीतर सोयी हुई शक्ति जाग गयी है।"

“तुम यह क्या कह रहे हो, मुझे कुछ समझ नहीं आया", आभा बोली।

तो रंगनाथ ने तृप्ति से कहा, “उस लोटे को उठाओ।"

स्टूल के पास ज़मीन पर एक लोटा रखा था, तृप्ति ने उसे देखा तो वह हिलने लगा और फिर अपने आप सरक कर वह उसके पास आ गया।

रंगनाथ बोला, “आप ने देखा? तृप्ती की शक्ति धातुओं के साथ काम करती है, अपनी शक्ति से वह उस लोटे को अपने पास खींच लायी। वैसे ही वसंत की शक्ति पेड़-पौधों के साथ काम करती है", उसने वसंत को इशारा किया।

कमरे की खिड़की के बाहर एक बेल लगी थी जिसमें लाल और सफेद रंग के फ़ूल खिले थे। वसंत ने उस ओर देखा तो बेल का एक हिस्सा हिलने लगा, फिर मुड़ कर वह कमरे में घुस आया और दीवार के साथ-साथ चलता हुआ, जितनी दूर आ सकता था वहाँ आ कर रुक गया।

तृप्ति और वसंत के कारनामों को आभा ने हैरानी से देखा।

माधव बोला, “आभा दीदी की शक्ति का रंग अब दिखने लगा है, वह गुलाबी है।"

गार्गी बोली, “आप के पास भी ऐसी एक शक्ति है, उससे आप कीड़ों-मकोड़ों और जीव-जन्तुओं को बुला सकती हैं।”

त्री बोला, “लगता है कि तुम्हारी शक्ति ताकतवर है, लेकिन अभी तुम्हें उस पर नियंत्रण करना नहीं आता।"

आभा ने उबासी ली, बोली, “तुम लोग यह क्या कह रहे हो, मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा। साथ में मेरा सिर झन्ना रहा है और मुझे बहुत थकान लग रही है।"

तृप्ति बोली, “दीदी, जब तक हम ठीक से शक्ति-साधना नहीं सीखते, तब तक उसका उपयोग करने से ऐसा ही होता है। मैंने अभी तुम्हें लोटा हिला कर दिखाया था, मुझे भी बहुत थकान हो गयी है।"

आभा की आँखें बैठे-बैठे नींद से बंद हो रही थीं। त्री ने रंगनाथ को अलमारी से एक तकिया निकाल कर लाने के लिए कहा, और आभा से बोला, “थोड़ी देर तुम यहीं चटाई पर लेट जाओ, कुछ देर आराम करने से तुम्हारी थकान ठीक हो जायेगी।"

आभा ने उठने की कोशिश की, बोली कि वह छात्रावास में अपने कमरे में जायेगी, लेकिन चटाई से उठ नहीं पायी। आखिर में उसने तकिये पर सिर रख कर आँखें बंद कर लीं।

तृप्ति बोली, “मैं भी थोड़ी देर दीदी के साथ आराम करूँगी", और वह भी आभा के पास लेट गयी।

त्री उठ खड़ा हुआ, बाकी चारों बच्चों को ले कर बाहर आ गया, बोला, “मैंने फैसला किया है कि कल तुम सभी मेरे साथ चलोगे। हम लोग सुबह नाश्ते के बाद निकलेंगे, रास्ते में आभा को उसके भाई के पास छोड कर, हम लोग मजूली जायेंगे।"

सभी बच्चे खुश हो गये तो त्री ने उन्हें शोर न करने का इशारा किया, बोला, “तुम लोग अपना सामान तैयार कर लो क्योंकि हमें वहाँ कुछ दिन रुकना होगा।"

रंगनाथ ने पूछा, “और हमारे हथियार? उन्हें ले कर चलेंगे?”

त्री ने कुछ देर सोचा फिर बोला, “नहीं, बेहतर होगा कि हम अपने साथ कोई हथियार नहीं ले कर जायें। वैसे भी तुम उनका प्रयोग अभी सीख रहे हो। लेकिन अगर तुममें से कोई दुश्मन के हाथ आ गया और उसने देखा कि तुम्हारे पास कोई हथियार हैं तो वह तुम्हें जान से भी मार सकता है। अच्छा होगा कि तुम उन्हें सामान्य बच्चे लगो। हमारी शक्तियाँ ही हमारा हथियार हैं।"

वसंत बोला, “यह हमारे तिरंगा-यौद्धाओं की सैना का पहला युद्ध होगा, हम बड़े गुरु जी की रक्षा करेंगे।"

शुरु में जब त्री के साथ केवल रंगनाथ और गार्गी थे, तो रंगा ने अपने नामों के पहले अक्षर जोड़ कर अपने आप को तिरंगा-योद्धा कहना शुरु किया था। बाद में अन्य बच्चों के आने के बावजूद, वही पुराना नाम उन्हें अभी भी अच्छा लगता है, हालाँकि त्री ने उन्हें कई बार समझाया है कि वह किसी पर हमला करने वाले यौद्धा नहीं है, वह केवल रक्षा के लिए युद्ध करते हैं।

बच्चे वहाँ से चले गये और त्री वहीं बैठ कर प्रतीक्षा करता रहा। कुछ देर के बाद उसने देखा कि तृप्ति की आँखें खुली हैं तो उसे उठने का इशारा किया, “चलो, मैं तुम्हें तुम्हारे कमरे तक छोड आता हूँ।"

“दादा, आभा दीदी बहुत अच्छी हैं, क्या वह हमारे साथ नहीं रह सकतीं?”, रास्ते में उसने पूछा।

त्री को केवल इतना पता है कि आभा का गाँव मणिपुर में लोकटक झील के पास में है। वह बोला, “आभा का गाँव में अपना घर-परिवार है, वह उन्हें छोड़ कर हमारे साथ कैसे रुकेगी?"

तृप्ति को छात्रावास में छोड़ कर वह अनाथाश्रम के संचालक से बात करने उनके दफ्तर गया और उन्हें कहा, "कल सुबह मैं, रंगनाथ, गार्गी, वसंत, माधव और तृप्ति, हम छह लोग कुछ दिनों के लिए आसाम जा रहे हैं। आभा भी हमारे साथ जायेगी, उसे रास्ते में कुर्स्यांग छोड़ते हुए जायेंगे। हम कुछ दिन बाहर रहेंगे।"

जब वह घर लौटा तो देखा कि आभा अभी भी बेसुध सी गहरी नींद में सो रही है, उसके जागने की प्रतीक्षा में वह वहाँ पालथी मार कर बैठ गया।

*****

9. मजूली द्वीप, असम, 2 मार्च 2026

बाबा दोपहर के साढ़े चार बजे अपने घर से निकले।

आज उन्होंने केसरिया वस्त्र की जगह पर एक सफेद चद्दर को अपने तन पर लपेटा था। उनकी भिक्षा के कटोरे में हरिताश्म तारा की एक मूर्ति थी जिसके बिना वह कहीं नहीं जाते। आज उन्होंने अपनी खड़ाऊँ भी नहीं पहनी, नंगे पाँव ही घर से निकले।

वह आज समाधी ले रहे हैं, यह खबर सारे क्षेत्र में फ़ैल चुकी है। आसपास के गाँवों के लोग और पास के हाई स्कूल के बहुत से छात्र, आश्रम में जमा हो गये हैं और अन्य लोग आते जा आ रहे हैं। वृद्धाश्रम का मैदान उनसे भरा है।

इस मैदान के उत्तरी कोने पर, नदी के पास, एक छोटी सी पहाड़ी पर काले पत्थर का मन्दिर बना है। इसके प्रमुख कक्ष में एक ओर नटराज हैं और दूसरी ओर ध्यानमुद्रा में महात्मा बुद्ध। कक्ष के बीच में खड़े हुए बौद्धिसत्व अवलोकितेश्वर की बड़ी मूर्ति है, जिसके दोनों हाथ छाती के सामने हैं और हथेलियाँ ऊपर उठी हुईं हैं। उनकी दायीं हथेली पर हरिताश्म तारा की मूर्ति है और बायीं ओर श्वेत तारा की। इसी मंदिर के प्रांगण में बाबा समाधी लेंगे।

मन्दिर के सामने, मजदूरों ने दोपहर को ही खोदना शुरु कर दिया था और अब उनकी समाधी के लिए दो मीटर गहरा गड्ढ़ा तैयार है।

जैसे ही वह आश्रम के गेट से भीतर घुसे तो वहाँ एकत्रित लोग उन्हें देखने के लिए उठ खड़े हुए। किसी ने पुकारा, “जामुन बाबा की जय", तो सारी भीड़ उस नारे को बार-बार दोहराने लगी। बाबा वहीं बीच में रुक गये, भिक्षा के कटोरे को हाथ में लिए, नतमस्तक हो कर चुपचाप वहाँ आँखें बंद करके खड़े हो गये। धीरे-धीरे जब भीड़ चुप हुई तब वह आगे बढ़े।

पहाड़ी के ऊपर जाने वाली सीढ़ियों के पास आश्रम में रहने वाले वृद्ध कतार बना कर खड़े थे, कई लोगों की आँखों से आँसू बह रहे थे। बाबा ने सिर उठा कर किसी की ओर नहीं देखा, नतमस्तक ही चुपचाप उनके बीच से निकले। जब वह सीढ़ियाँ चढ़ने लगे तो पीछे से एक वृद्धा ने पुकार कर कहा, “जामुन बाबा, हमें एक अंतिम प्रवचन का दान दे दो।"

बाबा वहीं ठिठक कर सीढ़ियों पर रुक गये। एक-दो क्षण वहाँ चुपचाप खड़े रहे, फिर लोगों की ओर मुड़े। बहुत देर तक कुछ नहीं बोले। उनके शरीर पर लिपटी चादर का पिछला हिस्सा हवा से ऊपर उठा और कुछ क्षणों के लिए उनके ऊपर झुक कर एक शेषनाग की तरह लहराता रहा। लोग स्तब्ध हो कर इस दृष्य को देख रहे थे।

वह बोले, “मैं बहुत भाग्यवान हूँ, कि मुझे आप के साथ रहने और आप की सेवा करने का अवसर मिला। आज मेरी आत्मा, अंतहीन आकाश में ब्रह्माँड से जुड़ कर एक हो जायेगी और मुझे करुणामयी तारा माँ की गोद में चिरनिन्द्रा मिलेगी। मेरी यह आकाँक्षा सफल हो, इसके लिए आप की प्रार्थना की मुझे अपेक्षा है। आप लोगों से मेरी एक प्रार्थना भी है कि जैसे आप मेरे साथ प्रेम और शाँति के साथ रहे, मेरे बाद भी यह आश्रम वैसे ही चलायेंगे।"

उन्होंने अपने हाथों को जोड़ कर, उन्हें सिर के ऊपर उठा कर, सभी को प्रणाम किया और धीरे-धीरे बाकी सीढ़ियाँ चढ़ कर अपने समाधी-स्थान की ओर गये।

उस समय जगदीश बाबू की आँखों से भी आँसू झरने लगे और उन्होंने महामृत्यंजय मंत्र का पाठ शुरु कर दिया, "ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्"।

हालाँकि उन्होंने बार-बार वहाँ इकट्ठे लोगों से बाबा की तस्वीरें खींचने या वीडियो रिकॉर्ड करने से मना किया था, फिर भी कुछ लोग मोबाइल निकाल कर उनकी तस्वीरें खींच रहे थे।

ऊपर जा कर बाबा पहले मन्दिर में गये और वहाँ कुछ देर तक प्रार्थना की, फिर बाहर आ कर, मन्दिर की तीन बार प्रदक्षिणा की। अंत में वह खुदे हुए गड्ढ़े के पास रखे चकोराकार लकड़ी के बक्से के पास आये और हाथ में भिक्षा का कटोरा पकड़े हुए उसके भीतर आँखें बंद करके पद्मासन में बैठ गये।

मैदान में सन्नाटा छा गया। कुछ देर के बाद आश्रम की एक वृद्धा आगे आयी और लाठी के सहारे चलते हुए मन्दिर की सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर गयी। उसने बाबा के सामने हाथ जोड़े और उस बक्से के पाटों को बंद कर दिया। पीछे कुछ

मजदूर तैयार खड़े थे, वह रस्सियाँ ले कर आये और उनसे उस बक्से को लपेट दिया, फिर रस्सियों के सहारे उठा कर उस बक्से को गड्ढ़े के भीतर रख दिया।

बक्से के ऊपर पहली मिट्टी की मुट्ठी डालने वही वृद्धा आयी। मुट्ठी में मिट्टी ले कर वह कुछ देर तक गड्ढ़े के पास खड़ी रही। उसकी आँखों से आँसू बह रह थे और उसकी सफेद साड़ी का पल्लू भी ध्वज की तरह कुछ क्षणों के लिए हवा में उड़ा। फिर एक लम्बी साँस ले कर उसने वह मिट्टी गड्ढ़े में फैंकी और साड़ी के कोने से आँसू पोंछते हुए सीढ़ियाँ उतर कर नीचे लौट आयी।

उसके बाद मजदूरों ने भी मिट्टी गड्ढ़े में डाली।

तब तक आश्रम के वृद्धों ने वहाँ एकत्रित लोगों को एक कतार बनाने के लिए कहा। उनमें सबसे आगे जगदीश बाबू थे। एक-एक करके सब लोग मन्दिर की सीढ़ियाँ चढ़ते, गड्ढे के पास पड़ी हुई मिट्टी को हाथ में लेते और गड्ढ़े में डाल देते।

इस काम को पूरा करने में करीब आधा घंटा लगा। जब सबने स्माधी-कुण्ड में मिट्टी डाल दी तो बची हुई मिट्टी से मजदूरों ने उस गड्ढ़े को भर दिया। समाधी-स्थल के लिए, प्रांगण के फर्श जैसा, एक चकोर कटा हुआ काला पत्थर पहले से तैयार रखा था, उसे लगा कर मजदूरों ने फर्श को पूरा कर दिया। अब वहाँ बाहर से बाबा के समाधी-स्थल का कोई निशान नहीं बचा था।

बाबा के निर्देशों के अनुसार, वहाँ एकत्रित सब लोगों को प्रसाद बाँटा गया, और फिर धीरे-धीरे लोग वहाँ से जाने लगे। सब यही बात कर रहे थे कि जीवित समाधी लेने वाले जामुन बाबा अब बड़े संत माने जायेंगे और वह जगह दूर-दूर तक तीर्थ-स्थान की तरह प्रसिद्ध हो जायेगी।

जब जगदीश बाबू ने त्रिनेत्र को अगले दिन सुबह टेलीफोन पर यह बात बतायी तो वह स्तब्ध रह गया, बोला, “कल शाम को? तो आप ने मुझे पहले खबर क्यों नहीं की? हम आज सुबह उनके पास आने के लिए तैयार हुए हैं।”

“बेटा, मैंने तो उन्हें बहुत कहा था कि पहले तुम्हें बुला लेना चाहिये। तुम उनके उत्तराधिकारी हो, तुम्हारा यहाँ होना बहुत ज़रूरी है, लेकिन वह नहीं माने।"

त्री रोने लगा। जगदीश बाबू कुछ देर तक उसके रोने की आवाज़ सुनते रहे, फिर बोले, “वह तुम्हारे लिए एक पत्र छोड़ कर गये हैं।"

“उसमें क्या लिखा है?”

“मुझे पता नहीं, लिफाफा बंद है। उन्होंने कहा कि जब तुम यहाँ आओगे, उसे तभी तुम्हें देना है।"

त्री ने अपने आँसू पोंछे, बोला, “हम लोग आज सुबह गँगटोक से चल रहे हैं, कल शाम तक वहाँ पहुँच जायेंगे।"

“तुम्हारे साथ और कौन आ रहा है?”, जगदीश बाबू ने पूछा।

“हमारे अनाथाश्रम के कुछ बच्चे हैं, उन्हें गुरु जी से मिलवाना चाहता था। अब वह उनकी समाधी को देखेंगे।"

*****

10. नारायणपुर, असम, 3 मार्च 2026

सुबह जापान से रिकू का फोन आया, उसने इधर-उधर की बात नहीं की, सीधा पूछा, “ओरी, क्या हुआ? अभी तक जून-मिन का पता नहीं चला?”

“यामागुचि सान, हमें उसका पता चल गया है। वह बूढ़ा हो गया है, लेकिन अभी भी चालाक है। कल वह हमसे बच कर भागने में सफल हुआ लेकिन अब हमें पता चल गया है कि वह किस क्षेत्र में रहता है, आप कुछ दिन और धैर्य रखिये, मैं उसे अवश्य खोज निकालूँगा", ताकानोरी ने कहा।

“तुम्हें वहाँ गये हुए तीन महीने हो गये हैं, इतने समय में तुम उसे खोज क्यों नहीं पाये?”

“आप चिंता नहीं करें, मुझे पक्का विश्वास है कि कुछ समय में मैं उसे खोज निकालूँगा", उसने उसे आश्वासन दिया।

सोमचाई ने कम्प्यूटर के प्रोग्राम की सहायता से जून-मिन की पुरानी तस्वीर को ले कर, एक कृत्रिम-बुद्धि प्रोग्राम से उनकी नयी तस्वीरें बनायी थीं और उन्हें अपने आदमियों को दिया था ताकि वह उनको दिखा कर शहर में पूछताछ करें। कुछ घंटे बाद, बटेर खबर ले कर आया, बोला, “एक दुकानदार ने इस तस्वीर को पहचान लिया, कहा कि यह तो जामुन बाबा हैं और उसके यहाँ कभी-कभी सामान खरीदने आते हैं। लेकिन वह कहाँ रहते हैं, उसे पता नहीं था। बोला कि वह हर महीने-दो महीने में नारायणपुर आते हैं और वहाँ से तेल, साबुन वगैरा खरीद कर ले जाते हैं।"

सोमचाई ने इंटरनैट पर "जामुन बाबा" को खोजा तो उसे इंस्टाग्राम पर उसी दिन सुबह के कुछ वीडियो मिल गये। वह तुरंत मोबाइल को ले कर ताकानोरी के पास गया, बोला, “कुछ वीडियो मिले हैं। इनके अनुसार, कल शाम को जामुन बाबा यानि जून-मिन ने समाधी ले कर प्राण त्यागे हैं।"

ओरी ने वीडियो देखे। एक वीडियो में वह हिस्सा था जब बाबा एकत्रित लोगों के सामने कुछ बोल रहे थे और उनकी सफेद चद्दर उसके पीछे हवा में ऊपर उठ गयी थी। एक दूसरे वीडियो में उनके बक्से में बैठने और बक्से को ज़मीन में गाड़ने के दृश्य थे। वीडियो में लोग "जामुन बाबा" का नाम बार-बार ले रहे थे।

“यह समाधी लेना, इसका क्या मतलब है?” ओरी ने पूछा।

“वीडियो देख कर लगता है कि कल उन्होंने अपने आप को एक गड्ढ़े में जीवित दफन करवा लिया, अब तक वह मर गये होंगे।"

“यह वीडियो झूठा भी हो सकता है? शायद उसने यह वीडियो आर्टिफीशियल इन्टैल्लीजैंस से बनवा कर हमें गुमराह करने के लिए लगवाये हों?”

“मेरी जाँच में यह आर्टिफीशियल इन्टैल्लीजैंस से नहीं बने हैं। इन्हें किसी स्कूल के लड़कों ने इंस्टाग्राम पर डाले हैं। यह झूठे नहीं लगते, लेकिन इस बात की पुष्टी करना आसान है। यहाँ से कुछ दूर ब्रह्मपुत्र नदी के मजूली द्वीप पर उनका एक वृद्धाश्रम है, हम वहाँ जा कर उसकी जाँच कर सकते हैं", सोमचाई बोला।

ओरी ने तुरंत जीप तैयार करवायी और वे लोग चापोड़ी घाट आये। वहाँ से उन्होंने वृद्धाश्रम जाने के लिए एक नाव को किराये पर लिया।

जामुन बाबा के जीवित समाधी लेने की खबर धीरे-धीरे फ़ैल रही थी, बहुत से लोग यह बात सुन कर उनकी समाधी को देखने आ रहे थे, इसलिए वृद्धाश्रम में समाधी-स्थल को देखने वालों की भीड़ लगी थी। ओरी और उसके आदमियों ने उनके बीच से जल्दी आगे बढ़ने की कोशिश की, लेकिन वह भीड़ इतनी अधिक थी कि वह कुछ नहीं कर पाये। भीड़ के साथ-साथ वह भी धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे।

आगे आये तो देखा कि वृद्धाश्रम के द्वार से बाहर दूर तक कतार लगी है, जो बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ रही है। ताकानोरी के आदमियों ने कतार से आगे जा कर घुसने की कोशिश की, तो कतार में खड़े हुए लोग गुस्सा हो गये। आखिर में उन्हें भी पीछे कतार में ही आना पड़ा।

ओरी को इस देरी पर बहुत गुस्सा आ रहा था, उसका बस चलता तो वह अपनी तलवार निकाल कर, लोगों को मारता-काटता आगे बढ़ जाता लेकिन सोमचाई ने उसे रोका, कहा कि अगर वह सौ लोगों को भी मार देगा तब भी बाकी के हज़ारों लोग पत्थरों से उसका सिर फोड़ देंगे।

दो घंटे के बाद जब वह समाधी-स्थल पर पहुँचे तो उसकी दृष्टि साथ में बने मन्दिर की ओर गयी। उसकी बाहरी दीवार पर बहुत सी मूर्तियाँ बनी थीं, उनके बीच मूर्तियों की एक पंक्ति ने उसका ध्यान खींचा। उस पंक्ति में श्वेत तारा और हरित तारा की मूर्तियाँ साथ-साथ लगी थी। उसने वहाँ खड़े हो कर तुरंत आँखें बंद कीं और अन्वेषण-किरण से उन मूर्तियों को जाँचा, उसे लगा कि उनमें हलकी सी शक्ति-लहर का आभास हो रहा है। यह देख कर उसके मन को चैन मिला, कि अगर जून-मिन की हरिताश्म तारा की मूर्ति नहीं भी मिलेगी, तो वह इन मूर्तियों को यामागुचि सान के लिए जापान ले जा सकता है।

उसे समाधी-स्थल पर आगे न बढ़ता देख कर, कतार में उसके पीछे वाले लोगों ने शोर मचाया तो उसके आदमियों ने उन्हें समझाया कि वह विदेश से आया बौद्ध भिक्षुक है और समाधी लेने वाले जामुन बाबा का पुराना शिष्य है, तो सब लोग चुप हो गये।

वह सोमचाई के साथ मन्दिर के प्रांगण में पीछे की ओर जा कर खड़ा हो गया, बोला, "कल सुबह मैंने उसकी शक्ति-लहर को नारायणपुर में पकड़ा था और कल शाम को ही उसने समाधी ले कर प्राण त्याग दिये, क्यों? मुझे इस बात पर शक हो रहा है। यह उस बूढ़े की हमसे बचने की कोई चाल लगती है। मान लो कि उसका समाधी लेना केवल एक ड्रामा है? हो सकता है कि जब लकड़ी का बक्सा नीचे गड्ढे में उतारा गया तो वह भीतर नहीं था, पीछे से निकल कर कहीं पर छिप गया था, तो? या उस बक्से में साँस लेने की नलकी लगी थी, रात को जब लोग चले गये तो उन्होंने गड्ढ़े को खोल कर उसे बाहर निकाल लिया हो? या फिर, यहाँ समाधी स्थल के नीचे कोई सुरंग बनी हुई हो, लोगों के सामने उसने समाधी ली पर नीचे जा कर, वह बक्से से निकल कर, सुरंग से कहीं भाग गया हो?"

सोमचाई बोला, "पहाड़ी के भीतर रास्ता या सुरंग बनाने आदि में बहुत समय लगेगा। अगर ऐसा हुआ तो इसका मतलब होगा कि इसकी योजना उसने बहुत पहले बनायी थी और कल जैसे ही उसे लगा कि हमने उसे तलाश कर लिया है तो उसने समाधी ले ली? लेकिन उसे यह करने की क्या आवश्यकता थी? आप ने कहा था कि वह पिछले छयालिस सालों से भाग रहा है, जब कोई उसे खोज लेता था तो वह भाग कर कहीं और चला जाता था। तो इस बार वह कहीं और क्यों नहीं गया, उसने मरने के लिए समाधी क्यों ली?"

ओरी के माथे पर बल पड़ गये, बोला, "सचमुच वह बूढ़ा बहुत चालाक है और हमसे कोई खेल खेल रहा है। मुझे बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं होगा कि वह आसपास में कहीं पर छिप कर, हमें यहाँ बातें करता हुआ देख रहा है और हँस कर मज़े ले रहा है।" फिर, आसपास देखते हुए बोला, "यहाँ एक वृद्धाश्रम है, पहले यहाँ के बूढ़ों से पूछताछ करनी चाहिये। अगर ज़रूरत पड़ी तो मैं इस समाधी को खुदवा कर उसके मृत शरीर को अपनी आँखों से देखूँगा।"

सोमचाई ने समाधी को देखने आने वाले श्रद्धालुओं की भीड़ की ओर देखा, बोला, "इन लोगों के सामने हम कुछ नहीं कर सकते। इनके सामने अगर हम इस समाधी को हाथ भी लगायेंगे तो यह लोग हमारी धज्जियाँ उड़ा देंगे। यही नहीं, हमारे तीनों आदमी भी इस बाबा के भक्त बन गये लगते हैं, देखो कैसे हाथ जोड़ कर खड़े हैं।"

सचमुच बटेर, लक्की और मटरू भी, अन्य श्रद्धालुओं की तरह जून-मिन की समाधी के पास हाथ जोड़ कर खड़े थे।

"एक मिनट रुको, मैं अभी आता हूँ", कह कर ओरी मन्दिर के भीतर गया।

जब उसने मन्दिर के बीच में बौद्धिसत्व अवलोकितेश्वर की मूर्ति देखी तो उसकी दृष्टि उनकी हथेलियों पर रखी हरित तारा और श्वेत तारा की प्रतिमाँओ की ओर गयी। उसने आँखें बन्द करके उनकी जाँच की, उसे लगा कि उनमें भी शक्ति का स्पंदन है।

उसने मन्दिरकक्ष की अन्य दोनों मूर्तियों, ताँडव करते शिव और ध्यानलीन बुद्ध को भी ध्यान से देखा तो उनमें भी शक्ति का कंपन महसूस किया। वह समझ गया कि यह मन्दिर, यह प्रतिमाएँ, यह कोई सामान्य जगह नहीं हैं, इनमें ईश्वर की ऊर्जा का विशेष वास है।

उसने सोचा कि उन बड़ी मूर्तियों को जापान ले जाना कठिन होगा, लेकिन वह तारा की छोटी प्रतिमाओं को यहाँ से ले जा सकता है। यामागुचि तो शक्ति वाली मूर्तियाँ चाहिये, और यहाँ पर वैसी मूर्तियों की कमी नहीं है।

जब वह मंदिर से बाहर निकला तो उसे देखते ही सोमचाई समझ गया कि मन्दिर में कुछ हुआ है। वह जब भीतर गया था तो चिड़चिड़ा लग रहा था, जबकि अब वह मुस्कराता हुआ बाहर आया है।

"उन आदमियों को बुलाओ, हम वृद्धाश्रम में बात करने जायेंगे", ओरी ने उसे कहा।

*****

11. गँगटोक से असम की ओर, 3 मार्च 2026

भोजनालय में आभा और बच्चे चुपचाप त्रिनेत्र को देख रहे थे। टेलीफोन पर अपने गुरु जी के समाधी लेने की बात सुन कर जब वह रोया था तो वह वहीं थे।

उस रात को जब उसके घर में आभा जागी थी तो त्री ने उसे कहा था, "चलो तुम्हें छात्रावास छोड़ कर आता हूँ।"

"क्यों? अगर मैं तुम्हारे कमरे में रुकी तो तुम्हारा नाम बदनाम हो जायेगा?", आभा ने पूछा था।

"नहीं, यहाँ कोई नहीं है जो मेरा या तुम्हारा नाम बदनाम करे", त्री मुस्कराया था, "लेकिन कुछ घंटे बाद हमें एक लम्बी यात्रा पर जाना है। तुम अपने कमरे में जाओगी तो मैं अपनी चटाई पर ठीक से सो सकूँगा।"

"तुम बच्चों को ले कर कहाँ जा रहे हो?"

त्री एक पल उसे चुपचाप देखता रहा, बोला, "हम ऐसे ही घूमने जा रहे हैं।"

"घूमने जा रहे हो, तो कल रात को हथियारों की बात क्यों हो रही थी?"

त्री ने उसे उत्तर नहीं दिया तो वह बोली, "मैं बच्ची नहीं हूँ, मैंने अपने पति और बेटी को खोया है। अगर कोई कठिन परिस्थिति आई है, जिसके बारे में तुम बच्चों से बात कर सकते हो तो मुझे क्यों नहीं बता सकते?"

फिर भी जब त्री ने कुछ नहीं कहा तो वह बोली, "कल पहले तुम्हारे अखाड़े में मुझे वह अजीब सा अनुभव हुआ। फिर, तुम लोग किसी गुप्त-शक्ति की बात रहे थे, कि मेरी शक्ति कीड़े-मकोड़ों और जीव-जंतुओं से जुड़ी है। उसके बाद, जब मैं यहाँ भीतर सो रही थी तो मुझे बाहर से तुम्हारी बातें स्पष्ट सुनाई दे रहीं थीं, ऐसा लग रहा था जैसे कि मेरे दिमाग का एक हिस्सा सोया हो और दूसरा, जागा हुआ सतर्क हो।"

त्री ने लम्बी साँस ली, बोला, "जो गुप्त-शक्ति मुझमें और बच्चों में हैं, वह तुममें भी हैं, लेकिन तुम्हारी शक्ति ठीक से विकसित नहीं हुई हैं, तुम उस पर नियंत्रण करना नहीं जानती। तुममें जीव-जन्तुओं से बात करने की शक्ति है और तुम्हारी श्रवण शक्ति भी विकसित लगती है। अगर तुम इन शक्तियों को पूर्ण विकसित करना चाहती हो तो तुम्हें कुछ समय यहाँ हमारे पास रहना पड़ेगा। अगर तुम अपने भाई के पास या गाँव में लौट जाओगी, तो हो सकता है कि तुम्हारी यह शक्ति जो यहाँ जागृत हुई है, वह फिर से सो जाये।"

"कल रात को तृप्ति ने अपनी मनोशक्ति से एक लोटे को उठाया था और गार्गी ने मुझे अंतरमन के भीतर से छुआ था?"

त्री ने सिर हिला कर हामी भरी, बोला, "हाँ, उनकी यही शक्तियाँ हैं। कुछ दिनों में जब हम लौटेंगे, तुम भी यहाँ वापस आ सकती हो, हम तुम्हारी शक्तियों को विकसित करने में तुम्हारी मदद करेंगे।"

"शक्ति विकसित करने से क्या फायदा है?"

"यह लाभ-नुकसान की बात नहीं है, शक्ति का होना एक ज़िम्मेदारी है। इनसे हम गरीब, निर्बल, असहाय और शोषित जनों की मदद करते हैं। तुम कह सकती हो कि हम शक्ति-यौद्धा हैं और यह हमारा धर्म है।"

"कल रात को वसंत किसी तिरंगा यौद्धा की बात कर रहा था?"

त्री मुस्कराया, बोला, "जब वसंत यहाँ आया था, तब उसने हमारे नामों के पहले अक्षर, त, र और ग को मिला कर तिरंगा बना दिया था। तब से बच्चे हम सब को तिरंगा-यौद्धा भी कहते हैं।"

"तो मुझे भी बताओ कि कल सुबह तुम तिरंगा यौद्धा किसकी मदद के लिए युद्ध पर जाओगे?"

"मेरे गुरु जी मुश्किल में हैं। मैं असम में गुवाहाटी के पास पैदा हुआ था और बचपन में अनाथ हो गया था। गुरु जी ने मुझे शरण दी, मुझे पाला-पोसा, मेरी शक्ति को पहचाना और उसे विकसित किया। उनके कहने पर ही मैंने यह अनाथाश्रम खोला है। कुछ लोग बहुत सालों से उनका पीछा कर रहे हैं। कल सुबह गुरु जी ने मुझे बताया कि उन लोगों ने उन्हें खोज लिया है, इससे उनकी जान को खतरा है, और हम उनकी रक्षा करने जा रहे हैं।"

आभा चुप हो गयी थी और वह उसे लड़कियों के छात्रावास के पास छोड़ कर लौट आया था।

आज सुबह जब वह बच्चों के साथ नाश्ता कर रहा था और जगदीश बाबू ने उसे गुरु जी की समाधी लेने का समाचार दिया, उस समय आभा वहाँ थी।

जब वे गाड़ी में बैठे तो आभा उसके साथ आगे वाली सीट पर बैठी। उनकी कार अनाथाश्रम से बाहर निकली ही थी कि वह बोली, "मैं भी तुम्हारे साथ चलना चाहती हूँ।"

त्री ने कहा, "नहीं, तुम हमारे साथ नहीं आ सकतीं।"

"क्यों?"

"क्योंकि इसमें खतरा है।"

"अगर छह साल की तृप्ति तुम्हारे साथ जा सकती है तो मैं क्यों नहीं?"

"क्योंकि जिसे तुम छह साल की बच्ची कहती हो, वह चाहे तो अपनी शक्ति से चाकू-तलवार चला कर अपनी रक्षा कर सकती है और हमारे युद्ध में योगदान दे सकती है।"

आभा कुछ सोच कर बोली, "दो साल पहले तस्करों ने बम से मेरे पति की कार उड़ा कर, उनकी और मेरी बेटी की जान ली थी। तब मैंने कई महीनों तक आत्महत्या करने की सोची थी। लेकिन अब मैं जीना चाहती हूँ और उन लोगों से बदला लेना चाहती हूँ। मैं भी तुम्हारी तरह यौद्धा बनना चाहती हूँ, डर कर घर में छिप कर जीना नहीं चाहती। मेरी शक्ति तुम लोगों की तरह विकसित नहीं है, मुझे लड़ाई करनी भी ठीक से नहीं आती, लेकिन मैं सीधी-साधी सामान्य औरत दिखती हूँ और तुमने देखा कि मेरी श्रवण शक्ति बहुत अच्छी है, मैं सोते हुए भी दूर से बातें सुन सकती हूँ। अगर मैं तुम्हारे साथ रहूँगी तो हम लोग एक परिवार जैसा लगेंगे और गुँडों को धोखा देना अधिक आसान होगा।"

पीछे बैठे बच्चे उनकी बातों को ध्यान से सुन रहे थे लेकिन उनमें से कोई कुछ नहीं बोला।

"और वहाँ तुम कुछ हो गया तो?" त्री बोला।

"अधिक से अधिक वह मुझे मार देंगे और क्या? मैं मरने से नहीं डरती।"

"और अगर मरो नहीं, पर सारे जीवन के लिए अपाहिज हो जाओ तो?"

"क्यों, क्या अपाहिज लोग इन्सान नहीं होते? अगर बुरे लोगों के साथ युद्ध में मैं घायल होती हूँ या मर जाती हूँ तो मुझे इसका रत्ती भर भी रंज नहीं होगा।"

यह बातें करते हुए, वह लोग रानी खोला पुल पर पहुँच गये थे। वहाँ से कुर्स्यांग जाने वाली सड़क अधिक दूर नहीं थी, इसलिए त्री को वहाँ पहुँचने से पहले ही यह निर्णय लेना था, वह बोला, "विशाल से बात करते हैं।"

आभा गुस्सा हो गयी, बोली, "इसमें भैया से पूछने की क्या ज़रूरत है? मैं क्या उन पर निर्भर करती हूँ? मैं उनके यहाँ कुछ दिन के लिए आयी थी, लेकिन मेरा अपना घर है, मैं अपना जीवन जीने के लिए स्वतंत्र हूँ। वैसे भी वह मेरे बड़े भाई हैं, तुम उनसे पूछोगे कि इसे युद्ध में ले जायें या नहीं, तो वह क्या कहेंगे? वह तो मना ही करेंगे।"

पीछे से गार्गी बोली, "आभा दीदी ठीक कहती हैं, उन्हें साथ ले जाने, या न ले जाने का निर्णय तो आप को ही लेना पड़ेगा। इनके भाई से पूछने की कोई आवश्यकता नहीं है, यह कोई बच्ची नहीं हैं।"

आखिर में त्री बोला, "ठीक है, तुम हमारे साथ चलना चाहती हो तो चलो।"

*****

12. मजूली द्वीप, असम, 3 मार्च 2026

आश्रम के दफ्तर का द्वार खुला था लेकिन भीतर कोई नहीं था, सब लोग बाहर मैदान में थे।

जगदीश बाबू वहाँ पास में खड़े थे, उन्होंने ताकानोरी और उसके आदमियों को दफ्तर में जाते देखा तो वह उनके पीछे-पीछे आये, बोले, "अगर आप को जामुन बाबा की समाधी देखनी है तो बाहर कतार में खड़ा होना पड़ेगा, यहाँ वृद्धाश्रम में आप को कुछ नहीं मिलेगा।"

ओरी ने अंग्रेज़ी में पूछा, "यह बाबा आश्रम में कहाँ रहते थे? हम उनका कमरा देखना चाहते हैं।"

जगदीश बाबू के माथे पर बल पड़ गये, बोले, "बाहर के लोगों को वहाँ जाने की अनुमति नहीं है।"

बटेर ने आगे बढ़ कर जगदीश बाबू के कँधे पर ज़ोर से हाथ मारा, बोला, "बुढ़ऊ, जिन्दा रहना है या नहीं? साहिब जो पूछें उसका सीधा जवाब दो, वरना ऐसा झापड़ दूँगा कि तुम्हारी नकली बतीसी मुँह से निकल कर तुम्हारे हाथ में आ जायेगी।"

शोर सुन कर बाहर से दो अन्य वृद्ध वहाँ आये, एक पुरुष और एक स्त्री। उन्होंने बटेर को जगदीश बाबू को मारते देखा तो दरवाज़े से चिल्लाये, "कौन हो तुम? क्या कर रहे हो? जगदीश बाबू को हाथ मत लगाओ।"

ओरी ने बटेर को इशारा किया तो वह पीछे हट गया, उसने दोबारा पूछा, "उनका कमरा कौन सा है?"

जगदीश बाबू के उसे घूर कर देखा, कुछ उत्तर नहीं दिया। ताकानोरी के इशारे पर बटेर ने जगदीश बाबू को चटाक से एक थप्पड़ मारा, वह लड़खड़ा कर वहीं गिर पड़े और उनकी नाक से खून बहने लगा, उनकी ऐनक दूसरी ओर गिरी, पर सौभाग्यवश टूटी नहीं।

ताकानोरी के इशारे पर लक्की और मटरू दरवाज़े पर खड़े लोगों के पास गये, बोले, "बाहर से आश्रम के सभी लोगों को यहाँ बुलाओ, हमें तुम सबसे बात करनी है।"

बटेर ने जगदीश बाबू की गर्दन से उनका कुर्ता पकड़ कर उठाया और एक कुर्सी पास खींच कर उन्हें बैठा दिया, बोला, "बुढ़ऊ, अगर आज तुम्हें अपने जामुन बाबा से मिलने स्वर्ग लोक जाने की जल्दी नहीं हो, तो साहब जो पूछें उसका सीधा और तुरंत जवाब चाहिये। ज़्यादा चालाकी दिखाओगे तो साहिब मुँडी काट कर हाथ में थमा देंगे।"

जगदीश बाबू फिर भी कुछ नहीं बोले और उसे घूरते रहे। ताकानोरी ने लम्बी साँस ली और वह भी एक कुर्सी पर बैठ गया।

केवल सोमचाई नहीं बैठा, उसने आगे बढ़ कर ज़मीन से जगदीश बाबू की ऐनक उठा कर उन्हें दी, फिर वहीं पीछे जा कर खड़ा हो गया। वह कम्प्यूटर का काम करता है, उसने कभी मारा-मारी नहीं की है और जगदीश बाबू की नाक से बहता खून देख कर उसका जी घबराने लगा था। उन्हें एक बूढ़े आदमी को इस तरह से मारते देख कर भी उसे धक्का लगा था।

धीरे-धीरे आश्रम के सभी वृद्ध उस कक्ष में आ कर इक्ट्ठे हो गये। बटेर ने पूछा, "यहाँ कितने लोग रहते हैं?"

एक वृद्धा बोली, "सतरह औरतें और सात आदमी, हम कुल चौबीस लोग और हमारे संचालक, जगदीश बाबू, पच्चीस।"

बटेर ने कमरे में एकत्रित लोगों को गिना, बोला, "फिर यहाँ पर सत्ताईस लोग कैसे हैं?"

एक बूढ़ा आदमी बोला, "मुझसे मिलने मेरी बेटी और नाती बाहर से आये हैं", उसने एक युवती और एक किशोर की ओर इशारा किया।

उनका नाती चौदह-पंद्रह साल का लगता था। बटेर ने इशारा करके उसे आगे बुलाया और उसके कँधे पर हाथ रख लिया, बोला, "हमारे पास टाईम कम है, इसलिए साहिब जो पूछेंगे, उसका ठीक से जवाब दो। अगर सही जवाब नहीं मिलेगा तो मैं इस लड़के को मार डालूँगा, समझे?"

कक्ष में सन्नाटा छा गया। उस लड़के के नाना बोले, "मेरे बच्चे को जाने दो। यह लोग यहाँ नहीं रहते, इन्हें कुछ नहीं मालूम, मारना है तो मुझे मारो।"

बटेर ने कुछ उत्तर नहीं दिया, बस अपना हाथ कँधे से उठा कर उस लड़के को सिर के बालों से पकड़ लिया और दूसरे हाथ में खुला हुआ रामपुरिया चाकू निकाल कर, उसे उसके गले के साथ सटा दिया।

ओरी मुस्कराया और बोला, "यह बाबा कहाँ रहते थे? उनका कमरा किधर है?"

इस बार जगदीश बाबू ने काँपती आवाज़ में उत्तर दिया, बोले, "आश्रम के गेट के बाहर, बायीं ओर पेड़ों के बीच में उनका घर है।"

ओरी के इशारे पर लक्की और मटरू, बाबा का घर खोजने गये।

ताकानोरी बोला, "समाधी के पास जो मन्दिर है, वहाँ पर तारा माँ की सफेद और हरी, दो रंगों की मूर्तियाँ लगीं हैं। मैं वैसी ही एक विशेष हरी मूर्ति खोज रहा हूँ। क्या बाबा के पास ऐसी कोई विशेष मूर्ति थी?"

"माँ तारा की मूर्तियाँ?", एक वृद्धा बोली, "वे तो यहाँ आश्रम में हर जगह मिलेंगीं। उनमें विशेष कौन सी है, यह तो भगवान जानें। बाबा ने जब समाधी ली, तब भी उनके हाथ में एक कटोरा था जिसमें हरे रंग की माँ तारा की मूर्ति थी।"

जगदीश बाबू बोले, "जामुन बाबा को माँ तारा की मूर्तियों से बहुत प्रेम था, यहाँ पर वैसी बहुत सी मूर्तियाँ मिलेंगीं। लेकिन उनमें कोई विशेष मूर्ति हमें नहीं मालूम।"

ओरी ने आँखें बन्द कर लीं और अपनी अन्वेषण-किरण से धीरे-धीरे सारे वृद्धाश्रम का निरीक्षण किया लेकिन उसे वहाँ शक्ति लहर का स्पंदन महसूस नहीं हुआ। इसका मतलब है कि बाबा ने वह मूर्ति वृद्धाश्रम के भीतर नहीं है, शायद उसे बाहर कहीं छिपाया गया है या वह धरती के नीचे गहरी दबी हुई है, जहाँ उसकी अन्वेषण-किरण नहीं पहुँच रही। शायद बाबा ने उस मूर्ति के साथ समाधी ली है और अगर ऐसा है तो उन्हें उनकी समाधी को खोदना पड़ेगा?

उसने पूछा, "बाबा ने समाधी लेने से पहले क्या किसी के लिए कुछ निर्देश छोड़े?"

"कैसे निर्देश?" जगदीश बाबू को उसका प्रश्न समझ नहीं आया।

"किसी के लिए कोई कागज़, चिट्ठी या संदेश?"

जब जगदीश बाबू ने उत्तर नहीं दिया तो ओरी के इशारे पर बटेर ने फिर से चाकू निकाल कर लड़के के गले से सटा दिया, बोला, "बुढ़ऊ, सोच लो, जवाब नहीं दोगे तो इसकी गर्दन काट दूँगा, फिर मत रोना।"

जगदीश बाबू को झुरझुरी सी आयी, घबरा कर बोले, "एक चिट्ठी दी है, त्रिनेत्र के नाम है।"

"त्रिनेत्र कौन है?"

"उनका शिष्य और उत्तराधिकारी, वह यहाँ नहीं रहता।"

"चिट्ठी दिखाओ।"

जगदीश बाबू लड़खड़ाते हुए अपनी कुर्सी से उठे, बोले, "मेरे दफ्तर में रखी है, मैं ले कर आता हूँ।"

ताकानोरी ने सोमचाई को उनके साथ जाने का इशारा किया। जगदीश बाबू ने दालान पार किया और पीछे अपने दफ्तर के कमरे में गये। तब तक उनकी नाक से खून बहना बंद हो गया था पर उसके दाग उनके कुर्ते पर जमे हुए थे।

सोमचाई बोला, "ताकानोरी एक जापानी याकूज़ा है। यह लोग बहुत क्रूर होते हैं। इसलिए उसकी बात मानने में ही आप सब की भलाई है, अगर वह गुस्सा हो गया, तो अपनी कताना-तलवार से सबके सिर काट देगा।"

जगदीश बाबू ने उसकी बात का उत्तर नहीं दिया, अपनी मेज़ पर रखी जामुन बाबा की चिट्ठी को उठा कर सोमचाई को दिया और दोनों लौट आये। कमरे में घुसे तो देखा कि लक्की और मटरू भी बाबा के घर से कुछ सामान ले कर आ गये हैं।

उस सामान को मेज़ पर रखते हुए लक्की बोला, "वह छोटा सा घर है, बस दो कमरे है। वहाँ हमें केवल यही सामान मिला।"

सामान में कुछ संस्कृत की किताबें थीं, एक रुद्राक्ष की माला, एक तुलसी की माला और एक बौद्ध भिक्षुक की मूर्ति थी। मूर्ति पर सालों से अगरबत्तियों के धूँए की कालिख के निशान जम गये थे।

ओरी ने तुरंत हाथ जोड़ कर उस मूर्ति को प्रणाम किया, बोला, “यह बाबा के गुरु साबुनिम कीवू की मूर्ति है।" फिर लक्की से बोला, “जाओ इस सामान को जहाँ से उठाया है, वहीं पर ठीक से रख कर आओ, और मूर्ति को ध्यान से ले कर जाना, टूटनी नहीं चाहिये।"

फिर उसने सोमचाई को चिट्ठी देने का इशारा किया। जगदीश बाबू निढ़ाल हो कर कुर्सी पर बैठ गये, उनके चेहरे का रंग फीका पड़ गया था, मानो अपने दफ्तर तक जाने में उन्होंने बहुत मेहनत की हो।

ओरी ने उनसे पूछा, “बाबा का शिष्य कौन है? वह कहाँ रहता है और यहाँ कब आयेगा?”

“जामुन बाबा के निर्देश अनुसार, मैंने उसे आज सुबह फोन किया था। उसने कहा था कि वह जल्दी आयेगा, कल शाम तक यहाँ पहुँच जायेगा। लेकिन वह कहाँ रहता है, मुझे नहीं मालूम। वह यहाँ आता रहता है, उसकी उम्र तीस साल के आसपास की होगी।"

“उसका मोबाइल नम्बर सोमचाई को दीजिये।" नम्बर ले कर सोमचाई ने अपना लैपटॉप कम्प्यूटर खोला और उसके बारे में जानकारी खोजने लगा।

ताकानोरी ने बाबा की चिट्ठी को खोला, उसमें केवल एक कागज़ था जिस पर हिंदी में कुछ लिखा था। उसने बटेर से उसे पढ़ने के लिए कहा।

कागज़ हाथ में ले कर बटेर मुस्कराया, बोला, “यह तो कोई कविता लगती है।"

“पढ़ो।"

> “चन्द्र-वधु के चरण-कमल, तीन दशानन कोसे,
> पद्मा की कमल-अँजुरी से बहता जल।
> विष्णु के शंख नाद से प्रज्जवलित अंबर के सप्त ऋषि,
> कंदरा में गूँजती चौदह ध्वनियाँ पिनाक की।
> लौटी सति पर्वतराज पिता के घर, बोली
> त्रिनेत्र कहाँ हैं, उन्हें निमंत्रण क्यों नहीं भेजा?
> वहाँ जहाँ पर लाल बकरियाँ घास चरें।"

बटेर ने कविता पढ़ तो ली लेकिन उसका अनुवाद करके उसे ताकानोरी को समझाना आसान नहीं था। वह बोला, “इसमें लक्ष्मी, विष्णु और शिव जी की बातें हैं, शायद यह कोई प्रार्थना है।"

ओरी ने उससे वह कागज़ लिया और जगदीश बाबू से कहा, “आप की अंग्रेज़ी अच्छी है, आप इसका अनुवाद करके मुझे दीजिये।" उन्होंने चुपचाप उससे वह कागज़ ले लिया।

इतने में सोमचाई ने ताकानोरी को बुलाया और अपने लैपटॉप पर दिखाते हुए बोला, “इस मोबाइल नम्बर का सिम-कार्ड पहली बार 1998 में बनारस में खरीदा गया था। उसके बाद उसे 2014 में दिल्ली में बदला गया, पर नम्बर नहीं बदला। यह प्रीपेड लगता है और इसका नम्बर किसी दूसरे सिम-कार्ड से जुड़ा हुआ है, इसके बारे में पता करना आसान नहीं है, मुझे कुछ दिन लगेंगे।"

ताकानोरी सोचते हुए बोला, “बाबा के शिष्य आज चलेगा और कल शाम को पहुँचेगा, इसका मतलब है कि वह कहीं दूर रहता है। हो सकता है कि वह प्रतिमा उसके पास हो? खैर हम जल्दबाज़ी में कुछ नहीं करेंगे। आज रात को जब लोगों की भीड़ नहीं होगी, उस समय हम वह समाधी खोद कर बाबा के शव और उनकी मूर्ति की जाँच करेंगे। जब वह शिष्य यहाँ आयेगा, तो उससे इस कविता का अर्थ भी पूछेंगे।"

जगदीश बाबू, जामुन बाबा की कविता का अनुवाद करने में लगे थे, लेकिन उनके कान ताकानोरी और सोमचाई की बातें सुन रहे थे, ताकि मौका मिलते ही त्रिनेत्र को खबर कर सकें। जब उन्होंने सुना कि वह लोग गुरु जी की समाधी को खोद कर उनके शरीर को बाहर निकालने का प्रोग्राम बना रहे हैं तो उन्हें बहुत गुस्सा आया। लेकिन उन्होंने सोचा कि जामुन बाबा सामान्य व्यक्ति नहीं थे, वह अपनी समाधी की रक्षा स्वयं करेंगे।

बटेर, लक्की और मटरू को भी किसी संत पुरुष की समाधी खोदने की बात अच्छी नहीं लगी। वह गुँडे अवश्य हैं, लेकिन संतों के प्रकोप से डरते हैं। पर वह यह भी जानते हैं कि जापानी साहिब को यह काम करने से रोकना कठिन होगा।

*****

13. असम यात्रा, 3 मार्च 2026

गार्गी ने आभा से पूछा, "दीदी, मणिपुर कैसी जगह है? आप इम्फाल में रहतीहैं?"

"बहुत सुंदर है हमारा मणिपुर", आभा बोली, "लेकिन मैं इम्फाल में नहीं रहती। इम्फाल हमारी राजधानी है, बड़ा शहर है। उसके दक्षिण में एक झील है, लोकटक झील, वह बहुत सुंदर जगह है। मैं उस झील के पास एक गाँव में रहती हूँ, थमनापोकपी गाँव, वहाँ मेरे पति का पुराना घर है।"

तृप्ति बोली, "और आप के घर में कौन-कौन हैं?"

आभा की आँखें अचानक नम हो गयीं, धीरे से बोली, "बस मैं हूँ, मेरे ससुर हैं और हमारा कुत्ता है, डब्लयू। वैसे उसका नाम विलसन है लेकिन मेरे पति उसे डब्लयू बुलाते थे।"

त्री ने बात बदलने के लिए पूछा, "मणिपुर के अपने जीवन के बारे में कुछ और बताओ, हम वहाँ के बारे में कुछ नहीं जानते।"

वह बोली, "हमारा परिवार मैतेई है। हमारे मैतेई लोगों में सात वंश हैं, हमारी भाषा में उन्हें सालाई कहते हैं, जैसे कि खुमान, मैरंग, अंगोम, वगैरा। मैं मैरंग सालाई में पैदा हुई थी और मेरे पति का परिवार खुमान सालाई की ओइनम जाति का है। खुमान को ऊँची सालाई मानते हैं। हम लोगों के प्राचीन पाराम्परिक विश्वास को सनमही कहते हैं क्योंकि हम सनमही देवता को बहुत मानते हैं, जोकि हमारे सृष्टि देवता सिदाबा मापू के बेटे हैं। चार-पाँच सौ साल पहले मणिपुर में वैष्णव धर्म आया और फ़ैल गया। इस तरह से हमारे परिवार में हम वैष्णव और सनमही दोनों को मानते हैं।"

त्री बोला, "मेरे गुरु जी कहते हैं कि हमारे देशों में धर्म ऐसे ही बनते-बदलते हैं, कि नयी सोचें आती हैं और पुरानी सोच में घुल-मिल जाती है, फिर समय के साथ दोनों के देवी-देवता भी घुल-मिल जाते हैं। उनके कोरिया देश में पहले सिन्दो धर्म था, जिसमें मानते हैं कि प्रकृति, पहाड़, नदी, आकाश, सब में आत्मा होती है। फिर जब वहाँ पर बौद्ध धर्म आया तो सिन्दो और बौद्ध, वह दोनों विचार घुल-मिल गये। वैसे तो मेरे गुरु जी बौद्ध भिक्षुक हैं पर भारत आने के बाद, वह शिव-भक्त भी बन गये।"

आभा बोली, "जब मैं चित्र बनाती हूँ, तो उसमें वैष्णव और सनमही देवी-देवता मिला कर बनाती हूँ।"

गार्गी ने पूछा, "सनमही देवता कैसे होते हैं?"

आभा मुस्करायी, बोली, "यह तो देवी-देवता पर निर्भर करता है। जैसे कि पखांगबा को भूरे रंग के सींग वाले हिरण के रूप में दिखाते हैं। एक बार सिदाबा मापू ने अपने बेटों, सनमही और पखांगबा को ब्रह्माँड का चक्कर लगाने के लिए कहा तो सनमही सचमुच पूरी दुनिया का चक्कर लगाने चला गया, जबकि पखांगबा ने पिता के सिंहासन का चक्कर लगाया और बोला कि यही मेरा ब्रह्माँड है।"

त्री बोला, "बिल्कुल यही कहानी शिव जी और उनके दोनों पुत्रों, कार्तिकेय और गणेश की भी है। उसमें कार्तिकेय सारी दुनिया का चक्कर लगाने निकल जाते हैं, जबकि गणेश जी केवल अपने माता-पिता की परिक्रमा करते हैं। गुरु जी भी यही कहते हैं कि जब हमारे धर्म मिलते हैं, तो उनकी कहानियाँ भी आपस में मिल जाती हैं।"

इसी तरह बातें करते हुए उनका रास्ता कट रहा था और वे लोग अलीपुर द्वार से हो कर भाटीबाड़ी पहुँच गये। वहाँ त्री ने एक ढाबे पर कार रोकी, बोला, "असम सीमा यहाँ से करीब तीस किलोमीटर आगे है, हम यहाँ पर थोड़ी देर ही रुकेंगे। अगर हो सके तो मैं आज रात तक जोरहाट पहुँचना चाहता हूँ।"

वहाँ से खाना खा कर वह लोग चलने ही वाले थे कि जगदीश बाबू का फोन आया, बोले, "त्री बेटा, तुम कहाँ पहुँचे हो? आज सुबह जामुन बाबा को खोजते हुए यहाँ कुछ बुरे आदमी आये हैं। उनका सरदार ताकानोरी नाम का एक जापानी है। उन्होंने हमारे साथ मार-पिटाई की और आज रात को वह बाबा की समाधी खोदने का प्लैन बना रहे हैं। जो चिट्ठी बाबा ने तुम्हारे लिए छोड़ी थी, वह उन्होंने ले ली है। वह जानते हैं कि तुम आ रहे हो और वे तुम्हारे आने की प्रतीक्षा में हैं।"

त्री बोला, “काका, आप हमारी चिंता नहीं करें और वह जो चाहते हैं उन्हें करने दीजिये, आप बीच में नहीं पड़िये, समझे? आप सावधान रहिये, और जब तक कोई एमरजैंसी न हो मुझे दोबारा टेलीफोन न करें।"

जब उनकी बात खत्म हुई तो रंगनाथ ने पूछा, “दादा, उन लोगों से लड़ने के लिए हमारा क्या प्लैन है?”

“ताकानोरी के पास गुप्त-शक्तियाँ हैं। एक तो अन्वेषण-किरण है जिससे वह आसपास लोगों की शक्ति-लहरों को खोज सकता है। उसकी और कौन सी शक्तियाँ हैं, हमें नहीं मालूम। सबसे पहले हमें यह समझने की कोशिश करनी है कि उसकी शक्तियाँ कौन सी हैं, लेकिन हमें होशियार रहना पड़ेगा क्योंकि वह अन्वेषण-किरण से हमें पहचान सकता है।"

“अन्वेषण-किरण कैसे काम करती है?” वसंत ने पूछा।

“हमारी कुछ शक्तियाँ हर समय जागृत रहती हैं, जैसे माधव की दृष्टि-शक्ति और रंगनाथ की श्रवण-शक्ति। लेकिन कुछ शक्तियों को ध्यान लगा कर जगाना पड़ता है, वह हमेशा काम नहीं करतीं, जैसे मेरी गिरगिट-शक्ति और गार्गी का अजगर-पाश। अन्वेषण-किरण भी हमेशा काम नहीं करती, उसे जगाना पड़ता है।"

गार्गी बोली, “जैसे मैं लोगों के दिमाग में घुस कर देख सकती हूँ कि वह क्या सोच रहे हैं, क्या अन्वेषण-किरण भी वैसी ही होती है?”

"मेरे विचार में तुम्हारी और उसकी शक्ति भिन्न हैं। तुम लोगों के विचार पढ़ सकती हो, जबकि अन्वेषण-किरण से शक्ति वाले लोगों को खोज सकते हैं, लेकिन वह उनके विचार नहीं पढ़ सकते", त्री बोला, “लेकिन मुझे इसका पक्का पता नहीं है, हमें इसकी जाँच करनी होगी।"

गार्गी बोली, “इसका मतलब है कि हमें अपनी शक्ति-लहरों को ढक कर रखना होगा।"

आभा बोली, “मेरी जीवों को आकर्षित करने वाली शक्ति ठीक से विकसित नहीं हुई है, लेकिन मैं सोते-सोते भी दूर से लोगों की बातें सुन सकती हूँ। अगर मैं किसी बहाने से उसके पास जाऊँ तो शायद वह मुझे न पहचाने और मैं उसकी बातें सुन सकती हूँ?”

त्री, रंगनाथ और गार्गी, तीनों एक साथ बोले, “हम आप को खतरे में नहीं डाल सकते। अगर उसने आप को पकड़ लिया तो?”

तृप्ति बोली, “मैं और माधव, आभा दीदी के बच्चे बन कर इनके साथ जा सकते हैं। मेरी शक्तियाँ भी ठीक से विकसित नहीं हुईं लेकिन जरूरत पड़ने पर मैं कुछ देर के लिए अपनी और इनकी शक्ति-लहरों को ढक सकती हूँ।"

गार्गी बोली, “लेकिन माधव की शक्तियाँ विकसित हैं, तुम्हारे लिए उसे छिपाना कठिन होगा।"

तृप्ति बोली, “तो मैं और आभा दीदी, हम दोनों माँ-बेटी बन कर थोड़ी देर के लिए उनके पास जायेंगी और उनकी बातें सुन कर वापस लौट आयेंगीं?”

त्री बोला, “नहीं, ताकानोरी मेरी प्रतीक्षा कर रहा है। उसे पता नहीं है कि हम सब के पास शक्तियाँ हैं। यह हमारा रहस्य ही हमारा गुप्त-शस्त्र है, उसे इसका पता नहीं चलना चाहिये।"

गार्गी बोली, “वहाँ जा कर हम कहाँ रहेंगे? अगर उसके आसपास रहेंगे तो वह हमें खोज नहीं लेगा?”

त्री बोला, “तुम उसकी चिंता नहीं करो, हमारे लिए वहाँ एक छिपने की जगह है। अब तुम सभी थोड़ी देर सोने की कोशिश करो। हम लोग वहाँ पर कल सुबह के तीन-चार बजे से पहले नहीं पहुँचेगे, और वहाँ हमें लड़ने के लिए सतर्क और तैयार रहना है, इसलिए तुम इस समय जितना आराम करोगे उतना बेहतर होगा।"

वसंत बोला, “दादा, उन्होंने टेलीफोन पर कहा था कि गुँडे आज रात को गुरु जी की समाधी को खोदेंगे, हम उसे कैसे रोकेंगे?”

“तुम उसकी चिंता नहीं करो", त्री मुस्कराया, “गुरु जी में बहुत शक्ति है, वह अपनी रक्षा खुद कर सकते हैं।"

*****

14. मजूली द्वीप, असम, 3 मार्च 2026 रात्रि

शाम को जामुन बाबा की समाधी को देखने वाले श्रद्धालुओं की भीड़ कम हो गयी। जब सूरज डूबा और श्रद्धालु चले गये तो वृद्धाश्रम के द्वार बंद हो गये।

ताकानोरी ने पहले से ही बाबा की समाधी को खुदवाने के लिए मजदूर बुलवा लिये थे।

जगदीश बाबू ने एक बार फिर उसे रोकने की कोशिश की, बोले, "आपने देखा कि आज कितने लोग उनकी समाधी पर प्रार्थना करने आये? बाबा को यहाँ के लोग बहुत मानते हैं। कल उन्हें पता चलेगा कि किसी ने उनकी समाधी को तोड़ा है तो वह बहुत गुस्सा होंगे और यहाँ दंगा भी हो सकता है।"

ताकानोरी बोला, "मुझे वार्निन्ग देने के लिए धन्यवाद। उसे खोद कर, भीतर देख कर, हम उसे बंद कर देंगे, और यह सारा काम रातों-रात पूरा हो जायेगा। कल किसी को पता नहीं लगना चाहिये कि हमने समाधी को खोदा है। ध्यान रहे कि अगर यह खबर बाहर फ़ैली तो सबसे पहले मैं तुम्हारी गर्दन काट कर, तुम्हारे सिर को गेट पर टाँग दूँगा।"

उन्होंने आठ मजदूर बुलाये थे। जब बटेर ने उन्हें बताया कि क्या काम करना है तो उन्होंने तुरंत मना कर दिया, बोले कि उन्हें पैसे नहीं चाहिये, वह यह काम नहीं कर सकते।

ओरी वहीं खड़ा था, उसने अपनी कताना तलवार निकाल ली, बोला, "जो यह काम नहीं करेगा, मैं उसे काट कर यहीं गड़वा दूँगा, तब तुम अपने बाबा जी के साथ रह कर, हमेशा के लिए उनकी सेवा करते रहना।"

बटेर, लक्की और मटरू ने पिस्तौलें निकाल लीं और मजदूरों को घेर लिया। डरे हुए मजदूरों ने आखिर में फावड़े उठा लिये। सबसे पहला काम था समाधी वाली जगह से काला पत्थर हटाना। उस पत्थर को मजदूरों ने एक दिन पहले ही वहाँ रखा था, उसे हटाने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिये थी, लेकिन बहुत मेहनत के बाद भी, मजदूर उसे अपनी जगह से नहीं हिला पाये।

बटेर ने मटरू को इशारा किया, कहा, "यह सब लोग बेकार की ड्रामेबाजी कर रहे हैं। तुम वह लोहे का सरिया ले कर उसे इस पत्थर की साईड में घुसा दो, जब उस पर जोर लगायेंगे तो यह पत्थर आराम से ऊपर उठ जायेगा।"

मटरू ने लोहे का नुकीली नोक वाला सरिया लिया और जहाँ पत्थरों में जोड़ था, उस पर हथौड़े मार कर उसे वहाँ घुसाने की कोशिश की। पता नहीं कैसे, पत्थर का एक टुकड़ा टूट कर सीधा बटेर की बायीं आँख में लगा और उसे चीरता हुआ आँख के भीतर घुस गया। बटेर के हाथ से पिस्तौल छूट कर नीचे गिरी और चीख मार कर उसने हाथों से अपनी आँख को ढकने की कोशिश की, कुछ क्षणों में उसका हाथ और चेहरा उसके खून से सन गये।

जब उसकी पिस्तौल नीचे गिरी तो फर्श के पत्थर से टकरा कर उसका ट्रिगर चल गया और गोली निकल कर मटरू के दायें पैर में जा लगी। गालियाँ देते हुए मटरू वहीं पैर पकड़ कर ज़मीन पर बैठ गया, उसके हाथ से लोहे का सरिया छूट कर गिर गया।

ओरी बहुत गुस्सा हुआ, बोला, "तुम लोग आदमी हो या जोकर? एक छोटा सा काम करने में तुम लोगों ने यह क्या तमाशा लगाया है?"

जगदीश बाबू बोले, "समाधी-स्थल पर खुदाई की कोशिश करके तुमने घोर पाप किया है, इसीलिए आज यहाँ पर इतना खून बहा है। अभी भी समय है, मैं कहता हूँ कि तुम लोग रुक जाओ।"

मटरू चिल्लाया, "हमें डॉक्टर की ज़रूरत है, अस्पताल जाना है, एम्बुलैंस को बुलाओ।"

उधर बटेर "हाय, हाय" करके चिल्ला रहा था। जगदीश बाबू ने उसका हाथ हटा कर उसकी आँख को देखा, वह पत्थर उसकी आँख के भीतर घुसा हुआ था। वह बोले, "इसकी यह आँख तो पूरी नष्ट हो गयी है, इसे तुरंत अस्पताल ले जाना होगा। हमारा प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र, कमलाबाड़ी सत्र के पास है, यहाँ से बीस-बाईस किलोमीटर का रास्ता होगा, वहाँ पहुँचने में कम से कम घंटा-डेढ़ घंटा लगेगा। बीच में कुछ रास्ता कच्ची सड़क का है और अँधेरे में वहाँ जाना आसान नहीं होगा।"

बटेर को चक्कर आ रहे थे, वह बेहोश सा हो कर ज़मीन पर लेट गया। उसकी आँख से खून बहना नहीं रुका था और वह खून उसके सिर के आसपास जमा हो रहा था।

मटरू के पैर के आसपास भी फर्श खून से लाल हो गया था, वह ज़मीन पर बैठ कर चिल्ला रहा था। लक्की उनके पास खड़ा था, उसे गुस्सा आ गया, वह ताकानोरी से बोला, "अरे, इनके लिए कुछ करो, तुम इंसान हो या हैवान?"

ओरी को समझ नहीं आया कि उसने क्या कहा, लेकिन उसके बोलने के अन्दाज़ से समझ गया कि वह अपने साथियों के लिए मदद माँग रहा है, बोला, "यह सब तुम लोगों की लापरवाही से हुआ है, अब तुम उसका फ़ल भुगतो।"

जगदीश बाबू बोले, "आप की कार में इन्हें अस्पताल भेज देते हैं, बेचारे बहुत पीड़ा में हैं।"

ओरी बोला, "मेरी कार में नहीं, इन्हें अस्पताल ले जाने के लिए किसी दूसरी गाड़ी का प्रबंध करो।" फिर मजदूरों से बोला, "इन दोनों आदमियों को उठा कर उधर किनारे पर बिठा दो, और तुम उस पत्थर को हटाओ।"

जगदीश बाबू को मालूम था कि फुलानीबाड़ी के स्कूल के करीब एक आदमी आटोरिक्शा चलाता है, उन्होंने उसे बुलाने के लिए अपने एक व्यक्ति को भेजा।

बटेर और मटरू के घायल होने से मजदूर और भी डर गये थे, ओरी के कहने के बाद भी वह अपनी जगह से नहीं हिले, बल्कि अपने फावड़े वहीं रख कर वे वहाँ से जाने लगे।

ओरी गुस्से में आग-बबूला हो गया, उसने पिस्तौल निकाल ली और मजदूरों की ओर निशाना लगाते हुए बोला, "एक कदम भी आगे बढ़ाया तो तुम्हें भून कर रख दूँगा।"

जगदीश बाबू ने पास जा कर उसे धीरे से कहा, "गोलियाँ चलीं तो शोर होगा और आसपास के घरों से लोग यहाँ आ जायेंगे। कितनों को मारेंगे? कल सुबह तक यह बात सारे मजूली द्वीप में फ़ैल जायेगी और लोग डँडे-हँसली-छुरी-चाकू जो मिलेगा, उसे ले कर तुमसे लड़ने आ जायेंगे, तो क्या तुम पाँच सौ लोगों का सामना कर पाओगे? और उसके बाद तुम यहाँ से जीवित निकल पाओगे?"

मजदूर चले गये और ओरी वहाँ पर हाथ मसलता हुआ खड़ा रह गया। थोड़ी देर में फुलानीबाड़ी से आटो वाला आ गया तो लक्की अपने दोनों साथियों को उसमें बिठा कर उन्हें कमलाबाड़ी के प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र में ले गया।

सोमचाई ने यह सारा तमाशा दूर से देखा। जब उसे लगा कि ओरी कुछ शाँत हुआ है तो वह उसके पास आया, बोला, "आप तलवार और बंदूक, सब कुछ चला सकते हैं, लड़ भी सकते हैं, लेकिन मुझे तो सिर्फ कम्प्यूटर का काम आता है। मैंने जीवन में कभी किसी से लड़ाई नहीं की। अब हम यहाँ अकेले रह गये हैं, हमें आगे का भी सोचना होगा। यहाँ के लोगों से बात करने के लिए हमारे पास स्थानीय आदमी होने चाहियें।"

ओरी सोच में पड़ गया, बोला, "ठीक है, मैं फोन करके कुछ और आदमी बुलाता हूँ।" उसे चिंता होने लगी कि जब वह यह बातें रिकू यामागुचि को बतायेगा तो वह बहुत गुस्सा होगा कि क्या वह एक पत्थर भी नहीं हटवा पाया? अंत में उसने सोचा कि वह रिकू को कुछ नहीं बतायेगा। वह बोला, "लेकिन यहाँ से जाने से पहले, मैं इस पत्थर को हटाना चाहता हूँ।"

जब ओरी ने आगे बढ़ कर ज़मीन से लोहे का सरिया उठाया तो उस पर मटरू का खून लगा हुआ था।

जगदीश बाबू बोले, "आप ने देखा कि जिसने भी बाबा की समाधी की मर्यादा भंग करने की कोशिश की, उनका क्या हुआ? फिर भी आप नहीं समझे? आप क्यों अपनी जान को खतरे में डालना चाहते हैं?"

ओरी ने यह दिखाने के लिए कि उसे इन अँधविश्वासों की बिल्कुल परवाह नहीं है, हथोड़ा उठा कर उससे सरिये को पत्थरों के बीच में घुसाने के लिए मारने लगा। शायद उस पर लगे खून की वजह से सरिया चिकना हो गया था और फिसल रहा था, या शायद उसने हथोड़ा ठीक से नहीं मारा। जो भी कारण था, वह सरिया पत्थरों के बीच में जाने के बजाय, फर्श की सतह पर फ़िसल गया और ताकानोरी भी उसके पीछे फिसल कर गिरा। वैसे उसे कहीं विशेष चोट नहीं लगी लेकिन उसे गिरा हुआ देख कर जगदीश बाबू और सोमचाई हँसने लगे।

जगदीश बाबू बोले, "साहिब, अभी भी मान जाईये। जब तक बाबा खुद नहीं चाहेंगे, आप उनकी समाधी में बाधा नहीं डाल सकते।"

ओरी को बहुत गुस्सा आ रहा था, उसका मन किया कि वह जगदीश बाबू और सोमचाई, दोनों के सिर अपनी तलवार से काट दे, लेकिन उसने आत्मसंयम दिखाते हुए अपने गुस्से को दबाया और उठ कर खड़ा हुआ। सोमचाई से बोला, “वह स्कूल के लड़कों वाले वीडियो जो तुमने मुझे दिखाये थे, मैं उन्हें दोबारा देखना चाहता हूँ।"

सोमचाई ने तुरंत मोबाइल निकाल कर एक वीडियो को खोला और उसे दिखाया। ओरी ने उसे तीन-चार बार देखा, फिर एक जगह पर उसे रोक कर सोमचाई को दिखाया, बोला, “वह बाबा जब समाधी के लिए जा रहा था तो उसके कटोरे में एक मूर्ति थी, वह इस वीडियो में दिखती है, तुम बताओ कि वह कितनी बड़ी है?”

सोमचाई ने वीडियो को ध्यान से देखा, उसमें कटोरे में रखी मूर्ति साफ दिख रही थी। वह बोला, “उनके हाथों के आकार से तुलना करें तो वह तीन-साढ़े तीन इँच की लगती है।"

ओरी बोला, “यह वह प्रतिमा नहीं है, जो यामागुचि को चाहिये। जो हमें चाहिये, वह प्रतिमा आठ-साढ़े आठ इँच से बड़ी होनी चाहिये। यानि वह उसे अपने साथ समाधी में ले कर नहीं गया।"

जगदीश बाबू ने उनकी बातें सुनी तो मन ही मन मुस्कराये, लेकिन उन्होंने अपनी खुशी को चेहरे पर ज़ाहिर नहीं होने दिया।

ताकानोरी बोला, “इस समय यहाँ रुकने से मेरा कुछ फायदा नहीं है। बाबा का उत्तराधिकारी कल यहाँ पहुँचेगा। सोमचाई, तुम यहाँ रुको और जब वह आये तो मुझे खबर करों। मैं आज रात को ही नारायणपुर लौट जाता हूँ, वहाँ से अन्य आदमियों का प्रबंध भी करूँगा।"

*****

15. मजूली द्वीप की यात्रा, असम, 3-4 मार्च 2026

रात के दस बजे अचानक त्री के मोबाइल की घंटी बजी।

“काका, क्या हुआ?” उसने पूछा।

जगदीश बाबू ने पूछा, “तुम लोग कहाँ हो और यहाँ कब पहुँच रहे हो?”

“क्यों? हम लोग कोहोरा के पास हैं, आज रात को मरियानी पहुँच कर वहीं आसपास कहीं रुक जायेंगे, बहुत थक गये हैं। हम कल मजूली की फैरी पकड़ेंगे, दोपहर तक आप के यहाँ पहुँच जायेंगे।"

जगदीश बाबू ने उसे ताकानोरी की समाधी को खुदवाने की कोशिशों के बारे में बताया, बोले, “वह अपने कम्प्यूटर वाले लड़के सोमचाई को यहाँ छोड़ कर गया है। यह सोमचाई बुरा आदमी नहीं लगता। ताकानोरी कह रहा था कि वह नारायणपुर वापस जा रहा है लेकिन मेरे विचार में वह झूठ बोल रहा था, मुझे डर है कि वह यहीं कहीं, हमारे आसपास ही छुपा हुआ है और जैसे ही तुम यहाँ पहुँचोगे, वह तुम्हें पकड़ लेगा।"

त्री बोला, “आप चिंता नहीं कीजिये काका, वहाँ आने से पहले मैं आप को खबर कर दूँगा।"

उसके साथ बैठी आभा और पीछे बैठे बच्चे, सभी सो रहे थे लेकिन फोन की आवाज़ से आभा जाग गयी। जब उसने फोन बंद किया तो वह धीरे से बोली, “वह जापानी नारायणपुर क्यों चला गया?”

त्री बोला, “मेरा ख्याल है कि उन्होंने जगदीश काका के मोबाइल में स्पाईवेयर लगाया है, जिससे वह लोग देख सकते हैं कि वह किसे फोन कर रहे हैं और उनकी बातें भी सुन सकते हैं। इसलिए सबसे पहले हमें इस मोबाइल के सिम-कार्ड को बदलना है।" उसने अपनी जेब से एक छोटा लिफाफा निकाल कर आभा की ओर बढ़ाया, बोला, “इसमें मोबाइल खोलने वाला पिन है और एक नया सिम-कार्ड है। उसे बदल दो और पुराने सिम को खिड़की से बाहर फ़ैंक दो।"

आभा ने मोबाइल को लिया और उसका सिम कार्ड बदलने लगी, तो त्री बोला, “मैंने काका से झूठ बोला है। हम लोग मरियानी नहीं रुकेंगे, आज रात को ही मजूली पहुँच जायेंगे। मेरे ख्याल में वह जापानी वहीं आसपास छुपा हुआ होगा और अपनी अन्वेषण-किरण से हमें खोजेगा, लेकिन हम उसके लिए तैयार होंगे।"

वह बोली, “तुम आज सुबह से लगातार गाड़ी चला रहे हो, हम लोग रास्ते में खाने के लिए भी बहुत थोड़ी देर के लिए रुके। हमने तो कुछ आराम किया है लेकिन तुम, क्या तुम्हें आराम भी बिल्कुल आवश्यकता नहीं है?”

त्री मुस्कराया लेकिन कुछ नहीं बोला।

वह लोग रात को साढ़े ग्यारह बजे के करीब गोसाईंगाँव के घाट पर पहुँचे। बच्चों को जगाने में कुछ समय लगा, त्री ने उन्हें पानी की बोतल दी और सबसे आँखो पर पानी के छींटें मारने के लिए कहा। कार को पार्किन्ग में छोड़ कर वह आगे पैदल ही बढ़े।

गुरु जी का पुराना नाववाला मछुआरा फरीद, अपनी नाव के साथ अँधेरे में उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। जैसा उन्होंने पहले से निश्चित किया था, यह बताने के लिए कि वहाँ कोई खतरा नहीं है, वह मिसिन्ग भाषा में एक गीत गा रहा था, “ओकोल कापे दूदोने नो, केराद कमाइ मेमोदाग ...”।

उसके गीत की आवाज़ सुनते हुए, त्री उन्हें वहाँ तक ले आया। फरीद की नाव घाट पर तैयार खड़ी थी, और घाट खाली था। उसने उन्हें नाव में बिठाया और बिना आवाज़ किये, धीरे-धीरे चप्पु चलाते हुए, उसे ब्रह्मपुत्र नदी की धारा के बीच में ले आया।

आभा ने फुसफुसा कर त्री से पूछा, “यह आदमी ऐसे ही अँधेरे में नाव कैसे चलायेगा? कहीं फँस गये तो?”

त्री ने धीरे से उसका हाथ दबाया, कुछ बोला नहीं। गोसाईंगाँव से कमलाबाड़ी का फैरी टर्मिनल करीब दस किलोमीटर दूर था। त्री थका हुआ था, जल्दी ही आँखें बंद करके बैठे-बैठे सो गया। अँधेरे में बच्चे भी दोबारा सो गये। केवल आभा डरी हुई थी, वह जाग रही थी।

वह एक बार पहले भी मजूली आयी थी, जानती थी कि वहाँ नदी के बीच में बहुत सारे द्वीप हैं, जिनके आसपास पानी की गहराई कम हो जाती है और वहाँ पर नाव फँस सकती है। लेकिन वह यह नहीं जानती थी कि नाव वाला फरीद वहीं पैदा हुआ है और बचपन से उसने वहाँ नाव चलाई है, वह रास्ते को अच्छी तरह से जानता है।

उन्हें मजूली पहुँचने में करीब तीन घंटे लगे। उन्हें कमलाबाड़ी उतार कर फरीद वहाँ रुका नहीं, त्री को नमस्कार करके तुरंत चला गया।

त्री ने गार्गी से कहा, "हमारी सबकी शक्ति-लहरों को ढक दो।"

गार्गी ने तुरंत सबकी शक्ति लहर को ढका, फिर बोली, "दादा, हम बहुत लोग हैं, मैं थक जाऊँगी, अधिक देर नहीं कर पाऊँगी।"

त्री बोला, "हमें थोड़ी देर के लिए ही चाहिये, केवल दस मिनट की बात है।"

वह उन्हें घाट से कुछ दूर बामुनगाँव नामघर की ओर ले गया। नामघर के पीछे दो-तीन घर थे, उनमें से एक घर के दरवाज़े पर उसने तीन बार घंटी बजायी तो दरवाज़ा खुला। भीतर साड़ी पहने हुए एक लड़की खड़ी थी, उसने त्री को हाथ जोड़ कर नमस्ते की लेकिन कुछ नहीं बोली और उन्हें सीधा एक कोठरी में ले गयी, जहाँ पर नीचे जाती हुई सीढ़ियाँ थीं। उसने उन्हें नीचे जाने का इशारा किया।

करीब चालिस सीढ़ियाँ थीं, नीचे जाते हुए त्री ने गार्गी से कहा, "अब हमारी शक्ति-लहरों को ढकने की आवश्यकता नहीं है।"

आभा ने पूछा, "ज़मीन की सतह के नीचे से शक्ति-लहर का पता नहीं चलता?" तो गार्गी ने सिर हिला कर हामी भरी।

नीचे तहखाने में बिजली लगी थी। एक ओर गुसलखाना और टॉयलेट बने थे, दूसरी ओर रसोई थी और बीच में दीवार के साथ तीन-टायर वाले रेलगाड़ी के डिब्बे जैसे बिस्तर लगे थे। बाकी सबको आराम करने के लिए कह कर, त्री, वसंत और माधव, वह तीनों कुछ सीढ़ियाँ चढ़ कर आधे रास्ते तक ऊपर आये। उन्हें ऊपर जाते देख कर आभा भी उनके पीछे ऊपर आयी।

वहाँ त्री ने वसंत से कहा, "कोशिश करके देखो कि क्या तुम बाहर के पेड़-पत्तों से बात कर सकते हो?"

वसंत ने एक मिनट आँखें बंद की, फिर सिर हिला कर मना किया, तो वह लोग कुछ अन्य सीढ़ियाँ चढ़ कर थोड़ा और ऊपर आये। वहाँ पहुँच कर वसंत ने फिर से आँखें बंद कीं और त्री से बोला, "दादा, यहाँ से मैं उनसे बात कर सकता हूँ।"

"पूछो कि मजूली में और हमारे आसपास कहीं पर कोई शक्ति-लहर दिख रही है?"

वसंत ने आँखें बंद कर लीं, कुछ देर के बाद आँखें खोल कर बोला, "वह कहते हैं कि दक्षिण में जहाँ पर मजूली द्वीप समाप्त होता है, वहाँ पर नदी के दूसरी ओर छह-सात किलोमीटर दूर जा कर एक शक्ति-लहर दिखती है।"

त्री ने थोड़ी देर तक सोचा, फिर माधव को घुमाया और कहा, "सामने उस दिशा में देखो, यहाँ से करीब तीस किलोमीटर दूर, तुम्हें वहाँ कोई शक्ति-लहर महसूस होती है?"

माधव ने भी कुछ क्षणों के लिए आँखें बंद की फिर बोला, "नहीं दादा, मुझे ऐसा कुछ नहीं दिखा।"

त्री बोला, "इसका मतलब है कि ताकानोरी ने ठीक कहा था, वह सचमुच नारायणपुर में ही है। दूसरी बात है कि उसकी शक्ति-लहर कमज़ोर है, क्योंकि वह माधव को यहाँ से नहीं दिखी। इसका मतलब है कि वह हमें इतनी दूर से नहीं खोज सकता, अवश्य कल हमें यहाँ पर खोजने आयेगा।"

वह चारों नीचे लौट आये और त्री ने उन्हें भी सोने के लिए कहा। आभा चुपचाप, जिस बिस्तर पर तृप्ति सोई थी, उसके साथ जा कर लेट गयी। अपनी बेटी को खोने के बाद यह पहली बार थी कि वह किसी बच्चे के साथ इस तरह से बिस्तर पर लेटी थी। अचानक उसे अपनी बेटी की बहुत याद आयी और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। बहुत देर तक वह चुपचाप रोती रही, फिर उसे भी नींद आ गयी।

सुबह आठ बजे त्री ने सबको जगाया और मुँह-हाथ धो कर नाश्ता करने के लिए कहा। नाश्ते के लिए तहखाने की रसोई में केले, अनानास और पका हुआ कटहल रखे थे। जब सबने अपनी प्लेटों में नाश्ता ले लिया तो त्री बोला, "नाश्ते के

बाद तीन लोग - मैं, रंगनाथ और गार्गी, हम गुरु जी के वृद्धाश्रम की जाँच करने जायेंगे। उनका आश्रम यहाँ से करीब तीस किलोमीटर दूर है। मेरे विचार में उस जापानी की अन्वेषण-किरण केवल तीन-चार किलोमीटर की परिधि में काम करती है, लेकिन फिर भी वहाँ पहुँचते ही गार्गी करीब बीस-पच्चीस मिनट के लिए हमारी शक्ति-लहरों को ढक लेगी। वहाँ जाँच करके हम लोग शाम तक लौट आयेंगे।"

"और हम लोग? क्या हम सारा दिन इस तहखाने में बंद रहेंगे?", आभा ने पूछा।

"तुम लोग यहीं रहोगे, पर मैं तुम्हें एक गुप्त रास्ता दिखाऊँगा, तुम लोग वहाँ से आसपास थोड़ा-बहुत घूम सकते हो, पर दूर नहीं जा सकते।"

आभा बोली, "अच्छा बताओ, रात को वसंत ने उस जापानी व्यक्ति की शक्ति-लहर को कैसे खोजा था?"

त्री ने उसे बताया कि पेड़-पौधे भी गुप्त-शक्ति की लहरों को महसूस कर सकते हैं और आपस में संदेश भेज सकते हैं। इस तरह से वसंत चाहे तो उसे पेड़ों से, बहुत दूर की खबरें भी आसानी से मिल जाती हैं। उसने अपना मोबाइल निकाल कर उस पर गूगल मैप खोला और मजूली द्वीप के दक्षिणी भाग को आभा को दिखाया, बोला, "हमें यहाँ जाना है, गुरु जी का वृद्धाश्रम वहीं है। वह जापानी नदी के दूसरे ओर, उनके आश्रम से करीब छह-सात किलोमीटर दूर है, वहाँ हमारी प्रतीक्षा कर रहा है।"

आभा ने थोड़ी देर सोचा, फिर पूछा, "रात को तुमने माधव से भी आँखें बंद करके शक्ति-लहर को देखने के लिए कहा था?"

"क्योंकि माधव की दो दृष्टि-शक्तियाँ है, वह अपनी आँखों से और मन की आँखों से, दोनों से दस-बारह किलोमीटर की दूरी तक देख सकता है। शक्ति-लहरों से एक विशेष तरह का प्रकाश निकलता है, वह उसे पहचान लेता है। वैसे तो वह जापानी बहुत दूर है, इसलिए मुझे पता था कि माधव को उसकी शक्ति-लहर नहीं दिखेगी, लेकिन मैंने उससे यह इस लिए पूछा था ताकि हमें डबल पक्का हो जाये कि आसपास हमें खोजने वाला कोई नहीं है।"

आभा बोली, "यह शक्ति वाली बातें मेरे लिए नयी हैं, इन्हें समझने में मुझे कुछ समय लगेगा।"

कुछ देर बाद त्री ने उससे पूछा, "जब तुम सोने गयीं थीं, उस समय कुछ हुआ था?"

"क्यों?"

"क्योंकि मैंने देखा कि अचानक ही फर्श पर चिलचट्टे, कानखजूरे, बिच्छू, छिपकलियाँ, आदि जीव-जन्तु निकल आये, और वह सब तुम्हारे बिस्तर के आसपास घूम रहे थे। मुझे लगा कि वह तुम्हारी पहरेदारी कर रहे हैं। थोड़ी देर के बाद शायद तुम सो गयीं और वह सभी अपने बिलों में वापस लौट गये। जब वह दिखते हैं तो मुझे पता चल जाता है कि तुम्हारी शक्ति जागृत है।"

उसकी बात सुन कर आभा कुछ देर तक सोचती रही, फिर रुँधे स्वर में बोली, "बेटी खोने के बाद आज पहली बार एक छोटी बच्ची के साथ इस तरह से लेटी थी, इसलिए उसकी याद आ गयी तो मुझे रोना आ गया।"

त्री सोचता हुआ बोला, "इसका मतलब है कि जब तुम्हारे मन में भावनायें तीव्र होती हैं, तब तुम्हारी शक्ति आपने आप जागृत हो जाती है।"

*****

16. मजूली द्वीप, असम, 4 मार्च 2026, सुबह

त्री, रंगनाथ और गार्गी वृद्धाश्रम की ओर जाने के लिए तैयार हो गये।

त्री ने आभा से कहा, “हम सीढ़ियों से ऊपर नहीं जायेंगे बल्कि एक गुप्त सुरंग से बाहर निकलेंगे। तुम भी हमारे साथ चल कर सुरंग का रास्ता देख लो और जब यहाँ तहखाने में बैठे-बैठे बोर हो जाओ तो बच्चों को कुछ देर तक बाहर घुमा सकती हो। वसंत तुम्हारी शक्ति-लहरों को ढक कर तुम्हें उस जापानी की अन्वेषण-किरण से छुपा लेगा, लेकिन यह काम वह पेड़ों की सहायता से करता है, अगर तुम लोग खुले में जाओगे तो वहाँ वह तुम्हें नहीं छुपा सकता, इसलिए तुम बच्चों को खुली जगह में नहीं जाने देना।"

नाश्ते के बाद माधव और तृप्ति सोने के लिए वापस बिस्तर पर लौट गये, लेकिन वसंत वहीं बैठा उनकी बातें सुन रहा था, बोला, “मैं भी आप के साथ चलता हूँ, आभा दीदी के साथ लौट आऊँगा।"

आभा बोली, “क्या माधव और तृप्ति को यहाँ अकेले छोड़ना ठीक होगा?”

“इस घर में उन्हें कोई खतरा नहीं है। ज़रीना, वह लड़की जो ऊपर रहती है और हमें रात को मिली थी, वह हमारी साथी है। फरीद, वह नाव वाला जो हमें रात को मजूली ले कर आया था, ज़रीना उसकी बेटी है। वह सुन-बोल नहीं सकती, लेकिन इशारों की वर्णमाला जानती है और लिख-पढ़ सकती है। गुरु जी ने उसे गूँगे-बहरों के स्कूल में पढ़ने भिजवाया था, इसलिए वह लोग गुरु जी को बहुत मानते हैं। जब हमें अपने छुपने के लिए कमलाबाड़ी घाट के पास जगह चाहिये थी, तब गुरु जी ने यह घर बनवाया था और बाहर जाने के लिए सुरंग भी बनवायी। तुम्हें कुछ भी ज़रूरत हो तो ज़रीना को कहो", त्री ने सारी बात बतायी।

रंगनाथ ने पूछा, “दादा, यह इशारों की वर्णमाला क्या होती है?”

“जैसे अक्षरों की वर्णमाला होती है, वैसे ही हम हर अक्षर के लिए उंगलियों से भिन्न मुद्रा बना सकते हैं, वह मुद्राओं की वर्णमाला होती है। जैसे कि तुम्हारे नाम को अगर मुद्राओं की भाषा में कहना हो तो 'र' कहने के लिए तर्जनी और मध्यमा उंगलियों से क्रोस बनाओ और बाकी दोनों उंगलियों पर अंगूठा रख दो। 'न' कहने के लिए सभी उंगलियों के सिरों को अंगूठे के सिरे से मिलाओ। फिर 'ग' कहने के लिए 'न' वाली मुद्रा में मध्यमा को ऊपर उठाओ", यह कहते हुए उसने अपने हाथों से मुद्राएँ बदल कर अक्षर बना कर दिखाये, बोला, “इस तरह से यह 'रंग' शब्द बन गया।"

रंगनाथ बोला, “यह भाषा तो बहुत कठिन लगती है।"

त्री मुस्कराया, “जब कोई चीज़ नहीं करनी आती तो वह कठिन लगती है। अगर तुम हर रोज़ मुद्रा की भाषा की एक-दो नयी मुद्राएँ सीख लो और हर रोज़ उनका अभ्यास करो तो एक महीने में इशारों में फटाफट बोलने लगोगे।"

गार्गी बोली, “जब हम घर लौटेंगे तो मैं यह इशारों की भाषा भी सीखूँगी ताकि ज़रूरत पड़े तो मैं आप को इशारों से गुप्त संदेश दे सकती हूँ।" रंगनाथ बोला, “केवल तुम्हारे सीखने से कुछ नहीं होगा, उसे समझने वाला भी चाहिये, नहीं तो क्या अपने आप से बातें करोगी?"

गार्गी ने पूछा, “दादा, कल रात जब हम यहाँ आये तो आप ने घंटी बजायी थी? ज़रीना दीदी ने उसे कैसे सुना?”

त्री मुस्कराया, “ऊपर जब घंटी बजाओ तो घंटी बजती है और साथ में एक बल्ब जलता-बुझता है, ज़रीना उसे देख सकती है।"

रंगनाथ ने पूछा, “ज़रीना दीदी टेलीफोन पर कही बातें भी समझ सकती हैं?”

“हाँ, उसके मोबाइल में एक एप्प है, तुम उसे कुछ कहोगे तो वह एप्प उसे मुद्रा की भाषा में वही बात वीडियो में दिखायेगी", कह कर त्री खड़ा हो गया, "चलो, अब हमें चलना चाहिये"।

वह तहखाने की रसोई में गया और एक अलमारी के पास जा कर, उसने एक जगह दबाया तो वह अलमारी दरवाज़े की तरह खुल गयी। उसके पीछे एक गुप्त रास्ता छिपा था। जैसे ही वह भीतर घुसा, वहाँ एक बत्ती जल गयी। उसके पीछे रंगनाथ और गार्गी गये और उनके पीछे आभा और वसंत।

त्री ने आभा को दिखाया कि सुरंग खोलने के लिए अलमारी को कैसे खोलते-बंद करते हैं। वह बोला, “इस सुरंग में सैन्सर लगे हैं, तुम जिधर जाओ, वहाँ की बत्ती अपने आप जल जाती है और पीछे वाली कुछ देर बाद अपने आप बुझ जाती है।"

सुरंग का रास्ता पार करने में उन्हें करीब आधा घंटा लगा और जब वह दरवाज़ा खोल कर बाहर निकले तो देखा कि उस सुरंग का दरवाज़ा एक मोटे तने वाले पीपल के पेड़ का हिस्सा था। जब वह बंद होता था और उसे ध्यान से नहीं देखो, तो दिखाई नहीं देता था।

वसंत बोला, “देखो, यह तो बहुत बड़ा पीपल का पेड़ है, इसके भीतर पूरा कमरा है।"

त्री बोला, “यहाँ के लोग इस पेड़ को पवित्र मानते हैं, इसे संत माधवदेव का पेड़ भी कहते हैं क्योंकि इसके नीचे एक बार संत माधव देव रहे थे। उनका गाँव हरिसिंगबरा, यहाँ से अधिक दूर नहीं है।"

वसंत ने पूछा, “यह पेड़ कितना पुराना होगा, दो सौ साल?”

“संत माधव देव करीब पाँच सौ साल पहले पैदा हुए थे, और कहते हैं कि उनके समय में भी इस पेड़ को बहुत प्राचीन मानते थे। इसलिए हो सकता है कि यह पेड़ एक हज़ार साल या उससे भी पुराना हो। यहाँ सब लोग इसे जानते हैं। अगर तुम आसपास कहीं खो जाओ तो लोगों से पूछो कि संत माधव देव का पीपल का पेड़ कहाँ है, वह तुम्हें यहाँ का रास्ता दिखा देंगे”, त्री ने समझाया, फिर बोला, “आभा और वसंत, तुम लोग अब वापस जाओ।"

आभा बोली, “बाद में जब माधव और तृप्ति जागेंगे, उन्हें साथ ले कर हम लोग यहाँ लौटेंगे।" वह दोनों पीपल के पेड़ की ओर लौट गये।

त्री, रंगनाथ और गार्गी आगे चले। उन्होंने गाँव के गरीब लोगों जैसे कपड़े पहने थे, जैसे कि एक पिता अपने बच्चों के साथ कहीं जा रहा हो। करीब एक घंटा चल कर वे श्री भोला मन्दिर पहुँचे और वहाँ से मोटरबोट ली जो उन्हें फुलानीबाड़ी के घाट तक ले गयी। त्री उस क्षेत्र में पहले कई बार आ चुका था, इसलिए उसने अपना चेहरा गमछे से ढक लिया था। घाट पर पहुँचने से पहले ही गार्गी ने तीनों की शक्ति-लहरों को ढक लिया।

फुलानीबाड़ी के घाट से जो रास्ता गाँव की ओर जाता है, वहाँ आगे जा कर पेड़ों के पीछे एक छोटा सा मैदान है, जिसके एक किनारे पर झाड़ियाँ के पीछे एक चबूतरा बना था। वह जगह सड़क से छिपी हुई थी। उस चबूतरे के पीछे जा कर त्री ने उसकी एक ईंट हटा कर दबाया तो उसमें एक छोटा सा गुप्त द्वार खुल गया, जिसमें वह तीनों झुक कर घुस गये।

वहाँ पर एक अन्य सुरंग थी जो नीचे जा रही थी, उसमें घुसने के बाद त्री ने गार्गी से कहा कि वहाँ शक्ति ढकने की आवश्यकता नहीं है।

रंगनाथ बोला, “दादा, हर जगह सुरंगें बनी हैं, इसका मतलब है कि गुरु जी बहुत सालों से इस खतरे का सामना करने के लिए तैयारी कर रहे थे?”

त्री ने धीरे से सिर हिला कर हामी भरी। वह जानता है कि बच्चे समझदार हैं, वह उनसे पूरी बात नहीं छुपा सकता। लेकिन अगर उनमें से कोई उस जापानी याकूज़ा के चँगुल में आ गया तो वह इनके दिमाग में घुस कर सब बातों को जान जायेगा, इसलिए वह उन्हें सब बातें नहीं बताना चाहता।

गार्गी बोली, “वह जापानी आदमी गुरु जी का पीछा क्यों कर रहा है? वह उनसे क्या चाहता है?”

“गुरु जी कोरिया से हैं। वह भी अनाथ थे और उन्हें भी एक बौद्ध भिक्षुक ने पाला था, जो बाद में उनके गुरु बने। उनके गुरु जी का नाम कूवी महाराज था और उनके पास हरिताश्म पत्थर की बनी माँ तारा की एक मूर्ति थी, जिसके प्रभाव से बच्चों की गुप्त-शक्तियाँ विकसित हो जाती हैं। कुछ जापानी लोग उस मूर्ति को पाना चाहते हैं", त्री ने बताया।

“यह हरिताश्म पत्थर क्या होता है?”

“हरिताश्म को अंग्रेज़ी में जेड कहते हैं, यह हरे रंग के संगमरमर जैसा होता है, लेकिन मुलायम होता है। उसकी मालाएँ और गहने भी बनाते हैं।"

“क्या यह पत्थर भारत में मिलता है? हमारे अखाड़े में भी तो हरे रंग की माँ तारा की कई मूर्तियाँ हैं?”

“यह पत्थर भारत में नहीं मिलता", त्री ने बताया, “हमारे उत्तर-पूर्व में एक देश है म्यंमार, उसे पहले बर्मा कहते थे, वहाँ पर हरिताश्म की खानें हैं। लेकिन सुना है कि हमारे मिज़ोराम में, म्यंमार की सीमा के पास भी, शायद यह पत्थर मिलते हैं।"

“इसका मतलब है कि जापानी लोग गुरु जी का चालीस-पैंतालिस सालों से पीछा कर रहे हैं?” रंगनाथ ने पूछा।

गार्गी बोली, “इतने सालों में तकनीकी ने इतनी तरक्की कर ली है, आज तो बहुत से अपराध इंटरनेट के माध्यम से होते हैं। इतने सालों के बाद भी वह लोग इस पुरानी बात के पीछे क्यों पड़े हैं?”

त्री मुस्कराया, बोला, “गुरु जी कहते हैं कि इस बात को यामागुचि नहीं भूल सकता, यह उसके आत्म-सम्मान की बात बन गयी है। तीन बार गुरु जी उसके चँगुल में आये और तीनों बार वह उसे चकमा दे कर भाग गये। आखिरी बार उसने गुरु जी को थाईलैंड में 1996 में खोजा था। उस बात को भी अब तीस साल हो गये। वह पहले वाले यामागुचि तो अब बहुत बूढ़े हो गये हैं, लेकिन उनका पोता है, रिकू यामागुचि, वह अब उनका गैंग चलाता है। शायद वह अपने दादा का अधूरा काम पूरा करना चाहता है।"

“पहले वह लोग गुरु जी को खोज लेते थे, तो वह उन्हें चकमा दे कर वहाँ से भाग कर नयी जगह में छिप जाते थे। लेकिन इस बार वह नहीं भागे, बल्कि उन्होंने समाधी ले ली, क्यों?”, गार्गी का दिमाग बहुत तेज़ है, वह हर अनकही बात को पकड़ लेती है।

“क्यों कि अब गुरु जी बूढ़े हो रहे हैं, वह डरते हैं कि कहीं उनकी मृत्यु के बाद, यामागुचि के जासूस हमारे पीछे न लग जायें, और हमारे अनाथाश्रम पर हमला कर दें, क्योंकि मैं उनके उत्तराधिकारी हूँ।"

“क्या इसका मतलब है कि अब वह मूर्ति हमारे पास है? वह हमारे अनाथाश्रम में है?” गार्गी ने पूछा।

त्री फिर से मुस्कराया, सोचा कि गार्गी से कुछ छुपाना बहुत कठिन है, बोला, “जो मूर्ति गुरु जी कोरिया से लाये थे, कुछ साल पहले वह टूट गयी थी। उन्होंने उस मूर्ति के टुकड़ों को कुछ नयी मूर्तियों में जड़वा दिया है। उसमें से एक नयी मूर्ति हमारे पास, हमारे अनाथाश्रम में भी है।"

यह बातें करते-करते वह तीनों सुरंग को पार करके, वृद्धाश्रम से कुछ दूर, गुरु जी के ज़मीन के नीचे छिपे हुए तहखाने वाले कमरों में पहुँच गये।

*****

17. मजूली द्वीप, असम, 4 मार्च 2026, दोपहर

गुरु जी का तहखाने वाला घर काफ़ी बड़ा था। उसमें चार कमरे थे। त्री ने इशारा करके कहा, "वह गुरु जी का कमरा है, उसमें नहीं जाओ, बाकी घर में तुम जहाँ चाहो वहाँ जा सकते हो।

जब वह वहाँ पहुँचे तो दोपहर हो चुकी थी और तीनों को भूख लगी थी। गार्गी बोली, "यहाँ रसोई में गैस का चूल्हा रखा है, क्या हम कुछ खाना पका सकते हैं?"

त्री ने मना किया, बोला, "खाना बनायेंगे तो चिमनी की पाईप से धूँआ और गँध ऊपर जा सकते हैं, उससे लोगों को शक हो जायेगा, इस समय यह खतरा लेना ठीक नहीं। उधर अलमारी में देखो, वहाँ कुछ फ़ल, गाजर, मूली आदि रखे होंगे, उन्हें खाना बेहतर होगा।"

फ़ल-सब्जियाँ खा कर त्री ने गार्गी और रंगनाथ से कहा, "तुम दोनों ऊपर जा कर पता लगाओ कि वृद्धाश्रम में क्या हो रहा है?" वह उसे सीढ़ियों की ओर ले कर गया।

रंगनाथ ने ऊपर देखा तो बोला, "यह सीढ़ियाँ तो कुछ अजीब सी लगती हैं।" वह सीढ़ियाँ कमरे की छत तक जा कर रुक जाती थीं।

त्री बोला, "क्योंकि वहाँ एक छिपा हुआ दरवाज़ा है।" उसने सीढ़ियाँ चढ़ कर दीवार पर लगा एक बटन दबाया तो ऊपर से छत का एक हिस्सा खुल गया। उसने सिर को बाहर निकाल कर आसपास देखा। जब कोई नहीं दिखा तो उन्हें ऊपर आने का इशारा किया।

वह सीढ़ियाँ झाड़-झँखाड़ के बीच में एक खण्डहर के पीछे निकलीं, वहाँ आसपास घना जँगल था। त्री ने उन्हें इशारे से बताया, "उधर जाओ, वहाँ एक बाग है, उससे हो कर गुरु जी के घर के पिछले दरवाज़े तक पहुँच जाओगे, जो खुला होगा। उनके घर की खिड़कियों से वृद्धाश्रम का गेट दिखता है, तुम बस वहाँ से देख कर आओ।"

वह दोनों उस दिशा में बढ़े, धीरे-धीरे देखभाल कर कदम रख रहे थे ताकि बिल्कुल शोर नहीं हो, हालाँकि रंगनाथ ने अपनी श्रवण शक्ति से जाँच लिया था कि वहाँ कोई नहीं है। पेड़ों के बीच से हो कर वह गुरु जी के घर के पिछवाड़े वाले बाग में घुसे, देखा कि उसका पीछे वाला दरवाज़ा खुला हुआ है। गार्गी ने वहीं से कुछ क्षणों तक आँखें बंद करके, मन की दृष्टि से घर के भीतर खोजा और जब किसी व्यक्ति का भास नहीं हुआ तो वह दोनों दबे पाँव भीतर गये।

घर में देखा कि वहाँ किसी ने कुछ खोजने की कोशिश की है। सारे संदूक, दराज़ और अलमारियाँ खुले थे और चद्दर-कपड़े बाहर बिखरे हुए थे। वह खिड़की की ओर गये और छिप कर बाहर देखा। रंगनाथ ने आश्रम के भीतर से आते-जाते लोगों की बातों को सुना।

गेट के सामने एक कच्ची सड़क थी जो वृद्धाश्रम की ओर जा रही थी और जिस पर लोगों की कतार लगी थी, वह लोग एक-एक करके, धीरे-धीरे वृद्धाश्रम के भीतर जा रहे थे, और साथ से लोग बाहर निकल रहे थे। बाहर कोई पहरेदार या गार्ड नहीं था।

दोनों दबे पाँव, जैसे गये थे, वैसे ही वापस खण्डहर तक लौट कर आये। फिर नीचे तहखाने में आ कर त्री को सारी बात बतायी।

गार्गी बोली, "मैंने पूरे क्षेत्र को जाँचा लेकिन आश्रम में किसी की शक्ति-लहर महसूस नहीं हुई। इसका मतलब है कि ताकानोरी इस समय यहाँ नहीं है।"

"नदी की दूसरी ओर, नारायणपुर की तरफ भी शक्ति-लहर को खोजा? शायद वह वहाँ हो?" त्री ने पूछा।

"हाँ मैंने उस ओर भी देखा, वहाँ भी ऐसा कुछ महसूस नहीं हुआ।"

रंगनाथ बोला, "मैंने आश्रम से निकलने वाले लोगों के बातें सुनीं, लेकिन कोई विशेष बात नहीं पता चली, केवल गुरु जी की बातें कर रहे थे, और कह रहे थे कि आश्रम वालों को समाधी देखने वालों के लिए पानी पिलाने की व्यवस्था करनी चाहिये।"

त्री बोला, “ठीक है, हम भी ऊपर जा कर समाधी देखने वालों की कतार में खड़े हो जायेंगे। यहाँ सब लोग गुरु जी को जामुन बाबा कहते हैं, अगर कोई पूछेगा तो हम भी यही कहेंगे कि उनकी समाधी को देखने आये हैं। लेकिन जहाँ तक हो सके, तुम दोनों कुछ नहीं बोलना, मुझे बात करने देना। आश्रम के गेट से घुसते ही, दायीं ओर की बिल्डिंग में उनके संचालक जगदीश बाबू का दफ्तर है, मुझे उनसे मिल कर बात करनी है। लेकिन वहाँ ताकानोरी का कम्प्यूटर वाला आदमी सोमचाई भी हो सकता है, हमें उससे बचना है। रंगनाथ, तुम उस ओर ध्यान लगा कर सुनने की कोशिश करना, अगर तुम्हें जगदीश बाबू या सोमचाई का नाम सुनाई दे तो मुझे बताना।"

वह तीनों तहखाने से निकल आये, फिर जँगल से निकल कर वृद्धाश्रम की ओर गये और वहाँ खड़ी कतार में लग गये।

कतार में खड़े लोग आपस में बातें कर रहे थे। जब किसी ने त्री से पूछा तो उसने कहा कि वे अलीपुर द्वार के एक चाय-बागान से आये हैं और केवल बँगाली बोलते-समझते हैं, असमियाँ नहीं जानते। बाबा का नाम बँगाल तक फ़ैल गया है, और लोग उनकी समाधी देखने इतनी दूर से आ रहे हैं, यह सुन कर लोगों को अचरज हुआ। कतार धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी और उनके पीछे नये लोग आ कर जुड़ते जाते थे।

जब तक उनकी गेट से भीतर घुसने की बारी आयी, तब तक शाम होने वाली थी और कतार छोटी सी रह गयी थी। जब वह लोग वृद्धाश्रम की बिल्डिंग के पास से गुज़रे तो रंगनाथ ने अपनी श्रवण शक्ति लगा कर आसपास हो रही बातों को सुनने की कोशिश की। थोड़ी देर में ही उसने सोमचाई की आवाज़ को पकड़ लिया, और उसकी बातों को ध्यान से सुना। कुछ देर तक सुनने के बाद उसने त्री को कहा, “दादा, सोमचाई टेलीफोन पर ताकानोरी से बात कर रहा था, बोला कि बटेर को जोरहाट ले कर गये हैं, वहाँ उसकी आँख का ओपरेशन हुआ है और मटरू भी अस्पताल में भर्ती है।"

त्री ने पूछा, “ताकानोरी ने जवाब में कुछ कहा कि वह कहाँ पर है?”

“नहीं", रंगनाथ ने सिर हिला कर मना किया।

“ठीक है, तुम जगदीश बाबू का पता लगाने की कोशिश करो कि वह कहाँ हैं।"

तब तक वे समाधी-स्थल पर पहुँच गये। चूँकि अब भीड कम हो गयी थी इसलिए लोगों को वहाँ रुकने का अधिक समय मिल रहा था। लोग समाधी स्थल की परिक्रमा कर रहे थे और कुछ लोग वहाँ हाथ जोड कर प्रार्थना भी कर रहे थे।

समाधी के पास पहुँचे तो त्री ने धीरे से गार्गी से कहा, “ज़रा कोशिश करके देखो कि क्या समाधी में गुरु जी की शक्ति-लहर महसूस होती है?”

वह तीनों वहाँ आँखें बंद करके, हाथ जोड़ कर खड़े थे। रंगनाथ ने सुना कि एक बूढ़ा दूसरे से कह रहा है, “यह भीड़ सम्भालने का काम बहुत थकाने वाला है, पता नहीं यह सब कितने दिन चलेगा। मैं कल जगदीश बाबू से कहूँगा कि मेरी तबियत ठीक नहीं है।"

वहाँ से चलने लगे तो गार्गी बोली, “समाधी से बहुत हलका सा शक्ति का भास होता है, शायद उनकी शक्ति कमज़ोर हो रही है, या वह बहुत गहराई में हैं।"

त्री का चेहरा गम्भीर हो गया, बोला, “उनकी शक्ति इतनी आसानी से क्षीण नहीं होगी, वह अवश्य ही गहराई में हैं।"

रंगनाथ ने पूछा, “दादा, ज़मीन के नीचे दबने के बाद गुरु जी साँस कैसे लेंगे?”

त्री ने उसके प्रश्न का उत्तर नहीं दिया, पूछा, “जगदीश बाबू का पता नहीं चला?”

रंगनाथ ने फिर से अपनी श्रवण-शक्ति का ध्यान लगा कर उसे आसपास घुमाया और बोला, “आश्रम में कई लोग उनकी बात कर रहे हैं लेकिन अभी तक किसी को उन्हें उनके नाम से बुलाते हुए नहीं सुना। मैं उनकी आवाज़ नहीं पहचानता, उनका पता कैसे लगाऊँगा?”

वे वापस वृद्धालय के गेट की ओर जा रहे थे जब अचानक त्री रुक गया, बोला, “वह सामने हैं जगदीश बाबू, वह इधर ही आ रहे हैं। उनके साथ दो अन्य लोग हैं, हमें उनसे अकेले में बात करने का कोई बहाना चाहिये।"

*****

18. मजूली द्वीप, असम, 4 मार्च 2026, शाम

गार्गी जगदीश बाबू को बुलाने गयी, बोली, “बाबू जी, हमारे बापू की तबियत ठीक नहीं है …”, और त्री की ओर इशारा किया।

जगदीश बाबू ने रास्ते के किनारे पर सिर झुका कर बैठे हुए त्री को देखा, लेकिन पहचान नहीं पाये। वह उसके पास आये, पूछा, “क्या हुआ भाई?”

त्री ने सिर ऊपर नहीं उठाया पर उनके साथ खड़ी गार्गी ने उन्हें धीरे से कहा, “जगदीश बाबू हमें आप से अकेले में ज़रूरी बात करनी है, हमें अपने दफ्तर में ले चलिये।"

उन्हें उसकी बात समझने में थोड़ी देर लगी पर शायद वह त्री को पहचान गये, आवाज़ ऊँची करके बोले, “हाँ, मैं तुम्हें दवाई देता हूँ, तुम लोग मेरे साथ चलो, तुम्हारे बापू की तबियत ठीक नहीं है।"

त्री और गार्गी जगदीश बाबू के साथ चले, त्री सिर झुका कर और लँगड़ा कर चल रहा था। रंगनाथ उनके पीछे कुछ दूर पर था और देख रहा था कि कोई उनका पीछा तो नहीं कर रहा। जब उसे विश्वास हो गया कि किसी ने उनकी बातचीत पर ध्यान नहीं दिया है, तो वह भी उनके पीछे जगदीश बाबू के दफ्तर की ओर आया। वहाँ उसने बाहर बैठे हुए सोमचाई को देखा, तो उसके पास जा कर बैठ गया और जेब से रंग-बिरंगे कँचे निकाल कर उन्हें हाथों में उछालने लगा।

वह कँचों को उछालने के खेल में माहिर है, जब वह उनसे खेलता है तो ऐसा लगता है मानो वह कँचे धीरे-धीरे हवा में तैर रहे हैं और नीचे नहीं गिरते। जब उसने एक साथ हवा में चार कँचे घुमाये तो सोमचाई का ध्यान उसके खेल पर लग गया। तब उसने कँचे सोमचाई की ओर बढ़ाये और उसे उन्हें उछालने के लिए कहा। सोमचाई को समझ नहीं आया कि वह क्या कह रहा है, तो उसने मुस्करा कर, हाथ से उन्हें उछालने का इशारा किया। सोमचाई ने उसे सिर हिला कर मना किया, लेकिन इतनी देर में जगदीश बाबू, त्री और गार्गी को आश्रम के भीतर के किसी कमरे में ले जा चुके थे।

भीतर जा कर जगदीश बाबू रोने लगे, त्री से बोले, “त्रिनेत्र बेटा, तुम्हें क्या बताऊँ। बाबा ने समाधी ले ली, हमें अनाथ कर दिया। लेकिन हमारे लिए यही दुख कम नहीं था, एक और आफत सिर पर आ पड़ी है। कल ताकानोरी और उसके गुँडे यहाँ आ धमके, उन्होंने हमारे एक बच्चे की गर्दन काटने की धमकी दी और बाबा ने तुम्हारे लिए जो चिट्ठी छोड़ी थी, उसे ले लिया। कल रात को उन्होंने बाबा की समाधी को तोड़ने की कोशिश की। इसमें उनके एक आदमी की आँख फूट गयी और दूसरे के पैर में गोली लगी है। वह कहता है कि वह किसी मूर्ति को खोज रहा है और जब तक उसे वह नहीं मिलेगी, वह हमें छोड़ेगा नहीं। अब हम क्या करें, हमें इन पापियों से कैसे मुक्ति मिलेगी??"

त्री ने उन्हें ढाढ़स बँधाया, “काका आप चिंता नहीं कीजिये, हमारे गुरु जी इतने कमज़ोर नहीं हैं कि एक गुँडे से हार जायेंगे। आप धीरज रखिये, सब ठीक हो जायेगा। गुरु जी ने जो चिट्ठी मेरे लिए छोड़ी थी, आप को मालूम है कि उसमें क्या लिखा है?”

“उसमें एक कविता जैसी लिखी है, जिसका अर्थ उन्हें समझ नहीं आ रहा है। तब उन्होंने मुझे उसका अंग्रेज़ी अनुवाद करने के लिए कहा। मैंने अनुवाद तो कर दिया है, लेकिन मुझे भी समझ नहीं आया कि बाबा क्या कहना चाहते थे", उन्होंने उसकी ओर एक कागज़ बढ़ाया, “जब अनुवाद कर रहा था तो मैंने उनकी चिट्ठी की बातों को यहाँ लिख लिया है। शायद यह कोई पहेली है? ताकानोरी कह रहा था कि जब तुम आओगे तो तुमसे इसका अर्थ पूछेगा।"

त्री ने उस कागज़ पर जल्दी से नज़र घुमायी और उसे तह करके जेब में रख लिया, बोला, “मैं समझ गया कि गुरु जी मुझे क्या कहना चाहते हैं। आप इस कविता की बिल्कुल चिंता नहीं कीजिये। जाने से पहले मैं आप से एक बात कहना चाहता हूँ। अगले दिनों में अगर आप मुझे ताकानोरी के साथ देखें तो उस समय मैं चाहे कुछ भी कहूँ या करूँ, आप ऐसा दिखाईये कि मुझे नहीं पहचानते और उनके सामने मुझसे बात करने की कोशिश भी नहीं कीजिये, समझे?”

जगदीश बाबू ने हामी भरी तो वह दोनों उठ कर पीछे के रास्ते से वृद्धाश्रम के गेट की ओर निकल गये। रंगनाथ ने उन्हें जाते देखा तो उसने मुस्करा कर सोमचाई से विदा ली और गेट की ओर आया।

वहाँ से वे सीधा फुलानीबाड़ी घाट की ओर गये, और घाट से श्री भोला मन्दिर के लिए मोटर-बोट ली, और फिर वहाँ से पैदल चल कर सुबह वाले रास्ते से लौटे। तब तक अँधेरा होने लगा था। जब वह सुरंग द्वार वाले पीपल के पेड़ के पास

पहुँचे तो अचानक गार्गी रुक गयी, बोली, “माधव की शक्ति-लहर महसूस हो रही है, वह यहाँ आसपास कहीं छिपा हुआ है।" उसने आवाज़ लगाई, “माधव, हम हैं, बाहर आ जाओ।"

तब माधव झाड़ियों के नीचे से बाहर निकला। उसके कपड़ों और चेहरे पर धूल लगी थी और उस धूल में आँसू बहने के निशान दिख रहे थे।

त्री ने आगे बढ़ कर उसे बाहों में जकड़ लिया, पूछा, “क्या हुआ?”

माधव की आँखें फिर से भर आयीं, बोला, “एक आदमी आया था, मोटा, लम्बा-चौड़ा, पहलवान जैसा, वह आभा दीदी, वसंत और तृप्ति को जबरदस्ती अपनी जीप में बिठा कर ले गया।"

पता चला कि दोपहर को ज़रीना ने उनके लिए खाना बनाया था। खाने के बाद उन्होंने कुछ देर आराम किया था, फिर वे सुरंग से होते हुए जँगल में घूमने आये थे।

त्री ने पूछा, “जब तुम लोग सुरंग से बाहर निकले तो किसी खुली जगह पर तो नहीं गये?”

“पहले तो हम जँगल में ही घूम रहे थे। लेकिन फिर पता नहीं कैसे, तीन सफेद बगुले जैसे पक्षी थे, वह आभा दीदी के एकदम पास आ गये। वह बहुत सुंदर पक्षी थे, उनकी पीली चोंच और सिर पर पीली कलगी थी और उन्हें हमसे बिल्कुल डर नहीं लग रहा था। हम उनके साथ खेलने लगे और उनके पीछे-पीछे चलते गये। उनके साथ हम एक मैदान में पहुँचे, वहाँ और भी बहुत सारे पक्षी जमा हो गये, वह सभी आभा दीदी के आसपास घूम रहे थे। हमें बहुत मज़ा आ रहा था। तब मुझे सू-सू आया था, तो मैं एक झाड़ी के पीछे सू-सू करने चला गया। तभी मैदान में एक जीप आयी, तो मैं छुप गया। जीप से तीन आदमी उतरे और उन्होंने आभा दीदी, वसंत और तृप्ति को पकड़ लिया। फिर वह पहलवान आदमी जीप से उतरा, उसने आभा दीदी से कुछ पूछा और जब दीदी ने उत्तर नहीं दिया तो उसने उन्हें चाँटा मारा। फिर वह लोग उन्हें जीप में बिठा कर कहीं ले गये", माधव ने बताया।

त्री ने लम्बी साँस ली, बोला, “इसीलिए आज हमें वृद्धाश्रम के आसपास ताकानोरी की शक्ति महसूस नहीं हो रही थी, क्योंकि वह मुझे खोजने कमलाबाड़ी घाट की ओर आया था और उसने आभा और बच्चों की शक्ति-लहरों को देख लिया। यह कितनी देर पहले की बात है?”

“करीब आधा घंटा पहले की।"

त्री ने कहा, “शायद वह लोग अभी यहाँ से बहुत दूर नहीं गये, गार्गी, तुम उनकी शक्ति-लहर को खोजने की कोशिश करो।"

गार्गी ने आँखें बंद कीं और कुछ क्षणों के बाद बोली, “वह लोग किसी नाव या फैरी बोट में बैठे हैं, वह नाव नदी पार करके मरियानी की ओर जा रही है।"

त्री ने रंगनाथ को इशारा किया तो उसने भी नदी की दिशा में ध्यान लगाया, बोला, “ताकानोरी सोमचाई से टेलीफोन पर बात कर रहा है, कहता है कि उसे तीन लोग मिले हैं जो त्रिनेत्र के साथी लगते हैं और वह उन्हें घर ले कर जा रहा है।"

“कौन से घर?”

“यह तो उसने नहीं कहा।"

त्री ने कुछ देर तक सोचा, फिर गार्गी से कहा, “ताकानोरी के पास अन्वेषण-शक्ति है, तुम हमारी शक्ति-लहरों को ढक दो ताकि वह हमें नहीं देख पाये।"

गार्गी बोली, “दादा, मुझे बच्ची नहीं समझो, मैंने यहाँ आते ही हम सब की शक्ति-लहरों को ढक दिया था।"

त्री बोला, “अब हमें सोचना है कि हम उन तीनों तक संदेश कैसे पहुँचायें कि वह चिंता नहीं करें, हम उन्हें छुड़वाने का कोई रास्ता खोज निकलेंगे।"

गार्गी बोली, “दादा, मैं वसंत से बात कर सकती हूँ।"

"नहीं गार्गी, मैं नहीं चाहता कि हम ऐसा कुछ करें जिससे ताकानोरी को हमारा पता चल जाये।"

सोच कर रंगनाथ बोला, “दादा, वह सब लोग हमेशा तो एक साथ नहीं रहेंगे और वह उन्हें जहाँ भी ले कर जायेगा, चौबिस घंटे उनके पास नहीं रहेगा। जब वह उन्हें अकेला छोड़ेगा, तब हम उनसे बात कर सकते हैं, तब तक गार्गी उन पर नज़र रखेगी।"

अचानक माधव बोला, “उस केले के पेड़ को देखो, कैसे हिल रहा है, इसका मतलब है कि वसंत हमें कुछ कह रहा है।" सब ने उधर देखा, उस पेड़ के लम्बे हरे पत्ते, हाथी के कानों की तरह आगे-पीछे हिल रहे थे।

त्री बोला, “शायद वह पेड़ों के माध्यम से हमारी बातें सुन रहा है। वसंत अगर तुम मेरी आवाज़ सुन सकते हो, तो केले के साथ वाले पेड़ की पत्तियाँ हिलाओ।"

तुरंत केले के साथ वाले पेड़ की शाखाएँ भी ऊपर-नीचे हिलने लगीं।

त्री मुस्कराया, बोला, “बहुत बढ़िया वसंत। तुम लोग कोई चिंता नहीं करो, समय आने पर हम तुम्हें वहाँ से छुड़ा लेंगे। तुम हमें संदेश भिजवा देना कि तुम कहाँ हो और सब ठीक हो या नहीं। जब तुम लोग अकेले होगे, तब गार्गी भी तुमसे बात करेगी। अगर ताकानोरी तुमसे कुछ पूछे तो उसे मेरे मोबाइल का नम्बर दे देना, कहना कि मैं उससे बात करना चाहता हूँ।"

*****

19. मजूली से नारायणपुर, असम, 4 मार्च 2026

ताकानोरी ने जून-मिन की समाधी लेने की खबर तुरंत रिकू को दी थी और उसने उसे ऐसे डाँटा था मानो इसमें उसकी कोई गलती हो। एक पल के लिए ओरी को बहुत गुस्सा आया था, फिर उसने अपने आप को समझाया कि वह यह काम रिकू के लिए नहीं, बल्कि उसके दादा जी के लिए कर रहा है और जब तक वह कोई काम करेगा, उसका धर्म है उसे पूरे मन और निष्ठा से करना। अगर वह रिकू से बदला लेने के लिए दादा जी से विश्वासघात करेगा तो वह अपने आप को समुराई नहीं मान सकता, सचमुच अधर्मी याकूज़ा बन जायेगा।

उसने अपने गुस्से को दबा कर, त्रिनेत्र के बारे में सोचा था कि वह उसे कैसे खोजे। जून-मिन और उसके शिष्य का मामला उतना साफ नहीं था जितना वह दोनों दिखाने की कोशिश कर रहे थे। जिस तरह से वीडियो में दिखता था कि जून-मिन एक बक्से में बंद हो कर, धरती के गर्भ में दबाया गया था, उसका मतलब था कि वह मर गया होगा। लेकिन वह इतनी आसानी से क्यों मरेगा? इसमें अवश्य कोई धोखा है। तीस वर्षों से लापता व्यक्ति, एक अन्वेषण-किरण को महसूस करके, उसी दिन समाधी ले कर आत्महत्या कर ले, क्यों? यह कोई संयोग नहीं लगता, इसके पीछे अवश्य उनकी कुछ चाल है।

जून-मिन के शिष्य की प्रतीक्षा करने, वह सुबह ही जीप ले कर कमलाबाड़ी आ गया था। उसने अपनी जीप फैरी घाट से कुछ दूर, घरों के पीछे छुपा कर खड़ी की और वहाँ से अन्वेषण-किरण से हर आने वाली फैरी की जाँच करने लगा। आखिर में, दोपहर में उसने शक्ति-लहरें आने वाली फैरी से नहीं बल्कि कमलाबाड़ी के पूर्व में एक मैदान से आती हुई महसूस कीं। उसने तुरंत अपने नये ड्राईवर से उधर जाने के लिए कहा।

दस मिनट में उनकी जीप उस मैदान में पहुँच गई जहाँ से शक्ति-लहरें महसूस हो रहीं थीं। वहाँ जून-मिन के शिष्य की जगह पर एक युवती और दो बच्चे को पक्षियों के बीच में खेलते हुए देख कर उसे अचरज हुआ। उसने अपने गुँडों से उन तीनों को उठा कर कार में लाने के लिए कहा और वे सब तुरंत वहाँ से भाग निकले। उन्होंने फैरी ली और पहले वह लोग मरियानी की ओर गये और वहाँ से वह जीप में नारायणपुर की ओर निकले।

ओरी ने सोचा कि वह तीनों अवश्य ही त्रिनेत्र के साथी हैं, नहीं तो इतने सारे शक्तिवान लोग वहाँ पर क्यों एकत्रित हो गये थे? वह यह सोच कर खुश हो रहा है कि अब त्रिनेत्र उससे नहीं बच पायेगा, उस युवती और उन बच्चों को बचाने वह अपने आप उसके पास आयेगा।

वह सबसे पीछे वाली सीट पर आभा के साथ बैठा था। उनके आगे वाली सीट पर दोनों बच्चे और एक गुँडा बैठे थे। साथ में उनका नया ड्राईवर और एक अन्य गुँडा था। रिकू ने उसके लिए इन नये गुँडों का प्रबंध किया था।

रास्ते में उसने फिर से आभा के दिमाग में खोजा। वह भी तुरंत समझ गयी कि वह उसके दिमाग में घुस रहा है, क्योंकि उसे इस शक्ति का ठीक से प्रयोग करना नहीं आता था। गार्गी जब उसके दिमाग में झाँकती थी तो ऐसा महसूस होता था मानो किसी ने प्यार से सहलाया हो। जबकि ओरी का दिमाग में घुसना हथौड़े मारने जैसा था। आभा ने ओरी को रोकने की कोशिश की, लेकिन नहीं रोक पायी और वह समझ गया कि त्रिनेत्र कहीं बाहर गया है।

उसने वसंत और तृप्ति के दिमाग खंगालने की भी कोशिश की लेकिन वहाँ से उसे कुछ नयी जानकारी नहीं मिली। उस लड़के के दिमाग में उसे हर ओर घने जंगल और पेड़ दिखे, जैसे वहाँ पर हरे रंग का समुद्र हो जिसमें कुछ भी देखना या खोजना असम्भव था। बच्ची की शक्ति ठीक से विकसित नहीं हुई थी लेकिन वहाँ से उसे त्रिनेत्र की कुछ छवियाँ मिलीं। इस जाँच के बाद उसने सोचा कि शायद आभा त्रिनेत्र की पत्नी है और वह दोनों उनके बच्चे हैं।

उनके दिमागों की इस जाँच से वह जल्दी ही थक गया और उसने उनसे अन्य प्रश्न नहीं किये, सोचा कि नारायणपुर में घर पहुँच कर ठीक से पूछताछ करेगा और फिर त्रिनेत्र को पकड़ने का प्लैन बनायेगा। वह तीनों भी कार में चुपचाप बैठे थे, पर आभा उसके गुदे हुए शरीर के रंग-बिरंगे टैटू को कौतूहल से देख रही थी। वह उनके बारे में जानना चाहती थी, अंत में वह अपने आप को नहीं रोक पायी, पूछा, “तुम्हारे सारे शरीर पर यह चित्र क्यों बने हैं?”

ओरी को अपने टैटू वाले त्वचा-चित्रों पर बहुत गर्व है, बोला, “इन्हें जापानी में इरेज़ूमी कहते हैं। यह सामान्य टैटू नहीं हैं जो मशीन से बनाते हैं, मैंने इन्हें पाराम्परिक विधि से गुदवाया है, जिसमें दर्द सहना पड़ता है”, उसने अपनी कमीज़ के

बटन खोल खोल कर अपनी छाती और कँधे दिखाये, वह सारा हिस्सा उन रंगीन टैटू-चित्रों से ढका था। वह मुस्करा कर बोला, "मेरी पीठ, छाती, पेट, जाँघें, मेरे शरीर की हर जगह चित्रित है।"

वह मोर की तरह ऐसे इतरा रहा था कि आभा को हँसी आने लगी, उसे छुपाने के लिए वह खिड़की से बाहर देखने लगी। कुछ देर बाद ओरी ने पूछा, "क्या तुम त्रिनेत्र की पत्नि हो?"

जब उसने उत्तर नहीं दिया तो ओरी ने उसकी कलाई को पकड़ लिया और दबाते हुए बोला, "जब तुमसे कुछ पूछूँ तो मुझे उसका जवाब तुरंत चाहिये, समझी?"

उस समय उनकी जीप एक रैड लाईट पर रुकी हुई थी। उसके दबाने से आभा की कलाई में पीड़ा हुई तो वह बोली, "मेरा हाथ छोड़िये, मुझे दर्द हो रहा है।"

सड़क के किनारे एक साँड घास चर रहा था, शायद उसने आभा के दिमाग की पीड़ा-लहर को महसूस किया तो वह अचानक जैसे नींद से जागा और सिर उठा कर उनकी जीप की ओर भागा आया। ड्राईवर ने अपने साथ वाली खिड़की खुली रखी हुई थी, साँड ने वहीं से उस पर हमला किया और खिड़की से सीर जीप के भीतर घुसा कर मारा। यह सब कुछ इतना अचानक हुआ कि किसी को समझ नहीं आया कि क्या हो रहा है।

ओरी ने तुरंत आभा की ओर देखा, उसने महसूस किया कि आभा की शक्ति-लहरें उत्तेजित हो कर उसके सिर के आसपास मँडरा रही हैं, तो उसने तुरंत उसकी कलाई छोड दी। वह समझ गया कि उस साँड का हमला आभा की वजह से हुआ है, वह चिल्लाया, "रोको उसे, ऐसे मत करो।" लेकिन आभा को कुछ समझ नहीं आया।

सीट के पीछे ओरी की तलवार रखी थी, उसके बिना वह कहीं नहीं जाता था। उसने उसे उठाया, उसमें से तलवार बाहर निकाली, पीछे वाला दरवाज़ा खोल कर जीप से उतरा और सीधा साँड की गर्दन पर वार किया। साँड की गर्दन से खून निकला तो शायद आभा को उस जन्तु का दर्द महसूस हुआ और उसकी शक्ति-लहर शाँत हो गयी। जब उसके और साँड के बीच का तार टूट गया तो वह वहाँ से भाग गया।

ताकानोरी ने अपने ड्राईवर को देखा कि साँड के सींग से उसके माथे पर बड़े घाव बन गये थे और खून से उसके चेहरा, गर्दन और कमीज लाल हो रहे थे। उसने ड्राईवर को अपना रुमाल निकाल कर दिया, कहा कि उसे अपने माथे पर खून रोकने के लिए दबा कर रखे।

उसके गुँडों ने पास के डॉक्टर का पता पूछा और घायल ड्राईवर को वहाँ ले गये। उसके उपचार में समय लगना था, उन्होंने उसे वहीं छोड दिया और ओरी ने दूसरे आदमी से गाड़ी चलाने के लिए कहा। तब तक अँधेरा होने लगा था।

उसने आभा से पूछा, "तुमने उस जानवर से हमारी जीप पर हमला क्यों करवाया?"

"मैंने जानबूझ कर कुछ नहीं किया, तुमने मेरी कलाई को ज़ोर से दबाया था, तो मुझे दर्द हो रहा था, इसलिए वह मुझे बचाने आया।"

अचानक ओरी ने हाथ बढ़ा कर अगली सीट पर बैठे वसंत के सिर के बाल पकड़ कर खींचे, तो वह दर्द से चिल्लाया, लेकिन उसने उसके बालों को नहीं छोड़ा, बोला, "तुम झूठ बोल रही हो। मुझे ठीक से उत्तर नहीं दोगी तो तुम्हारे बेटे का गला काट दूँगा।"

आभा घबरा कर चिल्लाई, "छोड़ो उसे, उसने कुछ नहीं किया। मैंने तुम्हें कहा है कि मैंने जानबूझ कर कुछ नहीं किया।"

उस समय उनके साथ में सड़क पर एक बैलगाड़ी जा रही थी। जब वह चिल्लायी तो अचानक उसका बैल उनकी जीप की ओर घूम कर आगे आने लगा। ताकानोरी ने उसे देखते ही घबरा कर वसंत के बालों को छोड़ दिया और ड्राईवर से बोला, "जीप को तेजी से आगे निकाल लो, नहीं तो वह बैल हम पर हमला करेगा।"

ड्राईवर तुरंत तेज़ चला कर जीप को आगे ले गया। बैल के साथ बैलगाड़ी भी थी, वह उनका पीछा नहीं कर पाया।

ओरी कुछ शाँत हुआ तो उसने आभा के दिमाग के भीतर दोबारा झाँका, तो महसूस किया कि वहाँ पर उथल-पुथल मची है, शक्ति को केन्द्रित करके चलाने के लिए जो एकाग्रता और ध्यान चाहिये, वहाँ वैसा नहीं है। वह बोला, "तुम्हें अपनी शक्ति पर ठीक से काबू करना नहीं आता, क्यों? त्रिनेत्र ने तुम्हें यह शिक्षा नहीं दी?"

आभा बोली, “मैं उसे ठीक से नहीं जानती। वह मेरा गुरु नहीं है, वह एक अनाथाश्रम चलाता है और मैं उसके मित्र की बहन हूँ, विधवा हूँ।"

“उसका अनाथाश्रम कहाँ है?”

आभा को समझ नहीं आया कि क्या कहे। अगर वह उसे गँगटोक कहेगी तो वह वहाँ उनके अनाथाश्रम पर हमला कर सकता है, बोली, “वह मणिपुर में है, यहाँ से करीब आठ सौ किलोमीटर दूर है।"

ओरी ने तुरंत उसके दिमाग में झाँका तो उसे वहाँ अनाथाश्रम की बिल्डिंग दिखी, जिसके आसपास खेत और पहाड़ थे। उसे लगा कि आभा ने उसे जगह का नाम सही नहीं बताया है, लेकिन उसे समझ नहीं आया कि वह उससे वहाँ का सही नाम कैसे जान सकता है? उसने पूछा, “और यह दोनों बच्चे? यह किसके हैं?”

“यह दोनों भी अनाथ हैं", वह बोली।

ताकानोरी सोच में डूब गया। आभा के पास शक्ति है, और उन दोनों बच्चों में भी शक्ति है। शक्ति वाले इतने लोग एक जगह पर, एक साथ इकट्ठे कैसे हो गये? जापान में जब वह बड़ा हो रहा था तब यामागुचि सान के पास वह अकेला शक्ति वाला बच्चा था।

वह जानता है कि जून-मिन की मूर्ति से बच्चों की गुप्त-शक्ति विकसित होती है। शायद वह मूर्ति त्रिनेत्र के पास है, और उसकी मदद से ही उसने इन सब की शक्तियों को विकसित किया है?

*****

20. नारायणपुर, असम, 4 मार्च 2026, रात

नारायणपुर में ताकानोरी का घर, घंटाघर के सामने से बेलागुड़ी सत्र जाने वाली सड़क पर है। दो मंजिला घर में सात कमरे हैं, चार नीचे और तीन ऊपर। ओरी अकेला ऊपर रहता है और सारे गार्ड नीचे।

घर पहुँच कर उसने उन तीनों को नीचे के एक कमरे में बंद करवा दिया। फिर गार्ड से कहा कि वह आभा के लिए बाथरूम में साबुन, शैम्पू, वगैरा रख दे।

जब गार्ड कमरे से गये और वह तीनों वहाँ अकेले हुए, तो खिड़की के पास लगे पेड़ों के माध्यम से, वसंत ने त्री को संदेश भेजा, और उसे बताया कि वह लोग नारायणपुर में ताकानोरी के घर पर ठहरे हैं और सभी ठीक-ठाक हैं।

घर लौट कर ओरी नहाने गया और बहुत देर तक अपने सुडोल और गठी हुई माँसपेशियों वाले शरीर को शीशे में देख कर निहारता रहा। वह अपने आप से बहुत खुश महसूस कर रहा था कि उसने त्रिनेत्र के साथियों को पकड़ लिया है। उसकी पीठ वाले टैटू सचमुच डराने वाले थे, वहाँ पर एक लाल आँखों वाले हँसते हुए कंकाल का चेहरा बना है जिसके मुख से लाल आग निकल रही है और जिसके चारों ओर नारंगी रंग की मछलियाँ बनी हैं। अंत में वह सिल्क का ड्रैसिन्ग गाउन पहन करबाहर निकल कर आया, सोच रहा था कि अब वह मूर्ति उसे अवश्य मिल जायेगी।

नहा कर उसने रसोई में काम करने वाली को हटाया और खुद रात के खाने के लिए रामेन सूप बनाया और फिर, गार्ड से अपने कमरे में दो लोगों के लिए मेज़ पर खाना लगाने के लिए कहा। मेज़ के बीच में लाल रंग की मोमबत्ती जल रही थी। उसे लगा कि कमरे का वातावरण बहुत अच्छा बना है। तब उसने एक गार्ड से आभा को ऊपर लाने के लिए कहा।

जब ताकानोरी के गार्ड ने उसे साहब के साथ खाना खाने जाने के लिए तैयार होने के लिए कहा था, तो आभा समझ गयी थी कि वह क्या सोच रहा है। उसने निश्चय किया कि वह उसके साथ ऐसा व्यवहार करेगी जिससे उसे लगे कि वह उसे अच्छा लगता है, ताकि वह उससे खुल कर बातें करे।

जब गार्ड उसे बुलाने आया तो वह बोली, “बच्चे भी भूखे हैं, पहले इनके लिए खाना लाओ, फिर तुम्हारे साहब से मिलने जाऊँगी।"

गार्ड ने कार में बैल का हमला देखा था, वह मन ही मन में आभा से डर रहा था, सोच रहा था कि वह कोई चुड़ैल या जादुगरनी है। वह भाग कर रसोई से बच्चों के लिए खाना ले आया, तब वह कमरे से निकली। गार्ड ने उसका हाथ पकड़ने की कोशिश की तो उसने उसे झटका कर दूर कर दिया और गर्व से सिर उठा कर सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर गयी। उसने कोई श्रंगार नहीं किया था लेकिन उसके तीखे नाक-नक्श बहुत सुंदर लग रहे थे।

जब उसने ओरी के कमरे में सजी हुई मेज़ देखी तो मुस्करा कर बोली, “मेरी इतनी खातिरदारी क्यों हो रही है, क्या मुझसे जबरदस्ती करने का प्लैन बनाया है?”

उसकी बात सुन कर ओरी गुस्सा हो गया, बोला, “मुझे ऐरा-गेरा समझा है क्या? मैं समुराई खानदान से हूँ, मैंने आज कभी किसी औरत से जबरदस्ती नहीं की, औरतें खुद मेरे पास आती हैं और मेरे आगे-पीछे घूमती हैं।"

आभा मुस्करायी, कुछ कहा नहीं, कमरे में इधर-उधर देखा। एक ओर ताकानोरी का बिस्तर लगा था, उसके पास छोटी सी मेज़ पर एक बूढ़े जापानी की फ्रैम में लगी तस्वीर रखी थी। एक ओर खिड़की के पास एक दूसरी मेज़ पर हाथ में धनुष-बाण लिए हुए, घोड़े पर सवार जापानी पोशाक पहने हुए एक योद्धा की तस्वीर थी, जिसके सामने कुछ फ़ूल रखे थे और एक अगरबत्ती जल रही थी। वह किसी आराध्य-देवता का मन्दिर जैसा लग रहा था।

“वह बूढ़े व्यक्ति कौन हैं? तुम्हारे पिता हैं?”, उसने पूछा।

ओरी तस्वीर की ओर मुड़ कर झुका और उसे नमन किया, बोला, “वह यामागुचि सान हैं, उन्होंने मुझे पाल-पोस कर बड़ा किया है, मैं उनका सेवक हूँ, वह पिता समान मेरे वंदनीय हैं।"

“और वह घुड़सवार यौद्धा?”

ताकानोरी ने उस तस्वीर की ओर भी झुक कर नमन किया, बोला, “वह हाचिमनतारो योशिए हैं, प्राचीन जापान के बहुत बड़े यौद्धा थे। हम उन्हें हाचिमन-शिन का अवतार मानते हैं। हमारे शिंतो धर्म में हाचिमन-शिन साहस और युद्ध के देवता हैं।"

“उस तस्वीर के दाहिनी ओर जापानी भाषा में कुछ लिखा हुआ भी है, उसका क्या अर्थ है?”

ओरी उसके प्रश्नों से बहुत खुश हुआ, उसे लगा कि वह पढ़ी-लिखी सुसंस्कृत युवती है, जो जापानी सभ्यता के बारे में जानना चाहती है। जब से वह भारत आया है, उसके कमरे में आने वाली किसी युवती ने अभी तक उसकी तस्वीरों में दिलचस्पी नहीं दिखाई थी। वह बोला, “एक बार हाचिमनतारो एक पहाड़ से उतर कर नीचे आ रहे थे, उनके रास्ते के दोनों ओर चैरी के पेड़ लगे थे, तब उन्होंने एक कविता कही, ‘अगर मत-आओ द्वार पर हवाएँ नहीं चलीं, तो राह पर चैरी के फ़ूल क्यों बिखरे हैं'। उस तस्वीर पर यही शब्द लिखे हैं।"

“मत-आओ द्वार का क्या मतलब?”

“वह द्वार जहाँ से यौद्धा को नहीं जाना चाहिये। इसका मतलब है कि कवि पूछ रहा है कि अगर मुझे यहाँ नहीं आना चाहिये था तो फिर मेरी राह में यह फ़ूल क्यों बिखेरे?"

उस कविता के शब्द आभा को सचमुच अच्छे लगे। उसे लगा कि ओरी जैसा भी है, उसके दिल में अपने अग्रजों और गुरुओं के प्रति आदर और कविता की जगह भी है।

ओरी उसके चेहरे के भाव से समझ गया कि उसे यह कविता अच्छी लगी है, खुश हो कर बोला, “आओ, रामेन सूप ठंडा हो रहा है।"

वह खाना खाने के लिए कुर्सी पर बैठी तो पूछा, “यह रामेन सूप क्या कोई जापानी भोजन है? यहाँ पर कैसे मिला?”

“मैं इन्हें जापान से लाया हूँ। यह गेहूँ की मोटी नूडल्स हैं जिसमें कन्साइ मिला कर बनाते हैं", उसने कहा।

वह उससे पूछना चाहती थी कि कन्साइ क्या होता है, लेकिन उससे पहले, ओरी बात बदलते हुए बोला, “तुम्हारी गुप्त-शक्ति जीव-जन्तुओं को तुम्हारी ओर आकर्षित करती है और वह तुम्हारी रक्षा करते हैं। इस शक्ति के बारे में कुछ बताओ?”

“बचपन से मुझे घायल पशु-पक्षियों को बचाना अच्छा लगता था, और घायल जीव-जन्तु मेरे पास बहुत आसानी से आ जाते थे", वह सोचते हुए बोली, “लेकिन तब मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि इसमें मेरी कोई विशेष शक्ति है। मैं मैइतै जनजाति की हूँ, हम लोग मणिपुर में रहते हैं। जब छोटी थी तो मैं पशु-पक्षियों की डॉक्टर बनना चाहती थी लेकिन उसके लिए कॉलेज हमारे गाँव से दूर था, उस पढ़ाई के लिए मुझे इम्फाल जा कर रहना पड़ता। उसके लिए मेरे पिता नहीं माने और स्कूल के बाद मेरा विवाह हो गया। मेरे पति विवेक का दो साल पहले एक बम विस्फोट में देहांत हो गया। उसके बाद से यह शक्ति, जिसे तुम मेरी गुप्त-शक्ति कहते हो, धीरे-धीरे वह कुछ सामने आई है।"

उसकी बात सुन कर ओरी सोच में पड़ गया, बोला, “यानि, तुम्हारे पति की मृत्यु के सदमें ने तुम्हारे भीतर सोयी गुप्त-शक्ति को जगा दिया?”

आभा की आँखें भीग गयीं, आँसू पोंछते हुए बोली, “जिस विस्फोट ने विवेक की जान ली थी, उसी में मेरी बेटी मयूरी भी मुझसे छिन गयी। बेटी और पति को एक साथ खोना, इससे बड़ा दुख और क्या हो सकता है?”

ओरी ने उसके मस्तिष्क में झाँका, इस बार आभा ने उसे रोकने की कोशिश नहीं की। वहाँ उसे केवल दुख और उदासी दिख रहे थे, यानि वह सच बोल रही है। वह बोला, “जापान में हमारे यामागुचि सान को उस कोरियाई भिक्षुक की तलाश थी, जिसे तुम लोग जामुन बाबा कहते हो। उन्हें उनकी हरिताश्म पत्थर की बनी देवी तारा की प्रतिमा चाहिये, जिसे बाबा कोरिया से ले कर आये थे। तुम इस बारे में क्या जानती हो?”

“मैं केवल इतना जाती हूँ कि बाबा त्रिनेत्र के गुरु थे, मैं उनसे कभी नहीं मिली। मैं त्रिनेत्र से भी कुछ दिन पहले ही मिली हूँ, वह मेरे भाई का दोस्त है। मुझे उस मूर्ति के बारे में कुछ नहीं मालूम।"

ओरी थोड़ी देर तक सोचता रहा, फिर बोला, “तुम मुझे अच्छी लगती हो। क्या तुम आज रात को यहाँ मेरे साथ रुकना चाहती हो? मैं तुम पर कोई जबरदस्ती नहीं करूँगा, लेकिन अगर तुम स्वेच्छा से रुको, तो मुझे अच्छा लगेगा।"

आभा ने उसे तुरंत उत्तर नहीं दिया, कुछ देर तक सोचती रही, फिर लम्बी साँस ले कर बोली, "मैं सोचती थी कि तुम गुँडे और खूनी हो, पर अब समझी हूँ कि तुम जैसे बाहर से लगते हो, वैसे नहीं हो। तुम दिलचस्प व्यक्ति हो, लेकिन मैं अभी किसी अन्य पुरुष से प्रेम करने के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं हूँ।"

ओरी ने अपने गार्ड को बुलाया और उसे आभा को नीचे बच्चों के पास ले जाने के लिए कहा, बोला, "मुझे तुम तीनों के बदले वह तारा माँ की प्रतिमा चाहिये। अगर त्रिनेत्र तुमसे सम्पर्क करे तो उसे कहना कि अगर वह प्रतिमा मुझे नहीं मिलेगी तो मैं तुम तीनों को मार दूँगा।"

आभा ने उसकी ओर देखा, कुछ नहीं बोली।

वह मुस्कराया, बोला, "मैंने तुमसे कहा कि तुम मुझे अच्छी लगती हो, वह झूठ नहीं था। लेकिन मेरा धर्म अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करना है। अगर तुम्हारी हत्या से मुझे वह मूर्ति मिलेगी तो मैं तुम्हारी गर्दन काटने से एक क्षण के लिए भी नहीं हिचकिचाऊँगा, तुम यह बात समझती हो न?"

उसकी आँखों में कुछ था, जिसे वह समझ नहीं पायी कि वह सच कह रहा है या झूठी धमकी दे रहा है।

वह मुस्करा कर बोली, "जापानी रामेन का खाना खिलाने के लिए धन्यवाद। रामेन अच्छी हैं, पर मुझे खाने में बिना मिर्च-मसाले के अच्छा नहीं लगता। मेरे ख्याल में तुम्हारी रामेन में थोड़ी सी लाल मिर्च मिल जायेगी तो और भी बढ़िया लगेगी।"

*****

21. नारायणपुर, असम, 5 मार्च 2026

आभा समझ गई है कि जब वसंत पेड़ों-पौधों के पास खड़ा हो कर उनसे बातें करता है तो ताकानोरी उसकी शक्ति को नहीं देख पाता। कमरे में लौट कर उसने वसंत से कहा कि वह बेधड़क हो कर त्री, रंगनाथ और गार्गी से बात कर सकता है। इस तरह से उसने गार्गी को बताया कि वह लोग नारायणपुर में बंदी हैं। गार्गी ने यह बात त्री को बतायी तो वह बोला, “उनसे कहो कि कल हम वहाँ तुमसे मिलने आयेंगे।"

अन्वेषण-किरण का प्रयोग करने के लिए ताकानोरी को ध्यान लगाना पड़ता है और थोड़ी देर के बाद वह थक जाता है तो उसे अपनी खोज बंद करनी पड़ती है। वह दिन में केवल तीन-चार बार अन्वेषण-किरण का प्रयोग कर सकता है, बाकी समय में वह उन पर निगरानी नहीं रख पाता।

ताकानोरी के गुँडे उनके कमरे में घुसने से डरते हैं क्योंकि जब वह वसंत और तृप्ति के लिए ट्रे में खाना ले कर कमरे में गये थे तो तृप्ति की शक्ति से स्टील की प्लेटें और चम्मच हवा में उड़ने लगे थे, इसलिए उन्हें लगा कि उस कमरे में भूत हैं।

अगले दिन सुबह, त्री, रंगनाथ, गार्गी और माधव नाव में नारायणपुर के पास के छोटे से शहर मोरनाइगुड़ी में आये और वहाँ एक छोटे से होटल में एक दिन के लिए एक कमरा लिया। रंगनाथ और माधव को होटल में छोड़ कर, त्री और गार्गी ने नारायणपुर के लिए टैक्सी ली।

रास्ते में गार्गी ने वसंत से सीधा सम्पर्क बना कर उससे सारी जानकारी ली और उसे कहा, “हम लोग आज सुबह नारायणपुर आयेंगे और त्री दादा अदृश्य हो कर ताकानोरी के घर में घुसेंगे। अगर तुम्हें महसूस हो कि दादा वहाँ हैं तो होशियार रहना, कुछ नहीं बोलना या करना जिससे उन्हें शक हो कि वह वहाँ हैं। यह बात आभा दीदी और तृप्ति को भी समझा देना।"

जब उनकी टैक्सी ताकानोरी के घर के पास पहुँची तो गार्गी ने अपनी और त्री की शक्तियों को ढक लिया। ताकानोरी के घर से कुछ पहले दोनों टैक्सी से उतर गये और आगे पैदल गये। बाकी घरों के मुकाबले में वह घर बड़ा था, उसे पहचानने में मुश्किल नहीं हुई। उसके घर के दूसरी ओर, बादल सत्र का नामघर था जिसके पास एक तालाब था। नामघर से हो कर, त्री और गार्गी तालाब के पास जा कर बैठ गये।

गार्गी बोली, "दादा, यहाँ से ताकानोरी का घर दूर नहीं है, मैं यहाँ बैठ कर आप की शक्ति को ढक लूँगी, आप अदृश्य हो कर उसके घर में घुस सकते हो।"

जिस समय त्री और गार्गी नामघर के तालाब के पास बैठे, उस समय ताकानोरी ने आभा को फिर से अपने कमरे में बुलाया और उससे पूछा, “क्या तुम लोगों ने त्रिनेत्र को खबर दे दी है कि तुम तीनों अब मेरे बंदी हो?”

आभा ने धीरे से सिर हिला कर हामी भरी।

"तुम लोगों ने उससे कैसे सम्पर्क किया?”, रात को ताकानोरी ने देर से वेबकैम और अपनी अन्वेषण-किरण से उनके कमरे पर निगरानी रखी थी लेकिन उसने वहाँ से किसी को बात करते हुए या वहाँ से गुप्त-शक्ति की लहर को निकलते या आते हुए महसूस नहीं किया था।

आभा मुस्करायी, बोली, “मुझे अपनी शक्ति नियंत्रित करनी नहीं आती और शक्ति के माध्यम से बातचीत करने का मेरा अनुभव कम है, इसलिए मैं आप को इस बात को ठीक से नहीं समझा सकती। जहाँ तक मुझे मालूम है, यह सम्पर्क हमने नहीं किया बल्कि त्री ने हमारे साथ किया था, लेकिन उसने मुझसे बात नहीं की, केवल बच्चों से की। उसे वसंत और तृप्ति की आधिक चिंता है, मैं तो उसके लिए अजनबी जैसी हूँ।"

“इसका मतलब है कि वह बीस-तीस किलोमीटर की दूरी से भी बच्चों से सम्पर्क कर सकता है?”

आभा ने कँधे उचका दिये, बोली, "मैंने कहा न कि मुझे यह सब नहीं मालूम", फिर उससे पूछा, “जब तुम्हें वह गुप्त शक्ति वाली मूर्ति मिल जायेगी तो क्या तुम त्रिनेत्र को और हमें मार दोगे?”

“तुम्हें मारने की बात मैंने कब की?”, ओरी ने पूछा।

"कल शाम को तुम मुझे धमकी दे रहे थे कि त्रिनेत्र से कहना कि अगर वह तुम्हें वह मूर्ति नहीं देगा तो तुम हम तीनों को मार दोगे?", आभा बोली।

ओरी उसे थोड़ी देर तक देखता रहा, फिर बोला, “मूर्ति को पाने के लिए मैं कुछ भी कर सकता हैं, तुम्हें और बच्चों को मार भी सकता हूँ। लेकिन मैं समुराई योद्धा हूँ, बिना कारण मैं औरतों और बच्चों को नहीं मारता।"

आभा उसके सामने जा कर बैठ गयी, “तुमसे एक प्रश्न पूछ सकती हूँ? अपनी शक्ति के बारे में कुछ बताओ कि वह कब और कैसे विकसित हुई?”

ओरी जानता है कि इस काम में यह युवती उसके दुश्मन की साथी है और उसे अपने बारे में बताना ठीक नहीं होगा। दूसरी ओर, बचपन से उसके मन में अपनी शक्ति के बारे में प्रश्न उठते रहे हैं, लेकिन आज तक उसे ऐसा कोई नहीं मिला है जिससे वह यह बातें कर सके। उसने सोचा कि वह उसे अपनी गुप्त शक्ति के बारे में कुछ नहीं बतायेगा लेकिन वह इस विषय पर वह दोनों सामान्य बातें कर सकते हैं।

यह सोच कर वह धीरे से बोला, “जिस तरह से तुम सब शक्ति वाले लोग, एक साथ रहते हो और एक साथ शक्ति साधने का अभ्यास करते हो, मुझे वैसा मौका नहीं मिला। मेरे पिता यामागुचि सान के लिए काम करते थे। जब मैं बच्चा था तब मेरे पिता की मृत्यु हो गयी थी। यामागुचि सान में भी शायद कुछ शक्ति थी और उन्होंने मेरी शक्ति को पहचाना। उन्होंने मुझे लड़ना और शस्त्र चलाना आदि सिखाने के लिए गुरु रखे, और बड़ा हो कर मैं उनके साथ काम करने लगा। बचपन से ही मैं उनका रक्षक था, उन्हें दुश्मनों से बचाता था। अब वह बहुत बूढ़े हो गये हैं, आजकल उनका पोता रिकू यामागुचि उनके धँधे का मालिक है।"

“गुँडागर्दी, मार-पिटाई और मासूम लोगों का खून करना, वह सब तुम्हें किसने सिखाया?”

आभा का प्रश्न ताकानोरी पर वज्र जैसे गिरा, वह चुप हो गया। फिर उसने अपने आदमी को बुलाया और आभा को नीचे ले जाने के लिए कहा।

तालाब के पास बैठी गार्गी ने आभा और ताकानोरी की सभी बातों को सुना और उनके बारे में त्री को बताया। वह बोली, “ताकानोरी के मन में आभा दीदी के लिए प्रेम जाग रहा है, शायद इसीलिए वह उनके प्रश्न से गुस्सा हो गया। वह नहीं चाहता कि दीदी उसे एक गुँडे या खूनी की तरह देखे।"

त्री को विश्वास नहीं हुआ, बोला, “अभी कल ही तो वह पहली बार आभा से मिला है, इतनी जल्दी उसे उससे प्रेम कैसे हो गया?”

“दादा, यह प्रेम पूछ कर या सोच-समझ कर नहीं होता", गार्गी हँसी, “क्योंकि तुम्हें अभी तक किसी से प्रेम नहीं हुआ इसलिए तुम इस बात को नहीं समझ सकते।"

“अच्छा यह बातें अब रहने दो। इस समय हमारे तीनों साथी, एक साथ नीचे वाले कमरे में बंद हैं, मैं उनसे मिलने जा सकता हूँ।"

“हाँ दादा, अभी अच्छा मौका है", गार्गी ने हामी भरी, “इस समय ताकानोरी का मन भी विचलित है, अभी कुछ देर तक वह ठीक से ध्यान नहीं लगा पायेगा, तुम तुरंत वहाँ जाओ।"

त्री सड़क पार करके ताकानोरी के घर की ओर आया। आज उसने सफेद और हलके रंग वाले कपड़े पहने हैं, जिसमें उसके लिए अदृश्य होना अधिक आसान है। उसकी गिरगिट शक्ति, उसके शरीर और वस्त्रों के रंगों को फीका कर देती है, वह पारदर्शी सा हो जाता है और आसानी से दिखायी नहीं देता।

ताकानोरी के घर के चारों ओर, बाँस की चटाई लगी थी, वह उससे सट कर चलने लगा, एक क्षण में ही वह उस चटाई में बिल्कुल घुल-मिल गया। वह घर के गेट के पास जा कर रुक गया। गेट के भीतर दो आदमी बैठ कर धीमे स्वर में बातें कर रहे थे, एक प्रौढ़ था, पैंतालिस-पचास साल का और दूसरा जवान, पच्चीस-तीस का।

कुछ देर के बाद, घर के भीतर से एक औरत निकली और उनसे बोली कि बाज़ार से कुछ तरकारी लानी है। जवान युवक ने उससे पैसे और थैला लिए और गेट खोल कर बाहर निकला। जब तक वह अपने पीछे गेट बंद करता, त्री फुर्ती से भीतर घुस गया और वहाँ की झाड़ियों के साथ खड़ा हो गया, एक पल में उसका रंग बदल कर झाड़ियों जैसा हो

गया। दूसरे चौकीदार को लगा कि कोई भीतर घुसा है, तो उसने सिर घुमा कर आसपास देखा लेकिन तब तक त्री गुम हो चुका था।

चौकीदार वापस बैठा तो त्री धीरे से भीतर की ओर सरक गया। एक बार फिर से चौकीदार को लगा कि वहाँ कोई है, उसने घूम कर देखा लेकिन उसे कुछ नहीं दिखा।

जब वह औरत वापस घर के भीतर गयी थी तो उसने पीछे से दरवाज़ा बंद कर दिया था। इस बार त्री ने प्रतीक्षा नहीं की, एक झटके में दरवाज़ा खोला और भीतर घुस गया। भीतर बायीं ओर कुछ कुर्सियाँ रखी थीं, वहाँ दो आदमी बैठ कर ताश खेल रहे थे, उनकी बन्दूकें दीवार से टिकी रखी थीं। जब तक उन्होंने दरवाज़े की ओर सिर घुमाया, त्री घर के भीतर आ कर और दीवार के रंग में घुलमिल सा गया था।

"यह दरवाज़ा कैसे खुल गया?", एक आदमी उठ कर देखने आया, बाहर झाँका, देखा कि कोई नहीं है, तो पीछे से दूसरा बोला, "रसोई वाली ने ठीक से बंद नहीं किया, हवा से खुल गया होगा।"

पहले वाला आदमी बोला, "बाहर ऐसी कोई हवा तो नहीं चल रही।"

वह दरवाज़े की बातें कर रहे थे, और त्री वहाँ से जा चुका था। गार्गी उससे सम्पर्क बनाये थी, उसने उसे दिशा बतायी कि आभा और बच्चे किस ओर हैं। वह सीधा उनके कमरे तक पहुँच गया। कमरे पर बाहर से कुँडी लगी हुई थी लेकिन वहाँ पर कोई पहरेदार नहीं था। उसने जल्दी से कुँडे को खोला, भीतर घुस कर पीछे से दरवाज़ा बंद कर दिया।

आभा, वसंत और तृप्ति ने दरवाज़ा खुलते हुए देखा लेकिन कोई भीतर नहीं आया, पर तृप्ति तुरंत समझ गयी कि वह है, खुश हो कर बोली, "त्री दादा, तुम आ गये।"

तब त्री प्रकट हुआ और उन्हें दिखने लगा। उसने होठों पर उंगली रख कर उन्हें चुप रहने का इशारा किया, फिर कुछ क्षणों तक बाहर की ओर कान लगा कर पहरेदारों की बातें सुनीं। तृप्ति तुरंत उससे लिपट गयी।

त्री ने तृप्ति को गोदी में उठा लिया, धीरे से बोला, "आज मैं तुम्हें यहाँ से छुड़ाने नहीं आया, तुम्हें अभी एक-दो दिन यहीं रहना है। मैं तुम्हें केवल यह दिखाना चाहता हूँ कि मेरे लिए तुम्हें छुड़ाना बहुत आसान है, जब चाहूँ तुम्हें यहाँ से निकाल कर ले जा सकता हूँ, समझे? इसलिए तुम लोग डरो नहीं और इन दिनों को छुट्टियों की तरह समझो।"

फिर आभा से बोला, "तुम ताकानोरी से जो बातें कर रही हो, वह बहुत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि मैं उसके और उसके मालिकों के मन में क्या है, यह जानना चाहता हूँ।"

आभा बोली, "वह हमेशा एक मूर्ति की बात करता है और कुछ नहीं कहता।"

"हाँ, मूर्ति की बात तो है। लेकिन हमें उसकी पूरी बात समझनी है, मैं नहीं चाहता कि भविष्य में हमारे अनाथाश्रम पर या हमारे बच्चों पर, कोई खतरा आये। तुम उससे सावधान रहो, वह खतरनाक खूनी है, पता नहीं अब तक कितने लोगों को मार चुका होगा।"

आभा मुस्करायी, बोली, "मुझे उससे कोई खतरा नहीं होगा। मैं यह नहीं कहती कि वह खूनी नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि वह अपने आप को बहुत अकेला महसूस करता है।"

"फिर भी तुम चौकन्नी रहो, उसका भरोसा मत करो। अब मैं जाता हूँ, एक-दो दिन में दोबारा तुमसे मुलाकात होगी। हमें तुम्हारी और मेरी अदला-बदली करनी है, मैं उसका बँधक बन जाऊँगा और तुम तीनों मुक्त हो जाओगे। यह कैसे और कब करेंगे, इसके बारे में प्लैन बना कर मैं तुम्हें खबर करूँगा, तुम लोग बिल्कुल चिंता मत करना।"

"दादा, तुम जा रहे हो?", तृप्ति रोने लगी।

"अरे, तुम तो मेरी सबसे बहादुर यौद्धा हो, जब तुम तलवार और चाकू चलाती हो तो बड़े-बड़े डाकू-लुटेरे भी डर कर भाग जाते हैं, तुम रोओगी तो मैं क्या करूँगा?", त्री ने उसे कहा ।

तब तृप्ति ने अपने आँसू पोंछ लिये और मुस्कराने की कोशिश की, बोली, "ठीक है दादा, मुझे लेने जल्दी लौटना।"

*****

22. नारायणपुर, असम, 5 मार्च 2026

त्री कमरे से निकल रहा था जब उसे सीढ़ियों से किसी के आने की आहट हुई। गार्गी ने तुरंत उसकी शक्ति-लहर को ढक दिया। उसने केवल दरवाजे को बंद किया, उसकी कुँडी बंद नहीं की और सीढ़ियों के नीचे खड़ा हो गया।

ताकानोरी सीढ़ियों से नीचे आ रहा था। हालाँकि त्रि ने बिल्कुल भी आवाज़ नहीं की थी, लेकिन ताकानोरी की श्रवण शक्ति अच्छी थी, उसे लगा कि नीचे कोई है, लेकिन वहाँ कोई नहीं दिखा। वह त्री के साथ से गुज़रा लेकिन उसे नहीं देख पाया। जब उसने आभा के कमरे का कुँडा बाहर से खुला देखा तो वह चौंक गया, उसने सोचा कि कोई उसके बंदियों को निकाल कर ले गया है। उसने तुरंत अपनी अन्वेषण-किरण से जाँचा और देखा कि कमरे के तीन लोगों की शक्ति-लहर थी तो वह कुछ शाँत हुआ।

वह द्वार की ओर आया तो दोनों पहरेदारों ने तुरंत ताश के पत्तों को समेट कर जेब में डाल लिया और खड़े हो गये।

"यहाँ पर कोई बाहर से आया था?", उसने पूछा।

“नहीं सर", दोनों पहरेदारों ने एक साथ उत्तर दिया।

उसने अपनी पीठ से बँधी तलवार को म्यान से निकाला और इशारे से दोनों पहरेदारों को पास बुलाया, और आभा के कमरे की ओर ले गया, बोला, “यह दरवाज़ा बंद क्यों नहीं है?”

एक पहरेदार हकलाते हुए बोला, “सर, मैं .. मैं.. हमने यह.. बंद क..क..किया ...”

“तुमने तो कहा कि कोई भीतर नहीं आया, तो क्या यह कुँडा अपने आप खुल गया?”

दोनों आदमी चुप हो गये।

"इसे तुरंत बंद करो", कह कर वह द्वार के पास आया और वहाँ रखी कुर्सी पर बैठ गया। कुछ क्षण बाद, कुँडा बंद करके जब दोनों पहरेदार लौटे तो वह बोला, “तुम अपने बायें हाथों को यहाँ मेज़ पर रखो। यह तुम्हारी पहली गलती है, इसलिए आज तुम्हें छोटी सजा दूँगा। लेकिन अगर ऐसी गलती दोबारा की, तो पूरी उँगली काट दूँगा, समझे?”

उसने हाथ में तलवार ऊपर उठायी तो वह दोनों समझ गये कि उन्हें कुछ गम्भीर सजा मिलने वाली है।

दोनों आदमी काँप रहे थे, लेकिन उन्होंने अपने हाथ मेज़ पर नहीं रखे। ताकानोरी उन्हें एक मिनट तक चुपचाप देखता रहा और फिर उन्हें आँखों से मुख्य द्वार से बाहर जाने का इशारा किया। दोनों आदमी चुपचाप बाहर चले गये, तब ताकानोरी ने लम्बी साँस ली और धीरे से सिर हिलाया, बोला, “यहाँ के गुँडे तो बहुत डरपोक हैं, यह जाने बिना कि सज़ा क्या होगी, पत्ते की तरह काँप रहे थे।"

उन आदमियों ने बाहर जाते समय दरवाज़ा खुला छोड़ दिया था, उनके पीछे से त्री भी बाहर निकल गया। जब वह उसके सामने से गुज़रा तो शायद एक क्षण के लिए ताकानोरी को हवा में कुछ कम्पन सा महसूस हुआ, बोला, “कौन है? कौन जा रहा है?”

त्री ने उसे कुछ उत्तर नहीं दिया लेकिन वह वहाँ से गया नहीं, दरवाज़े के बाहर, झाड़ियों के पास उनमें घुलमिल कर खड़ा हो गया। वह देखना चाहता है कि ताकानोरी अब क्या करेगा।

ताकानोरी उठ कर दरवाज़े तक आया। उसके दोनों पहरेदार, गेट के चौकीदारों को अपनी बात बता रहे थे, उसे दरवाज़े पर खड़ा देखा तो चुप हो गये और गेट खोल कर बाहर चले गये। ओरी ने आसपास ध्यान से देखा लेकिन त्री को नहीं देख पाया। गेट से प्रौढ़ वाला चौकीदार उठ कर उसके पास आया, बोला, “साहब जी, क्या हुआ? किसे खोज रहे हैं? क्या कोई भाग गया है?”

ओरी ने सिर हिला कर मना किया, कुछ बोला नहीं, फिर भीतर आ कर दरवाज़े को बंद कर दिया। उसने सोचा कि अब उसे दो-तीन नये पहरेदार खोजने पड़ेंगे, लेकिन वह इन लोगों पर पूरा भरोसा नहीं कर सकता। यह लोग सामान्य गुँडे हैं, इन्हें ठीक से काम करना नहीं आता और यह डरपोक हैं। जब तक उसे सही व्यक्ति नहीं मिलेंगे, तब तक उसे खुद ही अपने घर की सारी पहरेदारी देखनी पड़ेगी।

फिर उसने आभा के कमरे का दरवाज़ा खोला और उन तीनों को बुला कर, उन्हें ऊपर अपने कमरे में ले कर गया।

सीढ़ियाँ चढ़ते हुए आभा ने पूछा, “क्या हुआ? तुम कुछ परेशान से लग रहे हो?”

ताकानोरी को आश्चर्य हुआ कि वह उसकी परेशानी को भाँप गयी है, हालाँकि वह अपने चेहरे और आवाज़ को निर्विकार रखने में बहुत कुशल है। उसके मन की परेशानी उसके चेहरे से कोई समझ नहीं पाता। उस समय वह कुछ नहीं बोला।

अपने कमरे में जा कर उसने उन्हें बैठने के लिए कहा, फिर बोला, “आज त्रिनेत्र तुमसे मिलने आया था और अभी कुछ देर पहले ही यहाँ से गया है।"

आभा हँसी, बोली, “अरे, हमें तो पता ही नहीं चला कि वह कब आया और कब गया, क्या तुमने उसे देखा?”

वसंत और तृप्ति कुछ नहीं बोले।

“तुम झूठ बोल रही हो", उसने कठोर स्वर में कहा, फिर वसंत से पूछा, “वह यहाँ कैसे घुसा? क्या उसके पास अदृष्य होने की शक्ति है?”

वसंत ने भोला चेहरा बना कर कहा, “त्री दादा? कहाँ हैं वह?”

“ठीक है, मैं अभी तुम्हें दिखाता हूँ", उसने अपनी आँखें बंद कीं और अपनी शक्ति को जगा कर, उसे तृप्ति के मस्तिष्क में घुसा दिया।

छोटी सी तृप्ति चीख उठी। उसने उसे भीतर घुसने से रोका और अपने मस्तिष्क के पटों को बंद करने की कोशिश की। हालाँकि ओरी की शक्ति अधिक तीव्र नहीं है, लेकिन उस बच्ची के लिए वह काफ़ी थी। तृप्ति दर्द से छटपटाई तो मेज़ के पास रखी ओरी की तलवार, म्यान से निकल कर, हवा में ऊपर उठी और फिर छपाक से उसके पलंग के बीच में जा कर ऐसे गड़ी कि अगर उस समय वहाँ कोई लेटा होता तो अवश्य मर जाता।

आभा ने बच्ची की यातना देखी तो वह भी चिल्लाई, “तृप्ति को छोड़ो, बच्ची के साथ ऐसा मत करो।"

लेकिन तब तक ओरी ने तृप्ति के मानस-पटल में त्रिनेत्र के कमरे में घुसने और बच्ची को गले लगाने की छवि को देख लिया था। वह जानना चाहता है कि त्रिनेत्र वहाँ कैसे आया और उसने उन्हें क्या कहा है?

तृप्ति, वसंत और आभा तीनों चिल्ला रहे थे, लेकिन ओरी अपनी जगह पर स्थिर बैठा ध्यान में लीन था और तृप्ति के मानस-पटल की स्मृतियों को जाँच रहा था।

अचानक कमरे के कोनों से, दरवाज़े के नीचे से, बाहर बालकनी से, कीड़े, मकोड़े, बिच्छु, आदि निकल कर बाहर आने लगे। हालाँकि वह कमरा पहली मज़िल पर है, फिर भी आभा की शक्ति की पुकार इतनी प्रबल थी कि बहुत सारे जीव-जन्तु बाहर बाग से और घर के निचले भाग से निकल कर दीवारों और सीढ़ियों से ऊपर आ रहे थे। बालकनी से एक हरे रंग का साँप भी कमरे में घुसा। उन सब जीव-जन्तुओं को देख कर वह तीनों चुप हो गये लेकिन ओरी का ध्यान नहीं टूटा। उसकी तंद्रा तब टूटी जब एक बिच्छु ने उसके पैर पर काटा। जब उसने आँखें खोलीं और अपने आसपास फर्श पर घूमते उन जीव-जन्तुओं को देखा तो वह कूद कर अपने बिस्तर पर चढ़ गया। तब उसे बिस्तर के बीच में गड़ी हुई अपनी तलवार दिखाई दी, तो वह और घबराया। उसके चेहरे के डरे हुए भाव को देख कर तृप्ति हँसने लगी। उसकी हँसी से आभा की पीड़ा-तंद्रा टूटी और वह जीव-जन्तु जहाँ थे वहीं रुक गये, फिर धीरे-धीरे जिधर से आये थे, उसी ओर लौटने लगे।

तब तक ओरी का पैर जहाँ बिच्छु ने काटा था, वह लाल हो कर फूलने लगा।

“किसने काटा मेरे पैर पर? क्या मुझे जहरीले साँप ने काटा है?”, उसने घबरा कर पूछा।

वसंत बोला, “नहीं, तुम्हें साँप ने नहीं, छोटे से बिच्छु ने काटा है। वैसे भी वह हरा साँप जहरीला नहीं था, वह तो केवल चूहे खाता है।"

“पर यह सूज रहा है, देखो कितना फूल गया है", ओरी ने अपने पैर की ओर इशारा किया।

आभा बोली, “इस पैर को अच्छी तरह से साबुन और ठंडे पानी से धो लो। कुछ घंटों में यह ठीक हो जायेगा, और दर्द अधिक हो तो ब्रूफैन की गोली ले लो।"

लंगड़ाता हुआ ओरी गुसलखाने में गया, तृप्ति और वसंत भी उसके साथ गये और उसका पाँव धोने में उसकी मदद की। वसंत उसकी बाहों, हाथों और पैरों पर गुदे हुए रंग-बिरंगे टैटू देख कर मुग्ध हो गया, बोला, “आप के यह टैटू बहुत सुंदर हैं, बड़ा हो कर मैं भी अपने शरीर पर ऐसे ही बनवाऊँगा।"

ओरी ने सूजन और दर्द घटाने के लिए एक गोली खाई और फिर लंगड़ाता हुआ बाहर निकल आया और कुर्सी पर बैठ गया।

तब तृप्ति ने उसे कहा, “त्री दादा कह रहे थे कि अगर आप हमें छोड दोगे तो कल या परसों वह आप से मिलने आयेंगे। वह पूछ रहे थे कि मूर्ति के अतिरिक्त आप को और क्या चाहिये? अगर आप को वह मूर्ति मिल जायेगी तो क्या आप हमारा पीछा छोड़ देंगे?”

ओरी ने आभा की ओर देखा, बोला, “तुम्हारी शक्ति तो बहुत खतरनाक है।"

वह बोली, “यह मेरे बस में नहीं है, लगता है कि जब मैं उत्तेजित होती हूँ तो यह अपने आप जागृत हो जाती है। तुम अगर मुझे परेशान नहीं करोगे तो तुम्हें डरने की कोई बात नहीं है।"

“और वह मेरी तलवार, अपनी म्यान से निकल कर वह बिस्तर पर कैसे आयी, यह किसका काम था?”

तृप्ति बोली, “दीदी की तरह, मेरी शक्ति भी मेरे बस में नहीं है। तुम मेरे दिमाग में घुसे, इसलिए वह तलवार अपने आप हवा में चल पड़ी। अगर तुम रुकते नहीं तो शायद वह बिस्तर से निकल कर तुम्हारी छाती में भी घुस सकती थी।"

“लेकिन जब मैं तुम्हारे दिमाग में झाँक कर तुम्हारी स्मृतियों को देखने की कोशिश कर रहा था, तो क्या तुम्हें दर्द हो रहा था?”

“नहीं, दर्द नहीं हो रहा था", तृप्ति बोली, “लेकिन तुम्हें ठीक तरह से मन में देखना नहीं आता। तुम झटके से और ज़ोर लगा कर घुसे तो मुझे बहुत बुरा लगा। मेरी गार्गी दीदी बहुत प्यार से और धीरे-धीरे मन में झाँकती है, तुम्हें भी उससे वैसा ही सीखना चाहिये।"

ओरी उसकी बात सुन कर चुप हो गया। कुछ देर बाद बोला, “क्या तुम सच कह रही हो कि त्रिनेत्र आपने आप मुझसे मिलने आयेगा? क्यों? क्या वह उस मूर्ति को नहीं रखना चाहता?”

इस बार आभा बोली, “उसने हमें मूर्ति के बारे में कुछ विशेष नहीं बताया, हमें केवल इतना पता है कि पिछले चालिस-पचास सालों से तुम्हारे बॉस उस मूर्ति के लिए त्री के गुरु जी का पीछा कर रहे हैं। त्री यह जानना चाहता है कि तुम्हें उस मूर्ति के अतिरिक्त और क्या चाहिये?”

ओरी कुछ देर तक उसे देखता रहा, फिर बोला, “मुझे यामागुचि सान ने मूर्ति लाने का काम सौंपा है, कहता था कि इसके लिए अगर मुझे तुम्हारे गुरु को जान से भी मारना पड़े तो मैं उसे मार दूँ। बस, और कोई आदेश नहीं दिया है। लेकिन तुम्हारे गुरु ने तो मुझसे मिले बिना ही समाधी ले ली है, इसलिए अब मुझे उसकी चिंता नहीं है, अब मुझे केवल वह मूर्ति चाहिये, और कुछ भी नहीं।"

वसंत बोला, “तुम हमे वचन दो कि अगर तुम्हें वह मूर्ति मिल जायेगी तो तुम हमारा पीछा छोड़ दोगे और भविष्य में हमे नुक्सान पहुँचाने की दोबारा कोशिश नहीं करोगे।"

ओरी बोला, “मैं वचन देता हूँ कि मुझे वह मूर्ति मिल जायेगी तो मैं तुम लोगों को और कोई कष्ट नहीं दूँगा।"

तब आभा ने कहा, “मैं तुम्हारा संदेश त्री तक पहुँचा दूँगी। वह तुम्हें बतायेगा कि तुमसे कब और कहाँ मिलेगा।"

*****

23. नारायणपुर, असम, 5 मार्च 2026, दोपहर-शाम

ताकानोरी के घर से जाने से पहले, त्री ने बाहर से उसका पूरा चक्कर लगाया। देखा कि रसोई का एक दरवाज़ा पीछे भी है जो खुला हुआ है, यानि ज़रूरत पड़ने पर वह वहाँ से भी घर में घुस सकता है।

घर की पिछली चारदीवारी के बाहर उसे एक कटहल का पेड़ देखा जिसकी कुछ शाखाएँ घर के भीतर तक आ रही थीं। वह उसकी एक शाखा पर चढ़ कर बाहर आ गया और वहाँ से नामघर के तालाब के पास लौट आया जहाँ गार्गी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसे कुछ भी कहने-बताने की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि सारा समय गार्गी उसके दिमाग से जुड़ी हुई थी और उसने उसकी हर बात सुनी थी।

उसने त्री को बताया, “दादा, जब तुम वहाँ से निकल आये तो ताकानोरी उनके कमरे में गया और वह आभा दीदी, वसंत और तृप्ति को ऊपर ले गया है, और इस समय उनसे बातें कर रहा है।" उसने उनकी बातचीत के बारे में बताया और जब कहा कि कैसे बिच्छु ने ताकानोरी के पैर को काटा तो वह दोनों भी बहुत हँसे।

वह बोली, “वह कहता है कि जापान में यामागुचि सान ने उसे केवल वह मूर्ति लाने के लिए कहा है। यानि अगर उन्हें वह मिल जायेगी तो वह गुरु जी का और हमारा पीछा छोड़ देंगे। वह कौन सी मूर्ति है और वह कैसे पहचानेगा कि वो वही असली मूर्ति है? अगर हम उसे गुरु जी की मूर्ति की जगह कोई और मूर्ति दे दें तो?”

त्री बोला, “आज हमें पता चला है कि ताकानोरी देखने में पहलवान है, वह आमने-सामने की लड़ाई में और तलवारबाज़ी में अवश्य निपुण होगा, लेकिन उसकी कुछ कमज़ोरियाँ भी हैं। उसके पहरेदार यहाँ के स्थानीय लोग हैं, जिन्हें हम आसानी से उल्लू बना सकते हैं। और अगर हम सब मिल कर उस पर हमला करें तो वह हमारा सामना नहीं कर सकता, हम उसे आसानी से हरा सकते हैं।"

गार्गी बोली, “दादा, अगर ऐसा है तो हम उससे क्यों डर रहे हैं, उसे यहाँ से भगा क्यों नहीं देते?”

“इसके दो कारण हैं। पहला कि वह लोग गुरु जी का कई दशकों से पीछा कर रहे हैं, वह उस मूर्ति को किसी भी कीमत पर पाना चाहते हैं। अगर ताकानोरी यहाँ से खाली हाथ लौटेगा, तो वह उसकी जगह किसी और को भेज देंगे, यह बात यहीं पर समाप्त नहीं होगी। दूसरी बात है कि ताकानोरी मुझे अच्छा व्यक्ति लगता है और वह हमारा शक्तिवान भाई भी है। नियति ने उसे याकूज़ा-गुँडा बना दिया है, क्योंकि दुर्भाग्य से वह यामागुचि के चँगुल में आ गया था, लेकिन वह दिल का बुरा नहीं है। जापानी यौद्धाओं के लिए आत्मसम्मान सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, उसे हरा कर खाली हाथ वापस भेजना सही नहीं होगा", त्री ने समझाया।

“तो हम क्या करेंगे?”

“हमें कोई ऐसा उपाय खोजना है कि साँप भी मर जाये और लाठी भी नहीं टूटे।"

“यानि कि गुरु जी की मूर्ति भी बच जाये और ताकानोरी हमारा पीछा छोड कर जापान लौट जाये?”

"यही नहीं, हमें यह भी करना है कि यामागुचि सान सोचे कि उसे सफलता मिली है और वह गुरु जी का पीछा छोड़ दे। चलो, अब हम मोरनाइगुड़ी वापस चलते हैं। तुम रंगनाथ को सूचित कर दो कि यहाँ सब ठीक है और हम वापस आ रहे हैं।"

वापस लौटते समय, रास्ते भर त्री सोचता रहा कि आगे क्या और कैसे करे। मोरनाइगुड़ी पहुँच कर उसने सबको पास बिठा कर अपना प्लैन बताया और उनकी राय पूछी। कुछ देर तक उनमें बहस हुई फिर सब मान गये।

त्री ने तुरंत ओरी को फोन किया, बोला, “मैं त्रिनेत्र बोल रहा हूँ, आज शाम को आप से मिलना चाहता हूँ, क्या पाँच बजे का समय आप के लिए ठीक रहेगा?”

ओरी को उससे यह अपेक्षा नहीं थी, वह कुछ क्षण तक बोल नहीं पाया, फिर कहा, “हाँ, पाँच बजे मैं आप की प्रतीक्षा करूँगा।"

शाम को फिर से उसके साथ गार्गी भी नारायणपुर गयी, और सुबह की तरह, वह नामघर के तालाब के पास बैठ गयी। उसने तुरंत वसंत से सम्पर्क किया और बताया कि वह लोग वहाँ आ गये हैं और बाहर हैं।

त्री ताकानोरी के घर गया और चौकीदार से बोला कि उसे उनके जापानी साहब से मिलना है। चौकीदार को मालूम था कि वह आयेगा, वह उसे तुरंत ओरी के कमरे में ले गया। ओरी ने उसे बैठाया और चौकीदार से चाय भिजवाने के लिए कहा।

थोड़ी देर तक ओरी उसे चुपचाप देखता रहा। दोनों करीब तीस साल के थे, और उनकी कुछ बातें मिलती थीं जैसे कि गम्भीर चेहरे, छोटे कटे सिर के बाल और लम्बे कद। ओरी उससे करीब दो इँच अधिक लम्बा है, उसका शरीर अधिक भारी है और वह गुदवाये टैटू से भरा हुआ है। त्री का श्याम वर्ण का है, और ओरी गोरा।

चौकीदार हरी चाय ले कर आया तो ओरी ने उससे केतली ले ली और उसे भेज दिया, फिर उसे प्यालों में उड़ेला और एक प्याला उसकी ओर बढ़ाया। त्री ने गुरु जी के साथ कई बार हरी चाय पी थी, इसलिए वह उसके लिए नयी नहीं थी, हालाँकि उसे सामान्य दूध वाली भारतीय चाय ज्यादा अच्छी लगती है। दोनों ने चुपचाप चाय पी, फिर मुँह को नेपकिन से पोंछ कर ओरी बोला, "मैं ओकानो गैन्ज़ो ताकानोरी, मेरे घर में आप का स्वागत है।"

"मैं त्रिनेत्र, स्वागत के लिए धन्यवाद। अब हम काम की बात कर सकते हैं?"

ओरी के चेहरे पर एक हलकी सी मुस्कान कौंधी, बोला, "मैं जून-मिन की विशेष मूर्ति की खोज में आया हूँ।"

त्री ने सिर हिला कर हामी भरी, बोला, "मुझे मालूम है, और हम उसकी बात भी करेंगे, लेकिन उससे पहले मैं कुछ अन्य बातें साफ करना चाहता हूँ।"

ओरी ने धीरे से सिर हिलाया, कुछ नहीं बोला।

त्री बोला, "सबसे पहली बात है कि हमें आप से किसी तरह का डर नहीं है, अगर मैं चाहता तो आप से मिले बिना यहाँ से आभा, वसंत और तृप्ति को ले गया होता, इसलिए मैं आप के पास किसी डर की वजह से नहीं आया।"

ओरी मुस्कराया बोला, "मैं भिन्न तरह के अस्त्र-शस्त्रों की लड़ाई में माहिर हूँ, अगर हम सीधा लड़ें तो मैं दो मिनट में आप को मार सकता हूँ। लेकिन मैं जानता हूँ कि आप के पास विभिन्न शक्तियों वाले यौद्धा हैं, जिनके सामने मेरी लड़ाई की क्षमता का कुछ महत्व नहीं है। उन्हीं के कारण आज सुबह से मेरे पैर में सूजन और दर्द थे, जो अभी भी पूरी तरह से ठीक नहीं हुए हैं। लेकिन मेरे पास एक और छुपा हुआ अस्त्र है, कि मुझे अपने जीने-मरने की परवाह नहीं है, मैं चाहूँ तो इस पूरे घर को आग लगवा सकता हूँ जिसमें मेरे साथ आप और इस घर में बँधक आप के साथी, सब मर सकते हैं और आप की शक्तियाँ आप को बचा नहीं पायेंगी।"

त्री भी मुस्कराया, बोला, "आप को पक्का यकीन है कि आप इस घर में आग लगवा पायेंगे?"

"कौन रोकेगा मुझे?"

त्री बोला, "अच्छा तो आप अपने चौकीदार को बुला कर दिखाईये।"

गार्गी जो उनकी बातें सुन रही थी, उसने तुरंत ताकानोरी के दिमाग को अजगर-पाश में बाँध दिया। ओरी को लगा मानो उसके शरीर को लकवा मार गया हो, न उसके मुँह से आवाज़ निकल रही थी, न ही वह हाथ या पाँव हिला पा रहा था। एक-दो लम्बे मिनट ऐसे ही गुज़रे, उसके बाद गार्गी ने अजगर-पाश को खोल दिया।

त्री मुस्करा कर बोला, "आप के घर में आ कर, आप के साथ इस तरह की हरकत करने के लिए मुझे क्षमा कीजिये, लेकिन अब आप समझ गये होंगे कि मैं किसी डर की वजह से आप से बात करने नहीं आया। मैं आप को शक्तिवाहिनी माँ तारा की देवी मूर्ति तक ले जाने के लिए तैयार हूँ, लेकिन उससे पहले मुझे आप का एक वचन चाहिये। अगर आप मेरी इस शर्त को मानने के लिए तैयार हैं तब हम आगे बात करेंगे, वरना मैं अभी यहाँ से चला जाऊँगा।"

ओरी का चेहरा फीका पड़ गया, बोला, "कैसा वचन?"

"कि उस मूर्ति को पाने के बाद, आप और आप के बॉस यामागुचि सान, मेरे गुरु जी जून-मिन और हमें भूल जायेंगे और दोबारा उनका या हमारा पीछा नहीं करेंगे।"

ओरी ने एक क्षण सोचा, बोला, "मैं स्वयं क्या करूँगा उसका मैं आप को वचन दे सकता हूँ, लेकिन यामागुचि सान भविष्य में क्या करेंगे, यह वचन मैं कैसे दे सकता हूँ?"

"अगर आप मुझे यह वचन नहीं दे सकते तो मैं आप को वह प्रतिमा भी नहीं दे सकता।"

ओरी थोड़ी देर तक सोचता रहा, फिर बोला, "मैं वचन दे सकता हूँ कि शक्तिवाहिनी देवी प्रतिमा को यामागुचि सान को दे कर मैं उनसे कहूँगा कि जून-मिन अब नहीं है, वह ज़मीन के गर्भ में दफन हो चुका है। यह जान कर वह उसका पीछा नहीं करेगा। मैं यह वचन भी दे सकता हूँ कि अगर यामागुचि सान के गैंग ने दोबारा तुम लोगों पर हमला करने की कोई कोशिश की, तो मैं तुम्हारे साथ उनसे लड़ूँगा।"

त्री ने सोचा, बोला, "ठीक है, मुझे तुम्हारा यह वचन स्वीकार है। अब तुम आभा, वसंत और तृप्ति को जाने दो। मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि तुम्हें शक्तिवाहिनी देवी प्रतिमा तक ले कर जाऊँगा।"

*****

24. मोरनाइगुड़ी से काज़ीरंगा, असम, 6 मार्च 2026

ताकानोरी ने जून-मिन की चिट्ठी वाला लिफाफा, जो उसे जगदीश बाबू ने दिया था, बाहर निकाला और उसे त्री को दिया। त्री ने उसमें से गुरु जी की कविता वाला कागज़ बाहर निकाला और उसे पढ़ा -

"चन्द्र-वधु के चरण-कमल, तीन दशानन कोसे
पद्मा की कमल-अँजुरी से बहता जल
विष्णु के शंख नाद से प्रज्जवलित अंबर के सप्त ऋषि
कंदरा में गूँजती चौदह ध्वनियाँ पिनाक की
लौटी सति पर्वतराज पिता के घर, त्रिनेत्र कहाँ है?
वहाँ जहाँ पर लाल बकरियाँ घास चरें।"

उसने कविता को धीरे-धीरे पढ़ा और मुस्कराया, बोला, "जब मैं छोटा सा था, तबसे गुरु जी मुझसे यह खेल खेलते थे। वह मेरी गेंद या खिलौना छिपा देते थे, फिर मुझे एक कविता सुनाते थे और कहते थे कि इसके शब्दों में संकेत हैं कि वह कहाँ छुपा है। कई बार मुझे अपने खिलौने खोजने में दो-तीन दिन भी लग जाते थे। उस खेल की वजह से मुझे उनकी कविताओं के संकेत समझना आता है।"

त्री, आभा और ओरी मोरनाइगुड़ी में होटल में बैठे हैं। वह लोग सुबह नारायणपुर से वहाँ आये हैं। त्री ने सभी बच्चों को मजूली भेज दिया है। वह चाहता था कि आभा भी बच्चों के साथ मजूली चली जाये, लेकिन ताकानोरी नहीं माना, बोला, "तुम मेरे सामने हो कर भी अदृष्य हो सकते हो, मैंने तुम्हारी शक्ति का वह रूप देखा है। अगर तुम मुझे रास्ते में कहीं पर अकेला छोड कर गुम हो गये तो मैं क्या करूँगा? गारँटी के लिए आभा भी हमारे साथ चलेगी।"

जब त्री ने गुरु जी की कविता पढ़ी तो ओरी बोला, "तो बताओ कि हमें वह देवी मूर्ति लेने कहाँ जाना है?"

त्री बोला, "मैंने उस मूर्ति के बारे में एक बात तुमसे छिपायी है, पहले तुम्हें वह बात बतानी है। तुम तो जानते हो कि वह मूर्ति हरे जेड पत्थर की बनी थी? पाँच साल पहले जब गुरु जी यहाँ मजूली आये तो एक दिन वह मूर्ति गिर कर टूट गयी।"

ओरी गुस्सा हो गया, बोला, "इसका मतलब है कि तुमने मुझसे झूठ बोल कर वचन लिया है? तुमने तो कहा था कि तुम मुझे उस देवी मूर्ति तक ले कर जाओगे?"

"पहले मेरी पूरी बात सुनो, फिर गुस्सा होना। जब वह मूर्ति टूटी तो उसका एक बड़ा हिस्सा था, और कुछ छोटे टुकड़े थे। उसके हर टुकड़े में वही शक्ति थी। मैंने उसके छोटे से कण में भी उसकी शक्ति को महसूस किया है और वह उतनी ही प्रबल है जितनी कि मूल मूर्ति में थी। तब गुरु जी ने फैसला किया कि हर टुकड़े को एक नयी प्रतिमा में जोड़ देंगे। उन्होंने जो कविता लिखी है, वह उस नयी प्रतिमा तक पहुँचने का संकेत है जिसमें देवी मूर्ति का सबसे बड़ा टुकड़ा जुड़ा हुआ है, इसलिए वह भी शक्तिवाहिनी मूर्ति है।"

उसकी बात सुन कर ओरी ने कुछ देर सोचा, फिर बोला, "मुझे यह बात यामागुचि सान को बतानी पड़ेगी।"

उसने जापान में फोन किया और किसी से बात की, फिर थोड़ी तक फोन हाथ में लिए किसी और से बात करने की प्रतीक्षा की, लम्बे समय तक बात करने के बाद, आखिर में फोन बंद करके बोला, "यामागुचि सान कहते हैं कि अगर उस मूर्ति में शक्ति नहीं होगी तो वह तुम सबसे बदला लेंगे, तुम्हें छोड़ेंगे नहीं।"

त्री बोला, "तुम्हारे पास अन्वेषण-किरण की शक्ति है, तुम्हें मेरी बात पर विश्वास करने की आवश्यकता नहीं होगी, तुम खुद ही जाँच कर लेना कि उस नयी प्रतिमा में कितनी शक्ति है।"

"ठीक है, अब देर लगाने की आवश्यकता नहीं, बताओ हमें कहाँ जाना है?"

"पहले हमें गुरु जी की कविता के संकेत समझने होंगे और उसके लिए हमें इस क्षेत्र के नक्शे की आवश्यकता है। शायद मोबाइल पर जो नक्शा होता है, उससे काम हो जाये", त्री बोला।

“मेरे पास हिन्दुस्तान का बड़ा नक्शा है, जिसमें हर राज्य के सारे जिले और गाँवों को देख सकते हैं", ताकानोरी ने अपने बैग से एक टैबलेट निकाली, चालू की और उसमें आसाम का नक्शा निकाला, और उसे त्री की ओर बढ़ाते हुए बोला, “यहाँ पर मजूली के दक्षिण भाग का, जहाँ पर जून-मिन का वृद्धाश्रम है, उसका नक्शा है।"

आभा अभी तक चुपचाप उनकी बातें सुन रही थी। त्री ने उसे कहा, “गुरु जी की कविता की पहली पंक्ति दोबारा पढ़ो।"

“चन्द्र-वधु के चरण-कमल, तीन दशानन कोसे", आभा ने पढ़ा।

त्री सोचने लगा, फिर बोला, “शायद गुरु जी इसमें उस जगह की दूरी और दिशा की बात बता रहे हैं। दशानन यानि दस सिर वाला, यानि रावण, और तीन दशानन यानि तीस सिर वाला, और कोसे का मतलब कोस, तो शायद यह जगह गुरु जी के आश्रम से तीस कोस दूर है।"

आभा बोली, “यह कोस क्या होता है?”

त्री बोला, “पुराने ज़माने में दूरियाँ कोसों में मापी जाती थीं, तीस कोस का मतलब हुआ करीब साठ किलोमीटर। यानि यह जगह आश्रम से साठ किलोमीटर दूर है। पहला वाक्य है, चन्द्र-वधु के चरण-कमल, चन्द्र-वधु यानि चन्द्रमा की बहू, शायद वह चंद्रकाँति यानि माँ सरस्वती की बात कर रहे हैं? तारा माँ की मूर्ति के सबसे बड़े टुकड़े को माँ सरस्वती की मूर्ति में ही लगाया गया है। इसलिए मेरा ख्याल है कि गुरु जी, माँ सरस्वति के चरण-कमलों की बात कर रहे हैं। चरण-कमल किस दिशा में होते हैं?”

ओरी बोला, “सरस्वती? जापानी भाषा में उन्हें बेन्ज़ाइतेन कहते हैं, हम भी उन्हें ज्ञान और संगीत की देवी मानते हैं।"

“अगर देवी का मस्तक उत्तर में मानते है, तो चरण-कमल दक्षिण में हुए", आभा बोली।

“मजूली के दक्षिण में साठ किलोमीटर दूर क्या है?”, त्री ने नक्शे में देखा और बोला, “वहाँ पर काज़ीरंगा का आरक्षित सफारी-पार्क है। शायद हमने उस जगह को ठीक खोजा है, क्योंकि कविता की अंतिम पंक्ति में लाल बकरियों की बात है और काज़ीरंगा का मतलब भी लाल बकरी ही होता है।"

ओरी बोला, “तो क्या हमें पता चल गया कि वह कौन सी जगह है?”

त्री ने सिर हिला कर मना किया, बोला, "अभी तो हमें केवल दिशा और क्षेत्र पता चले हैं, लेकिन काज़ीरंगा बहुत बड़ा है, और वह मूर्ति वहाँ पर किस जगह पर छिपी रखी है, अभी हम यह नहीं समझे। कविता की दूसरी पंक्ति पढ़ो।"

आभा बोली, “पद्मा की कमल-अँजुरी से बहता जल।”

त्री बोला, "पद्मा और कमल-अँजुरी तो लक्ष्मी की ओर संकेत लगते हैं। शायद वहाँ पर लखिमपुर या लखमीपुर जैसा कोई गाँव होगा?"

आभा बोली, “वह तो जँगली पशु-पक्षियों का संरक्षित क्षेत्र है, क्या वहाँ पर गाँव भी हैं?”

त्री ने बताया, “पिछले कुछ दशकों में वहाँ पर बहुत सारे नये गाँव बस गये हैं, जिनकी वजह से जँगली जानवरों के लिए जगह कम हो गयी है। वहाँ कुछ जानवरों के चोर भी घूमते हैं जो उनकी तस्करी करते हैं। जैसे कि गैंडे के सींगों से चीन में पारम्परिक दवाईयाँ बनाते हैं, इसलिए उनकी बहुत माँग है और वहाँ के कुछ लोग गैंडों को मार कर उनके सींग काट कर उसकी तस्करी करते हैं।"

वह कुछ देर तक टैबलेट पर काज़ीरंगा के आसपास के क्षेत्र को ध्यान से देखता रहा, फिर बोला, “काज़ीरंगा के पश्चिम में लखमीपारा नाम का गाँव है, शायद गुरु जी की कविता उसकी बात कर रही है? हमें वहाँ जा कर पता करना चाहिये क्योंकि कविता की अगली पंक्तियों में विष्णु के शंख की और गुफाओं में शिव जी के डमरू की बातें हैं। शायद वहाँ के गाँव वाले इस बारे में कुछ बता सकते हैं।"

ओरी बोला, “फिर देर करने से क्या फायदा, हमें तुरंत उस जगह के लिए रवाना होना चाहिये।"

त्री ने कहा, “ज़रूरी नहीं कि हमें वह जगह आसानी से मिल जायेगी, छुपी जगहें खोजने में गुरु जी बहुत होशियार हैं, हो सकता है कि हमें वहाँ तीन-चार दिन लग जायें और किसी होटल में रहना पड़े।"

ओरी के माथे पर बल पड़ गये, बोला, “तुम जून-मिन के बारे में ऐसे बात करते हो मानो वह अभी जीवित हो, क्या उसने समाधी नहीं ली?”

त्री मुस्कराया, “मैं सालों तक गुरु जी से बहुत दूर रहा हूँ, लेकिन मैंने उन्हें हमेशा अपने साथ महसूस किया है। उनके समाधी लेने से भी इस बात में कुछ अंतर नहीं पड़ा, जब तक मैं हूँ, तब तक वह मेरे साथ हैं।"

उन्होंने दोपहर में बनपुराई घाट से काज़ीरंगा के पास देवपानी के लिए मोटरबोट ली और करीब चार बजे वहाँ पहुँचे। वहाँ एक लॉज में उनके लिए तीन कमरे बुक थे।

लॉज वाले सज्जन ने उन्हें बताया कि वहाँ से लखमीपारा जाने के लिए पगडँडी के रास्ते से पैदल जाना आसान है, बीस-पच्चीस मिनट में वहाँ पहुँच सकते हैं। उन्होंने कहा, "यह क्षेत्र काज़ीरंगा की परिधि के साथ लगा हुआ है, इसलिए यहाँ अक्सर जँगली जानवर भी आ जाते हैं, आप उस रास्ते पर ज़रा ध्यान से रहियेगा।"

त्री ने उनसे पूछा, “लखमीपारा के आसपास क्या विष्णु या कृष्ण या शंख से जुड़ा किसी जगह का नाम है?”

वह सज्जन कुछ देर तक सोचते रहे, फिर बोले, “लखमीपारा से काज़ीरंगा की ओर जायें तो वहाँ पर शंखासुर की पहाड़ी है। पुराणों में एक कहानी है कि एक दानव के पास एक महाशंख था, जिसकी वजह से सब उसे शंखासुर बुलाते थे। विष्णु ने उसे हरा कर वह महाशंख ले लिया और उस शंख को पंचजन्य का नाम दिया।"

ओरी पास में खड़ा उन्हें बातचीत करते हुए देख रहा था, उसने त्री से पूछा, “क्या पता चला?”

“लगता है कि हमारी किस्मत अच्छी है और हम सही जगह पर आये हैं। अभी कुछ देर में अँधेरा हो जायेगा इसलिए अभी शंखासुर पहाड़ी की ओर जाने का समय नहीं है, कल सुबह चलेंगे", त्री बोला, फिर उसने आभा से कहा, “कविता की वह शंख वाली पंक्ति फिर से पढ़ो।"

“विष्णु के शंख नाद से प्रज्जवलित अंबर के सप्त ऋषि।"

त्री सोचते हुए बोला, “इसमें आसमान पर सप्तऋषि मँडल की बात है, क्यों? उसका क्या अर्थ हुआ?"

ओरी को नहीं मालूम था कि सप्तऋषि क्या है, तो त्री ने उसे बताया, “यह एक कोन्स्टेलेशन यानि तारा-समूह है, पश्चिमी देशों में उसे कानिस मेजर या बिग बैरो कहते हैं।"

आभा बोली, "सप्तऋषि ध्रुव तारे की राह भी तो दिखाते हैं?"

ओरी ने पूछा, "कौन से तारे की?”

“ध्रव तारा, नोर्थ स्टार।"

“इस कविता में इस जगह पर ध्रुव तारे का क्या अर्थ बना?”

त्री ने सोचते हुए कहा, “शायद इसका अर्थ है कि जैसे सप्तऋषि आकाश में ध्रुव तारे की दिशा दिखाते हैं, वैसे ही शंखासुर की पहाड़ी हमें प्रतिमा की दिशा दिखायेगी।"

“नक्शे में देखते हैं", ओरी को अब इस खोज में आनन्द आने लगा था, उसने टेबलेट पर उस क्षेत्र के नक्शे को बड़ा किया और कुछ देर तक देखता रहा, फिर बोला, “यहाँ कहीं पर शंखासुर की पहाड़ी का नाम नहीं है।"

त्री बोला, “तुम चिंता नहीं करो, यह पारम्परिक नाम हैं, यह नाम अक्सर नक्शों पर नहीं दिखते क्योंकि हमारे आधुनिक नक्शे अंग्रेज़ों के समय बने थे और कई बार वह लोग हमारे पाराम्परिक नामों को महत्व नहीं देते थे। लेकिन यह जानकारी हमें गाँव वालों से मिल जायेगी।"

*****

25. लखमीपारा, काज़ीरंगा, असम, 7 मार्च 2026

अगले दिन सुबह आभा ने त्री से पूछा, “तुम आज लखमीपारा और शंखासुर पहाड़ी की ओर जाने की कह रहे थे। तुम्हारे ख्याल में वहाँ तुम्हें वह मूर्ति मिल जायेगी? आज मेरी तबियत ठीक नहीं है, मेरा कहीं बाहर जाने का मन नहीं है।"

त्री बोला, “मैं गुरु जी को जानता हूँ, वह कोई चीज़ किसी आसान जगह पर नहीं छुपाते, इसलिए मैं जानता हूँ कि आज उस जगह पर पहुँचना बहुत कठिन होगा। अगर तुम अभी नहीं आना चाहती तो कमरे में आराम करो। लेकिन जाने से पहले मुझे कविता की बाकी पंक्तियाँ बता दो।"

आभा ने अपने पर्स से कविता वाला कागज़ निकाल कर पढ़ा:

> “कंदरा में गूँजती चौदह ध्वनियाँ पिनाक की
>
> लौटी सति पर्वतराज पिता के घर, त्रिनेत्र कहाँ है?
>
> वहाँ जहाँ पर लाल बकरियाँ घास चरें।"

त्री बोला, “कंदरा माने गुफा और पिनाक माने शिव जी का डमरू, शायद चौदह ध्वनियों का अर्थ है कि वहाँ चौदह स्थान या गुफाएँ हैं। शंखासुर पहाड़ी पर पहुँच कर, वहाँ गुफाओं के बारे में पता करेंगे। अब हम जाते हैं, दोपहर से पहले लौट आयेंगे।"

तबियत खराब होने का केवल बहाना था। जब वह दोनों होटल से निकले तो आभा भी फटाफट तैयार हो गयी और देवपानी घाट की ओर गयी। वहाँ उसने एक नाव किराये पर ली और उसे पूर्व दिशा में ले जाने के लिए कहा।

जब वह नाव घाट से कुछ दूर आयी तो सामने से एक मोटरबोट उसकी नाव के पास आ गयी, उसमें रंगनाथ, गार्गी और वसंत थे। करीब के एक द्वीप पर अपनी पहली नाव को छोड़ कर, वह बच्चों के साथ उनकी मोटरबोट पर चली गयी। उसने उन्हें त्री और ओरी के शंखासुर पहाड़ी की खोज में जाने के बारे में बताया, और गार्गी से बोली, “मैं उन दोनों पर नज़र रखना चाहती हूँ, तुम त्री से सम्पर्क बना कर रखो और देखो कि वे दोनों कहाँ जाते हैं और क्या करते हैं।"

उधर त्री और ओरी लखमीपारा गाँव की ओर पैदल जा रहे थे। होटल से निकलने के दस मिनट बाद वह दोयांग नदी के किनारे पहुँच गये, जिसके दोनों ओर पेड़ उगे थे। वहाँ नदी पर कोई पुल नहीं दिखा और आसपास, कोई नाव वाला भी नहीं था, लेकिन लखमीपारा जाने के लिए उन्हें वह नदी पार करनी थी। ओरी ने नदी के साथ-साथ चल कर उत्तर दिशा में जाने के लिए कहा, तो त्री मान गया, सोचा कि शायद आगे जा कर नदी पार करने का कोई रास्ता मिल जायेगा।

वहाँ पर केवल पक्षियों की चहचहाहट सुनाई दे रही थी। त्री ने जमीन पर गिरी हुई पेड़ों दो लम्बी-सीधी डालियों को खोजा, और उनकी छोटी डालियों और पत्तों को तोड़ कर उनकी छड़ियाँ बनायीं। एक छड़ी ताकानोरी को दी, और बोला, “काज़ीरंगा का सफारी पार्क नदी के उस ओर है, इसलिए मेरे विचार में खतरनाक जानवर इस ओर कम आयेंगे, लेकिन यहाँ की ऊँची घास में साँप हो सकते हैं, इस छड़ी से आगे ठक-ठक करके चलो, तो साँप और छोटे-मोटे जानवर भाग जायेंगे।"

ओरी ने पूछा, “उसके टूटने से पहले, तुमने जून-मिन की विशेष शक्ति वाली मर्ति को अवश्य देखा होगा? मैंने उसकी तस्वीरें देखी हैं और यामागुचि सान ने कहा कि वह केवल बारह इंच की है, क्या यह सच है?”

त्री ने हाथों से इशारा करके दिखाया, “जहाँ तक मुझे याद है, वह करीब इतनी बड़ी थी, हो सकता है कि बारह इंच की ही हो। लेकिन वह बहुत हलकी थी, जैसे पत्थर की मूर्तियाँ होती हैं, वैसी नहीं थी।"

"वह टूटी कैसे?”

त्री ने मुँह बनाया, बोला, “मेरी गलती से ही टूटी थी। गुरु जी मेरे लिए पिता जैसे हैं, उन्होंने मुझे बचपन से पाला है, शायद इसलिए मुझे उनके साथ खेलना और मज़ाक करना अच्छा लगता है। मेरे एक मज़ाक की वजह से वह मूर्ति टूटी थी।"

ओरी ने उसकी ओर प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा तो उसने पूरी बात बतायी, बोला, “मैं शिल्पकार हूँ, शिल्प बनाना मुझे बहुत अच्छा लगता है। गुरु जी ने मुझे अपनी मूर्ति जैसी, सफेद और हरे पत्थरों की बारह अन्य मूर्तियाँ बनाने के लिए कहा था। जहाँ उनका समाधी-स्थल है, वह उस मन्दिर की दीवार में उन मूर्तियों को स्थापित करना चाहते थे, शायद तुमने वहाँ मेरी उन मूर्तियों को देखा होगा? उस मन्दिर के भीतर वाले कक्ष में एक अवलोकितेश्वर बौद्धिसत्व की बड़ी मूर्ति भी है, जिनकी दायीं हथेली में हरी तारा और बायीं हथेली में श्वेत तारा खड़ी हैं, वह दोनों छोटी मूर्तियाँ भी मैंने ही बनायी हैं।"

"फिर?”

“एक दिन मैं मन्दिर के प्रांगण में बैठ कर उन मूर्तियों को तराश रहा था, जब गुरु जी वहाँ आये। उस समय मैंने यह ध्यान नहीं दिया कि उनके हाथों में वह शक्तिवाहिनी प्रतिमा थी। तुम तो जानते हो कि मेरी अदृश्य होने की शक्ति है, उनके साथ खेलने के लिए कई बार मैं अदृश्य हो कर छिप जाता था और उनके पीछे से आ कर, उन्हें डराने के लिए अचानक 'हाउ-हाउ' चिल्लाते हुए प्रकट हो जाता था। मेरे उस खेल से वह डरते नहीं थे, क्योंकि शायद वह मुझे देखे बिना भी मेरी उपस्थिति को भाँप लेते थे। पता नहीं उस दिन क्या हुआ, मैं 'हाउ-हाउ' कहता हुआ उनके सामने प्रकट हुआ तो उनके हाथ से वह प्रतिमा गिर गयी", उस दिन को याद करके त्री की आँखों में आँसू आ गये, “मूर्ति के टुकड़ों को देख कर वह इतने दुखी थे कि अपनी हरकत पर मुझे बहुत पछतावा हुआ, लेकिन तब पछताने से क्या होता, वह मूर्ति तो ठीक नहीं हो सकती थी।"

नदी के साथ चलते-चलते वे दोनों, उत्तर दिशा में काफ़ी आगे आ गये थे, वहाँ उन्हें नदी पर बाँस का बना एक कच्चा पुल दिखा। देखने में वह कमज़ोर लगता था इसलिए उन्होंने उसे एक-एक कर के पार किया। नदी पार करके वह वापस दक्षिण दिशा में लखमीपारा गाँव की ओर लौटे।

ओरी बोला, “यामागुचि दादा जी कहते थे कि अगर उस मूर्ति के पास रहो तो तुम्हारी भीतर की शक्ति अपने आप सशक्त हो जाती है। मैं सोचता था कि अगर उनके पास वह मूर्ति होती तो मेरी शक्तियाँ भी पूरी तरह से विकसित हो सकती थीं। लेकिन मूर्ति टूटने के बाद, जून-मिन ने उसके टुकड़ों को नयी मूर्ति में लगवा कर, यहाँ अपने आश्रम से इतनी दूर क्यों रखवा दिया? यहाँ रखने से उसका लाभ किसे मिलेगा? क्या तुम लोगों को उसकी शक्ति की आवश्यकता नहीं है?”

“क्योंकि कई वर्ष पहले ही हमने समझ लिया था कि हमारी शक्ति को प्रबल करने के लिए, प्रतिमा के अतिरिक्त कुछ अन्य रास्ते भी हैं। जब कुछ शक्तिवान लोग साथ में रहते हैं, साथ में शक्ति-साधन का अभ्यास करते हैं तो उससे भी आपस में उनकी शक्तियाँ सशक्त और विकसित होती है। प्रतिमा से बच्चों की शक्ति बढ़ती है और शक्तिवान लोगों के पास रहने से प्रतिमा की शक्ति भी बढ़ती है। गुरु जी कहते हैं कि शक्ति एक चुम्बक है, जिसके साथ रखो, वह भी चुम्बक बन जाता है, लेकिन हर पत्थर पर उसका असर नहीं होता, उसके लिए तो विशेष हरिताष्म पत्थर ही चाहिये। जब गुरु जी की वह प्रतिमा टूटी तो उसकी कुछ धूल मैं अपने साथ ले गया और उसे मिला कर मैंने नटराज की एक मूर्ति बनायी। पहले उसकी शक्ति हलकी थी लेकिन आज, क्योंकि मेरे साथ अन्य नौ शक्तिवान बच्चे रहते हैं, हमारे सामिप्य से हमारे नटराज की शक्ति भी बढ़ गयी है", त्री ने उसे समझाया।

"यानि, यामागुचि दादा जी, अगर उस मूर्ति के बदले में कुछ शक्तिवान लोगों को खोज कर अपने साथ रखते तो भी हमारी शक्ति बढ़ कर विकसित हो जाती?”

त्री ने सिर हिला कर हामी भरी। तब तक वह लोग लखमीपारा गाँव पहुँच गये थे। वहाँ त्री ने लोगों से शंखासुर पहाड़ी के बारे में पूछा लेकिन किसी को उस पहाड़ी के बारे में नहीं पता था। किसी ने सुझाव दिया कि वह मन्दिर के पुजारी जी से पूछे तो वह उस मन्दिर की ओर गये।

वह मन्दिर एक विशालकाय पीपल के वृक्ष के नीचे बना था, जिसके आसपास लाल मौली के धागे बँधे थे और पास में एक चबूतरे पर राधा-कृष्ण की मूर्ति रखी थी। बूढ़े पंडित जी बोले, “बहुत दिनों के बाद आज शंखासुर पहाड़ी का नाम सुना। पिछले दस-पंद्रह सालों में यहाँ बहुत से नये लोग, बाहर से आ कर बस गये हैं, उन्हें यह पुराने नाम नहीं मालूम, उन्होंने जगहों को अपने नये नाम दिये हैं।" फिर, उस पहाड़ी का रास्ता बताते हुए वह बोले, “उस तरफ ध्यान से जाना। वहाँ गैंडों के सींग काटने वाले तस्कर, हाथों में हथियार लिये घूमते हैं। अगर वैसा कोई व्यक्ति दिखे तो खतरा मत लेना, क्योंकि वह लोग तुम्हें जान से मार कर तुम्हारी लाशों को जंगल में फ़ैंक देंगे तो महीनों उसे खोजते रहेंगे। उधर एक

दूसरा खतरा दलदल का भी है, जहाँ कोई बड़ा कीचड़ जैसा कुछ दिखे तो उसके किनारे से चलना, जल्दबाजी करके उसके बीच में मत जाना। दलदल में फँस गये तो मृत्यु निश्चित है।"

त्री ने पूछा, "पंडित जी, शंखासुर पहाड़ी के आसपास कोई गुफाएँ भी हैं?"

वह बोले, "मैंने गुफाओं की बात तो कभी नहीं सुनी, लेकिन पिछले पचास सालों से यह संरक्षित क्षेत्र है, भीतर अगर तुम्हें काज़ीरंगा के गार्ड पकड़ लें और उन्हें पता चले कि तुम यहाँ के गाँव के नहीं हो, तो जुर्माना लगता है, इसलिए बाहर वाले लोग इधर घूमने नहीं जाते। लेकिन यहाँ अगर गुफाएँ होंगी तो शायद उन तस्करों को या पार्क में काम करने वाले गार्डों को उसका पता होगा।"

वहाँ से चले तो त्री ने ओरी से कहा, "डर तो नहीं गये? तुम चाहो तो होटल लौट सकते हो, आज मैं आगे जा कर पता लगा कर आता हूँ और अगर पता चल गया तो कल हम दोनों साथ में वहाँ जा सकते हैं।"

ओरी ठहाका मार कर हँसा, बोला, "क्या मेरे चेहरे से लगता है कि मैं डर गया हूँ? मैं हर रोज़ केन-दो, क्यू-दो और नागीनाताजुत्सु की लड़ाई का अभ्यास करता हूँ। मेरे पूर्वज एक समुराई योद्धा थे, शायद तुमने भी उन सैंतालिस समुराइयों की कहानी सुनी होगी? उस पर हॉलीवुड वालों ने एक फ़िल्म भी बनायी थी। क्या तुम उस कहानी को जानते हो?"

त्री ने सिर हिला कर मना किया तो वह बोला, "हमारे शहर का नाम है अक्को, करीब तीन सौ साल पहले हमारे एक राजा थे, लॉर्ड असानो, जिनका धोखे से खून हुआ था। मेरे पूर्वज ओकानो उनके समुराई थे। नियम के अनुसार, जब स्वामी मरता है तो उसके समुराई आत्महत्या कर लेते हैं, इसलिए उन्हें भी आत्महत्या करनी चाहिये थी। लेकिन उन्होंने आत्महत्या करने के बजाय, पहले अपने स्वामी की हत्या का बदला लिया और फिर आत्महत्या की थी। उनकी यह कहानी पूरे जापान में प्रसिद्ध हो गयी और आज भी अक्को में राजा के किले के पास, उन सैंतालिस समुराईयों का मन्दिर बना है।"

त्री बोला, "इसका मतलब है कि अगर समुराई काम में असफल हो जाये, तो उसे आत्महत्या करनी पड़ती है? मान लो कि अगर तुम्हें वह मूर्ति न मिले तो क्या तुम्हें भी आत्महत्या करनी पड़ेगी?"

ताकानोरी ने लम्बी साँस ली, बोला, "आजकल समुराई नहीं हैं, और अब पहले जैसी पेट में तलवार घुसा कर आत्महत्या करने की परम्परा भी नहीं है। वैसे तो मैं याकूज़ा हूँ, एक अपराधी गैंग के लिए काम करने वाला खूनी। लेकिन यामागुचि दादा जी ने मुझे पाला-पोसा है, मैं उनके साथ गद्दारी नहीं कर सकता। मैं उस मूर्ति को खोजने में अपनी जान भी लगा दूँगा और जब तक वह नहीं मिलेगी, मैं उसे खोजना नहीं छोड़ूँगा। यही मेरा धर्म है।"

*****

26. शंखासुर पहाड़ी, काज़ीरंगा, असम, 7 मार्च 2026

ओरी बोला, “तुमसे एक अन्य बात पूछना चाहता था। दिल्ली और कलकत्ता में लोग तुरंत जान जाते थे कि मैं विदेशी हूँ, वह मुझसे अंग्रेज़ी में बात करते थे, जबकि यहाँ लोग मेरी ओर ध्यान नहीं देते, कुछ तो मुझसे यहाँ की भाषा में बात करते हैं, और जब वह देखते हैं कि मैं उनकी बात नहीं समझ पा रहा तो सोचते हैं कि मैं नाटक कर रहा हूँ, ऐसा क्यों है?”

त्री मुस्कराया, “आभा का चेहरा क्या तुमसे बहुत भिन्न है? वह भी थोड़ी सी जापानी नहीं लगती?”

ओरी बोला, “नहीं, वह जापानी नहीं लगती, उसका चेहरा म्यंमार और थाईलैंड के लोगों से अधिक मिलता है।"

त्री हँसा, बोला, “चीनी, जापानी, म्यंमार, थाईलैंड, मुझे उनके चेहरों को अलग-अलग पहचानना नहीं आता, मुझे सभी एक जैसे लगते हैं।"

ओरी भी हँसा, “वैसे ही, मुझे भी तुम हिन्दुस्तानी आपस में एक जैसे लगते हो।"

"लेकिन तुम नक्शे में देखो तो यहाँ पर एक ओर भूटान और चीन हैं, दूसरी ओर म्यंमार और थाईलैंड हैं। यहाँ की बहुत सी जनजातियाँ आज की राष्ट्रीय सीमाओं से बँट गयी हैं लेकिन उनके लोग नहीं बँटे हैं। शायद इसलिए तुम्हें देख कर यहाँ के लोग सोचते हैं कि तुम भी हमारी किसी जन-जाति के होगे", त्री ने कहा।

वह दोनों ऐसे ही बातें कर रहे थे कि अचानक आगे से एक गोली चलने की आवाज़ आई।

त्री रुक गया, बोला, “पंडित जी कह रहे थे कि यहाँ पर गैंडों के सींग चुराने वाले तस्कर खतरनाक हो सकते हैं, हमें आगे नहीं जाना चाहिये?”

ओरी बोला, “अगर वह लोग कोई गलत काम कर रहे हैं, तो हमें उन्हें रोकना चाहिये।"

लेकिन त्री आगे नहीं बढ़ा, बोला, “जब बचने का कोई और रास्ता नहीं हो तब मैं लड़ सकता हूँ, लेकिन मैं जबरदस्ती किसी से लड़ने नहीं जाऊँगा।"

ओरी बोला, “यह तो कायरता होगी, क्या तुम कायर हो? देखोगे भी नहीं कि वहाँ कौन हैं और वह क्या कर रहे हैं?”

त्री ने लम्बी साँस ली, बोला, “ठीक है, तुम रुको, मैं अदृश्य हो कर देख कर आता हूँ, फिर यह निर्णय लेंगे कि कुछ करना चाहिये या नहीं।"

जैसे ही उसकी शक्ति जागृत हुई वह अदृश्य हो कर आगे देखने चला गया। ओरी पाँच मिनट रुका, फिर वह भी जिस ओर से गोली चलने की आवाज आई थी उसी ओर बढ़ा।

वहाँ से करीब दो किलोमीटर आगे जा कर उन्हें कुछ आदमी दिखे। एक फोरैस्ट गार्ड जीप में उनका पीछा कर रहा था। उसके एक हाथ में वॉकी-टॉकी थी जिससे वह अपने साथियों को बुला रहा था। उसकी जीप के सामने, पेड़ों के बीच में, तीन आदमी भाग रहे थे, जिनके चेहरे रुमालों से छिपे थे और जिनके हाथों में बन्दूकें थीं। अचानक एक पेड़ पर छुपा हुआ एक आदमी, नीचे जाती हुई फोरैस्ट गार्ड की जीप पर कूदा। उसके हाथ में एक चाकू था, जिससे उसने गार्ड पर हमला कर दिया। गार्ड के बायें कँधे पर चाकू का घाव लगा तो उसके हाथ से उसका वॉकी-टॉकी छूट कर गिर गया, उसकी कमीज़ तुरंत खून से लाल हो गयी और उसने जीप को रोक कर उतरने की कोशिश की।

जो तीन आदमी आगे भाग रहे थे, वे मुड़ कर जीप की ओर आये, उनमें से एक बोला, “सिपाहिया जी, क्यों मरने का शौक लगा है जो बीच में अटका डालने के लिए कूद पड़े?”

दूसरा आदमी बोला, “इस साले को पेड़ से बाँध दो, बाद में इसके साथी आ कर इसे खोल लेंगे। वह गैंडा उस तरफ भागा है, हमें उसका पीछा करना है।"

एक आदमी के पास रस्सी थी, उसने उससे गार्ड के हाथ बाँधे, और उसे एक पेड़ की तरफ खींचने लगा तो दर्द से गार्ड चिल्लाया, तब उस आदमी ने अपनी बन्दूक के कुन्दे से उस गार्ड के सिर पर ज़ोर से मारा तो वह बेहोश हो गया।

पास में छिपा हुआ त्री सब कुछ देख रहा था, उसने सोचा कि जब वह लोग गार्ड को छोड़ कर जायेंगे तो वह उसकी रस्सी खोल देगा, लेकिन ओरी तुरंत पेड़ों के बीस से बाहर निकल आया, चिल्ला कर बोला, "उस आदमी को छोड़ दो।"

चूँकि ताकानोरी अंग्रेज़ी में बोल रहा था और उन आदमियों को शायद उसकी बात समझ नहीं आयी, उनमें से एक ने अपनी बन्दूक उठायी और उसकी ओर निशाना साधा। तब त्री ने चिल्ला कर ओरी को पुकारा। उन आदमियों ने उसकी आवाज़ सुनी लेकिन वह दिखाई नहीं दिया, वह आसपास देखने लगे। इतनी देर में ताकानोरी ने अपनी आस्तीन से एक चाकू को निकाल कर, उसे निशाना साधने वाले तस्कर की ओर फैंका। उसका निशाना इतना सधा हुआ था कि काफी दूर होने पर भी वह चाकू सीधा उस आदमी की गर्दन में घुस गया। जब वहाँ से खून का फुव्वारा निकला तो उस आदमी के हाथ से उसकी बन्दूक छूट कर गिर गयी।

अपने साथी को नीचे तड़पता देख कर बाकी दोनों आदमियों ने भी अपनी बन्दूकें उठायी तो ओरी ने आस्तीन से दो चाकू और निकाल लिए, बोला, "समझदार हो तो बन्दूकें नीचे कर लो, वरना तुम दोनों की जान भी जायेगी।" यह कह कर वह निडर हो कर उनके सामने सीना तान कर खड़ा हो गया। उसकी निडरता देख कर वह दोनों आदमी थोड़ा हिचकिचाये, तब अचानक त्री भी वहाँ प्रकट हो गया, और बंगाली में बोला, "यह आदमी बड़ा निशानेबाज है, मेरी मानो तो यहाँ से तुरंत भाग जाओ, वरना तुम दोनों की मृत्यु भी आज ही होगी।"

त्री को वहाँ अचानक प्रकट होता देख कर वह दोनों घबरा गये और अपने घायल साथी को वहीं छोड़ कर, पीछे पेड़ों में घुस कर भाग गये। उनका तीसरा साथी जो जिसने गार्ड को चाकू मारा था, वह जीप पर खड़ा सब कुछ देख रहा था, वह भी वहाँ से उतर कर भागा।

ओरी ने घायल तस्कर की गर्दन से अपने चाकू को निकाल कर उस पर लगे खून को उसकी कमीज़ से पोंछा और वापस अपनी आस्तीन में छुपा लिया, बोला, "इस आदमी का बहुत सा खून बह गया है, इसका बचना मुश्किल होगा।"

त्री ने आगे बढ़ कर बेहोश गार्ड के हाथ से रस्सी खोली फिर उसकी कमीज़ को खोल कर उसके कँधे के घाव को देखा। वह चाकू जहाँ घुसा था, शायद वहाँ कोई खून की नस थी जिससे खून बहता जा रहा था। उसके बहते खून को देख कर त्री वहाँ मूर्ति की तरह खड़ा रह गया, उसका चेहरा फीका पड़ गया।

ओरी ने पीछे से आ कर, अपनी जेब से एक साफ रुमाल निकाल कर उसे पहले गार्ड के घाव पर दबाया, फिर उसे कँधे पर बाँध कर टाईट खींच दिया। फिर उसने त्री से कहा, "उस वॉकी-टॉकी से इसके गार्ड साथियों को खबर करके यहाँ बुलाओ, इसे जल्दी अस्पताल ले जाना ज़रूरी है, नहीं तो यह भी नहीं बचेगा।"

त्री ने वॉकी-टॉकी का बटन दबा कर "हैलो, हैलो" बोला तो उसे उत्तर मिला। ओरी ने उसे याद दिलाया, "उन्हें हमारे बारे में कुछ मत कहना।"

त्री ने वॉकी-टॉकी से गार्ड के साथियों को उसकी और तस्करों की लड़ाई की बात बतायी, कहा कि घायल गार्ड को जल्दी से अस्पताल ले जाना ज़रूरी है। जब उन्होंने उससे पूछा कि वह कौन है तो उसने वॉकी-टॉकी को बंद कर दिया।

ओरी बोला, "हम जितना कर सकते थे, उतना कर दिया, अब हमें यहाँ से जाना चाहिये।" उन दोनों के वस्त्रों पर भी खून के दाग लगे था, उनकी ओर इशारा करके उसने कहा, "हो सकता है कि वह गार्ड कुत्तों के साथ आयें और हमें खोजने की कोशिश करें। कुत्ते सूंघ कर देख लेंगे कि हम किधर गये हैं। उनसे बचने के लिए हमें पानी में चलना चाहिये।"

दोयाँग नदी वहाँ से अधिक दूर नहीं थी और उसके किनारे पर पानी गहरा नहीं था, उनके घुटनों से नीचे आ रहा था। वह उसमें चलते हुए लखमीपारा की ओर बढ़े।

त्री को उस लड़ाई से बहुत धक्का लगा था। अभी तक उसने गुरु जी द्वारा सिखायी लड़ने की कला को व्यायाम और अभ्यास की तरह से लिया था, उसने आजतक कभी किसी से इस तरह की मार-पिटाई नहीं की थी, न ही कभी इस तरह से खून बहाते घायल लोगों को मरते हुए देखा था। वहाँ से जाते हुए, बार-बार उसके सामने तस्कर की गर्दन में घुसे चाकू और फुव्वारे की तरह निकलते लाल खून की छवि उभर आती थी।

ओरी उसकी मनोस्थिति को समझ गया, बोला, "त्रिनेत्र, शायद आज तुमने पहली बार लड़ाई में किसी को इस तरह से मरते देखा है? तुम्हें इसके बारे में सोचने के लिए बाद में समय मिलेगा, लेकिन इस समय हमें अपने बचाव के बारे में सोचना है। हमारे कपड़ों पर खून लगा है और हो सकता है कि उन तस्करों के जासूस गाँव में हों, या हमारे होटल में भी

हों। बेहतर होगा कि हम इस समय गाँव से हो कर नहीं लौटें और किसी तरह से होटल से अपना सामान ले कर यहाँ से चले जायें।"

उसकी बात सुन कर त्री थोड़ा होश में आया।

तब उसने अपने भीतर गार्गी की आवाज़ सुनी, वह कह रही थी, "दादा, आप लोग गाँव की ओर मत जाईये। बल्कि छोटी नदी को छोड़ कर, उत्तर दिशा में ब्रह्मपुत्र नदी की ओर आईये। हमारे पास नाव है, हम आप को नदी के किनारे किसी घाट से ले लेंगे। आप को होटल लौटने की भी आवश्यकता नहीं है, आभा दीदी वहाँ से सारा सामान ले आयेंगी।"

*****

27. बिश्वनाथ चरियाली, असम, 7 - 8 मार्च 2026

अँधेरा हो गया था। उनकी मोटरबोट बिश्वानाथ चरियाली के पूर्व में नदी किनारे खड़ी थी। वसंत की तबियत ठीक नहीं थी और गार्गी थकी हुई थी, वह दोनों सोने चले गये थे। बाकी के लोग नाव के डैक पर बैठे बातें कर रहे थे।

त्री बोला, “अब हम लोग गुरु जी की प्रतिमा को कैसे खोजेंगे? काज़ीरंगा के गार्ड पर हमला हुआ है और एक तस्कर की मृत्यु हुई है। पुलिस जाँच कर रही होगी कि क्या हुआ और किसने किया, इसलिए अगर हम वहाँ लौटें तो पुलिस हमें पकड़ सकती है।"

रंगनाथ बोला, “पहले आप लोग लखमीपारा के पश्चिम में ठहरे थे, इस बार हम वहाँ से कुछ देर, पूर्व की ओर कोई होटल खोज सकते हैं, हालाँकि वहाँ से रास्ता कुछ लम्बा पड़ेगा। दूसरी मुश्किल है कि पूरे क्षेत्र में यह खबर फैल चुकी होगी, इसलिए लोग आप को पहचान कर तुरंत पुलिस को खबर कर सकते हैं।"

आभा बोली, “जब वह गार्ड होश में आयेगा तो वह बतायेगा कि उस पर तस्करों ने हमला किया था, पर मेरे विचार में वह तस्कर पुलिस को रिपोर्ट लिखवाने नहीं जायेंगे कि उन पर किसने हमला किया था। इसलिए हो सकता है कि पुलिस तुम्हारी नहीं, केवल तस्करों की खोज कर रही हो। किसी ने तुम दोनों को वहाँ नहीं देखा, अधिक से अधिक, पंडित जी पुलिस को बता सकते हैं कि तुम दोनों उस दिन शंखासुर पहाड़ी की ओर गये थे। इसलिए पुलिस तुमसे पूछ सकती है कि तुमने वहाँ क्या देखा? मेरे विचार में एक-दो दिन में यह बात ठंडी हो जायेगी, फिर तुम लोग अपनी खोज पर जा सकते हो।"

ताकानोरी कुछ नहीं बोला लेकिन उसके चेहरे से स्पष्ट था कि वह गुस्से में है।

त्री बोला , “लेकिन वह तस्कर इसी क्षेत्र से हैं, उन्होंने हमें देखा है, वह हमें खोज रहे होंगे। अगर उनके हाथ लग गये तो हमसे कुछ पूछेंगे नहीं, सीधा गोली मार देंगे।"

आभा बोली, “तुम ठीक कहते हो, इस समय कुछ निर्णय नहीं लेना चाहिये। कल सुबह अखबार में देखेंगे कि क्या लिखा है और अगर ज़रूरत पड़ी, तो मैं, रंगनाथ और गार्गी, हम कोहोरा में पता करने जा सकते हैं। वहाँ के टैक्सी ड्राइवर, पर्यटकों को काज़ीरंगा की सफारी के लिए ले कर जाते हैं, उनसे भीतर की खबर मिल जायेगी। उसके बाद ही निर्णय लेंगे कि क्या करें।"

ओरी ने मोटरबोट वाले को बिश्वानाथ चरियाली में बियर खरीदने भेज दिया और रात को देर तक डैक पर बैठ कर बियर पीता रहा। बाकी सब लोग सोने गये। नाव में केवल एक कमरा था, उसमें मोटी चद्दरों से बने हैम्मोक साथ-साथ लटक रहे थे, सभी उन पर सोये।

अगले दिन सुबह, त्री और रंगनाथ शहर से अखबारें और नाश्ता खरीदने गये। अखबार से पता चला कि गार्ड बच गया है और उसकी अंतिम स्मृति थी कि एक तस्कर उसे पेड़ से बाँधने के लिए घसीट रहा था। काज़ीरंगा के एक अधिकारी ने उस अज्ञात व्यक्ति को धन्यवाद दिया जिसने रुमाल बाँध कर गार्ड का खून बहना रोका था और उसकी जान बचायी थी। पुलिस के अनुसार गार्ड को बचाने वाला व्यक्ति, शायद तस्करों का कोई प्रतिद्वंदी तस्कर ही था।

ओरी बोला, “अगर उन्हें हमारे बारे में कुछ नहीं मालूम, तो हम आज वहाँ पर लौट सकते हैं।"

वसंत उनकी बात सुन रहा था, वह बोला, “दादा, अगर आप को काज़ीरंगा के आसपास कुछ खोजना है तो हम पेड़ों की सहायता से, यहीं से उस जगह को खोज सकते हैं।"

त्री बोला, “मैंने भी इस बारे में सोचा था लेकिन ताकानोरी सान उस जगह को स्वयं देखना चाहते हैं।"

वसंत बोला, “इधर-उधर भटकने से अच्छा है कि पहले मैं उस जगह को खोज लूँ, फिर आप दोनों सीधा वहाँ जा सकते हो।"

यह बात सुन कर ओरी का गुस्सा कुछ कम हुआ।

वसंत बोला, “आप मुझे बताओ कि हम किस दिशा में, क्या खोज रहे हैं?”

त्री ने टैबलेट बाहर निकाली और उस पर लखमीपारा गाँव को खोजा, उसे दिखाते हुए बोला, “यहाँ से पूर्व दिशा में जा कर एक दलदल-झील है, वहाँ के लोग उसे डाफलोंग बील कहते हैं। उसके पश्चिमी किनारे पर जो पहाड़ी है, वह शंखासुर है।"

वसंत ने आँखें बंद कर लीं और उस दिशा में ध्यान लगाया।

ओरी ने फुसफुसा कर आभा से पूछा, “क्या पेड़ भी बोलते हैं? उन्हें डाफलोंग दलदल-झील का नाम बताओ तो वह बता देंगे कि वह किधर है?”

आभा मुस्करायी, “वसंत बता रहा था कि उसे कुछ कहना नहीं पड़ता, वह केवल अपनी संचेतना को पेड़ों की संचेतना से जोड़ देता है, पेड़ अपने आप जान लेते हैं कि वह क्या पूछ रहा है।"

गार्गी ने त्री से पूछा, “दादा, यह दलदल-झील क्या होता है?”

“जब वहाँ बारिश नहीं होती और पानी कम हो जाता है तो वहाँ दलदल रह जाती है, पर बारिश के मौसम में वह झील बन जाती है।"

वसंत ने आँखें खोलीं, बोला, “वह पहाड़ी मिल गयी, उस पर पेड़ कम हैं, अधिकतर झाड़ियाँ हैं। इस समय पहाड़ी के साथ वाली दलदल-झील में पानी कम है, और वहाँ दलदल में एक हिरण फँसा हुआ है, वह अधिक समय तक जीवित नहीं रह पायेगा।"

त्री ने आभा से पूछा, "कविता की आगे की पंक्तियाँ क्या हैं?” तो उसने वह पंक्तियाँ सुनायीं -

> “कंदरा में गूँजती चौदह ध्वनियाँ पिनाक की,
> लौटी सति पर्वतराज पिता के घर, त्रिनेत्र कहाँ है?”

वह बोला, “यानि गुफा में डमरू की चौदह ध्वनियाँ गूँज रही हैं, इसका मतलब है कि वहाँ कोई लम्बी गुफा है जिसमें चौदह कक्ष हैं, या फिर चौदह गुफाएँ हैं जो शायद डमरू की आकृति में बनी हैं। शंखासुर पहाड़ी किस दिशा में है? उससे हमें उन गुफाओं की दिशा दिखनी चाहिये।"

वसंत बोला, “उस पहाड़ी के पूर्व में तो दलदल है और पश्चिम में लखमीपारा, मैं उसके उत्तर और दक्षिण में खोज कर सकता हूँ कि वहाँ कोई गुफाएँ हैं या नहीं।" यह कह कर वह फिर से ध्यान में लीन हो गया। कुछ देर के बाद उसने आँखें खोलीं, बोला, “वहाँ आसपास कोई गुफा नहीं मिली। उस पहाड़ी के आसपास बहुत देखा लेकिन वहाँ पर दूर-दूर तक कोई गुफा नहीं है।"

ओरी को विश्वास नहीं हुआ, बोला, “शायद यह बच्चा उस क्षेत्र को ठीक से देख नहीं पाया? हमें खुद वहाँ जा कर उसकी जाँच करनी चाहिये।"

वसंत कुछ नहीं बोला, लेकिन त्री ने कहा, “यह खोज वसंत ने नहीं की है, यह इस क्षेत्र के हज़ारों पेड़ों और पौधों का काम है। ऐसा हो ही नहीं सकता कि यहाँ कोई गुफा हो और उसके आसपास के पेड़-पौधों को उसके बारे में पता नहीं हो। अगर वसंत कह रहा है कि वहाँ कोई गुफा नहीं है तो हमारा वहाँ जाना बेकार है।"

ओरी बोला, “लेकिन अगर गुफा वहाँ नहीं है, तो हम क्या करेंगे?”

“हमें फिर से कविता के अर्थ को समझने की कोशिश करनी चाहिये, शायद उनकी कोई बात हमने ठीक से नहीं समझी। आभा, गुरु जी का कागज़ निकालो, हम उस पर दोबारा विचार करेंगे।"

ओरी बोला, “मुझे लगता है कि तुम लोग कोई ड्रामा कर रहे हो। तुम्हारे गुरु ने तुम्हें अपना उत्तराधिकारी बनाया है लेकिन मूर्ति के बारे में स्पष्ट लिखने के बजाय एक पहेली बना दी है, जो तुम्हारी समझ में नहीं आ रही, यह क्या बात हुई?”

“गुरु जी ज्ञानी हैं, वह जैसा उचित समझते हैं, वैसा करते हैं", रंगनाथ बोला तो त्री ने इशारा करके उसे चुप रहने के लिए कहा और ओरी से बोला, “तुम डरते हो कि अगर हमें वह मूर्ति नहीं मिलेगी तो तुम क्या करोगे। तुम्हारी यह चिंता व्यर्थ है, हम उसे अवश्य खोज लेंगे, हमें केवल थोड़ा सा समय चाहिये।"

लेकिन ताकानोरी का गुस्सा शाँत नहीं हुआ, बोला, “मेरे पास अधिक समय नहीं है।"

आभा उठी और पास जा कर उसके कँधे पर हाथ रखा तो वह चुप हो गया, वह बोली, “कल शाम को तुमने शायद कुछ अधिक बियर पी ली, इसलिए आज तुम चिड़चिड़े हो रहे हो। मैं तुम्हारे लिए दालचीनी और सौंफ वाली चाय बनाती हूँ, उससे तुम्हारा मन शाँत होगा और तुम्हें फायदा होगा।"

तभी गार्गी बोली, “मेरे विचार में हम लोग गलत जगह पर मूर्ति खोज रहे हैं।"

सब ने मुड़ कर उसकी ओर देखा। उसके हाथ में ओरी की टैबलेट थी और वह उस पर उस क्षेत्र के नक्शे को देख रही थी। बोली, “यहाँ देखो, इस द्वीप का क्या नाम है?”

*****

28. डमरू द्वीप, काज़ीरंगा, असम, 8 मार्च 2026

गार्गी ने कविता के शब्द दोहराये:

"चन्द्र-वधु के चरण-कमल, तीन दशानन कोसे
पद्मा की कमल-अँजुरी से बहता जल
विष्णु के शंख नाद से प्रज्जवलित अंबर के सप्त ऋषि
कंदरा में गूँजती चौदह ध्वनियाँ पिनाक की
लौटी सति पर्वतराज पिता के घर, त्रिनेत्र कहाँ है?
वहाँ जहाँ पर लाल बकरियाँ घास चरें।"

फिर बोली, "मेरे विचार में हमने कविता की पहली और अंतिम पंक्तियाँ सही समझी हैं, यानि कि हम काज़ीरंगा की बात कर रहे हैं। लेकिन 'पद्मा की कमल अँजुरी' का अर्थ लखमीपारा नहीं है, बल्कि लखमी चापोड़ी द्वीप है। इस नक्शे में देखो, उसके नीचे इस छोटे द्वीप की आकृति क्या शंख से नहीं मिलती? और जहाँ पर शंख की नोक है, ठीक उसके नीचे वाले द्वीप की आकृति आधे डमरू जैसी नहीं है?"

त्री ने टैबलेट ली, देखा और हँसा, बोला, "शाबाश गार्गी, शायद तुमने गुरु जी की पहेली को सही पहचाना है।"

ओरी बोला, "मुझे भी दिखाओ।"

गार्गी काज़ीरंगा आरक्षित क्षेत्र के पास ब्रह्मपुत्र नदी के द्वीपों की बात कर रही थी। उसने वसंत से कहा, "यह डमरू वाला द्वीप यहाँ से दक्षिण दिशा में है, तुम उस द्वीप के पेड़ों से पूछो कि वहाँ कोई गुफाएँ हैं या नहीं?"

वसंत ने आँखें बंद करके ध्यान लगाया, और कुछ क्षणों के बाद आँखें खोल कर बोला, "वहाँ पर बहुत सारी गुफाएँ हैं।"

ओरी उत्साहित हो कर बोला, "वह जगह यहाँ से बहुत दूर नहीं है, चलो हम अभी, इसी समय वहाँ चलते हैं।"

त्री ने एक मिनट के लिए सोचा, फिर बोला, "सबको वहाँ ले जाने की आवश्यकता नहीं है, मैं एक दूसरी मोटर बोट का प्रबंध करता हूँ, केवल मैं और ओरी ही वहाँ जायेंगे। अगर चाहे तो आभा हमारे साथ आ सकती है। "

गार्गी ने पूछा , "क्यों दादा? हम तुम्हारे साथ क्यों नहीं आ सकते?"

त्री बोला, "तुम सभी बच्चे मेरी ज़िम्मेदारी हो। कल जो हादसा हुआ, उसके बारे में तो तुमने सुना है। कब, कहाँ पर, कुछ अप्रत्याशित हो जाये, कुछ पता नहीं चलता। बेकार खतरा लेने से क्या फायदा? वैसे भी तुम मेरी चेतना से जुड़ कर मेरे साथ सब कुछ देख सकती हो, क्या वह काफी नहीं है?"

यह बात सुन कर बच्चे चुप हो गये, पर आभा बोली कि वह उनके साथ जायेगी। त्री ने घाट से एक अन्य मोटर बोट का प्रबंध किया और तीनों उस पर डमरू द्वीप की ओर निकल पड़े।

मोटर बोट वाले ने उसे कहा, "बाबू जी, वहाँ पर बहुत से घड़ियाल होंगे क्योंकि आजकल उनका मौसम चल रहा है। मैं वहाँ पर आप को उतार दूँगा लेकिन नाव को वहाँ रोक कर आप की प्रतीक्षा नहीं करूँगा, कहीं दूसरी जगह जहाँ घड़ियाल न हों, वहाँ रुकूँगा। जब आप लोगों का लौटने का समय हो तो मुझे फोन कर देना, मैं पंद्रह-बीस मिनट में आप को लेने पहुँच जाऊँगा।"

ओरी उनकी बात सुन रहा था, उसने त्री से पूछा, "यह किस जानवर की बात कर रहा है?"

त्री को मालूम नहीं था कि घड़ियाल को अंग्रेज़ी में क्या कहते हैं, बोला, "यह मगरमच्छ की एक प्रजाती है जो भारत की नदियों में मिलती है। मगरमच्छ के सिर का आगे वाला हिस्सा चपटा सा होता है, जबकि घड़ियाल के सिर का आगे वाला हिस्सा बहुत लम्बा और संकरा होता है, और उनकी नाक पर गेंद जैसा फूला हुआ एक गोल हिस्सा होता है जिसे हम लोग घड़ा कहते हैं और उसकी वजह से उन्हें घड़ियाल बुलाते हैं।"

मगरमच्छों की बात सुन कर ताकानोरी थोड़ा सा घबराया।

डमरू द्वीप तक पहुँचने में उन्हें करीब आधा घंटा लगा और वहाँ पहुँचने से पहले, दूर से ही उन्हें घड़ियालों की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। उनके फूले हुए नाक के घड़ों से 'घूँ-घूँ' की आवाज़ आ रही थी मानो वह खुर्राटे ले रहे हों। पास जा कर देखा तो द्वीप के रेतीले किनारे पर कम से कम पचास घड़ियाल धूप में घूँ-घूँ करते हुए आगे-पीछे घूम रहे थे।

मोटर-बोट वाला बोला, "मादा को आकर्षित करने के लिए यह आवाज़ नर-घड़ियाल करते हैं। बोलिये आप को कहाँ पर उतारूँ?"

त्री ने ओरी और आभा की ओर देखा। ओरी का चेहरा फीका पड़ गया था।

आभा बोली, "मैं इन जानवरों के बीच में नहीं जाना चाहती, तुम लोग उतर कर जहाँ घूमना है वहाँ घूम आओ।"

त्री ने मोटरबोट वाले से पूछा, "क्या इसके अतिरिक्त यहाँ उतरने की कोई अन्य जगह नहीं है? आप थोड़ा द्वीप का चक्कर लगाईये, शायद इससे आसान कोई दूसरी जगह मिल जाये?"

दिक्कत यह थी कि द्वीप के आसपास नुकीली चट्टाने थीं जिनकी वजह से वहाँ उतरना असम्भव था। द्वीप के आगे-पीछे चक्कर लगा कर उनकी मोटर-बोट वापस घड़ियालों की जगह पर ही लौट आई।

त्री ने आभा से कहा, "तुम अपनी शक्ति से इन घड़ियालों से सम्पर्क बना कर देखो, शायद तुम्हारी बात मान कर, यह यहाँ से कुछ देर के लिए हट जायें?"

वह बोली, "तुम तो जानते हो कि मुझे अपनी शक्ति को नियंत्रित करना नहीं आता, अभी तक जितनी बार भी उस शक्ति ने काम किया है, वह मेरे भय की वजह से किया है।"

त्री बोला, "हम नाव की साइड में एक रस्सी की सीढ़ी लटका देते हैं, तुम उस पर थोड़ा सा नीचे, उनके करीब जाओ, शायद तुम्हारे पास होने से वह शाँत हो जायें।"

इस बात को सुन कर आभा घबरा गयी, बोली, "नहीं, वह मुझसे नहीं होगा। इनके दाँत देखो, किसी घड़ियाल ने उछल कर मेरी टाँग को पकड़ लिया तो?"

त्री बोला, "बस थोड़ी सी कोशिश करो, पाँच मिनट के लिए। प्लीज़!"

तो आभा और घबराई। शायद इस बात से उसकी शक्ति जागृत हो गयी और सभी घड़ियाल उनकी नाव की ओर आने लगे।

उनके झुँड को नाव की ओर आता देख कर ओरी भी परेशान हो गया, बोला, "उस पर जबरदस्ती नहीं करो, वरना यह मगरमच्छ हमारी मोटर-बोट में चढ़ आयेंगे।"

मोटर-बोट वाला भी डर गया, बोला, "साहब यह तो खतरनाक हो रहे हैं", और बोट को द्वीप से कुछ दूर ले आया।

त्री ने आभा का हाथ पकड़ लिया, बोला, "तुम घबराओ नहीं, जैसे मैं कहता हूँ तुम वैसे करो। वहाँ जाने की और नीचे उतरने की तुम्हें कोई आवश्यकता नहीं है। तुम्हारे डरने से वह घड़ियाल तुम्हें बचाने के लिए नाव की ओर आने लगे, इससे हमें यह पता चलता है कि उन पर तुम्हारी शक्ति का असर हो रहा है। मैंने यही देखने के लिए तुमसे रस्सी की सीढ़ी वाली बात कही थी।"

आभा ने भयभीत आँखों से उसकी ओर देखा। उसने उसे अपने पास एक कुर्सी पर बिठाया और धीरे-धीरे बोलने लगा, "तुम आँखें बंद कर लो और अपनी साँस पर ध्यान दो, धीरे-धीरे लम्बी साँस लो। जैसा मैं कहता हूँ, तुम वैसा करो, मैं तुम्हें नाव से उतरने के लिए नहीं कह रहा। मैंने सभी बच्चों को अपनी शक्ति पर नियंत्रण करना सिखाया है, मैं तुम्हारे साथ भी एक बार कोशिश करना चाहता हूँ। तुम बस आँखें बंद करो, धीरे-धीरे साँस लो और अपनी साँस पर ध्यान दो, कुछ और नहीं सोचो, उन घड़ियालों को भूल जाओ।"

कुछ समय बाद जब आभा की साँस की गति धीमी हुई तो द्वीप पर जमा घड़ियाल भी वापस तट की ओर लौट गये और पहले की तरह इधर-उधर घूमने लगे।

तब त्री ने पूछा, "अब तुम अपने मन को स्थिर करके देखो कि क्या तुम उन घड़ियालों को अपने आसपास महसूस कर सकती हो? अगर नहीं, तो कोई बात नहीं, तुम वापस अपनी साँस पर ध्यान दो।" हर पाँच मिनट के बाद, वह उससे यही बात पूछता था कि वह उन घड़ियालों को महसूस कर सकती है या नहीं?

करीब आधे घंटे के बाद जब उसने पूछा तो आभा ने धीरे से सिर हिलाया कि हाँ, वह घड़ियालों को महसूस कर रही है।

तब त्री बोला, “अब सोचो कि वह सभी घड़ियाल दायीं ओर जा रहे हैं। अपनी कल्पना में देखो कि सभी घड़ियाल तट के दायीं ओर जा रहे हैं। थोड़ी देर तक यही कल्पना करने की कोशिश करो।"

सचमुच द्वीप पर इकट्ठे घड़ियाल तट के दायीं ओर जाने लगे और बायीं ओर वाला हिस्सा खाली होने लगा। तब उसने आभा से आँखें खोलने के लिए कहा और उसे दिखाया, “वह देखो, जैसा तुमने सोचा, वह सभी सचमुच दायीं ओर चले गये। इसका मतलब है कि वह तुम्हारी बात सुन और समझ रहे हैं।"

आभा ने घड़ियालों को देखा तो आश्चर्यचकित रह गयी, बोली, “यह मेरे सोचने से हुआ?”

त्री बोला, “इस समय तुमने आँखें खोल ली हैं फिर भी देखो वह वहीं पर रुके हुए हैं, इस ओर नहीं आ रहे। तुम दोबारा बैठ कर पहले की तरह ध्यान लगाओ और फिर से उन्हें दायीं ओर जाने के लिए कहो। हमें पाँच-दस मिनट का समय मिल जायेगा तो हम भाग कर पीछे पहाड़ी वाले हिस्से तक तट से कुछ ऊपर पहुँच जायेंगे, उसके बाद तुम ध्यान तोड़ सकती हो। जब हम लौटेंगे तो तुम्हें वहीं पहाड़ी से इशारा करेंगे और अगर आवश्यकता होगी तो तुम दोबारा ध्यान लगा कर उन्हें दायें करवा देना।"

फिर उसने मोटर-बोट वाले से कहा, “आप तैयार रहिये, जब सब घड़ियाल तट के दायीं ओर जायेंगे तो आप इस बोट को तट के बायीं ओर, जितना करीब ले जा सकते हैं, ले जाईये।"

*****

29. डमरू द्वीप, काज़ीरंगा, असम, 8 मार्च 2026

जब वह दोनों नाव से उतरे, उस समय तट के उस हिस्से में एक भी घड़ियाल नहीं था, सभी दूसरी ओर चले गये थे, लेकिन ओरी फिर भी घबरा रहा था, उसने हाथ में अपनी तलवार पकड़ी हुई थी।

त्री ने उसका हाथ पकड़ लिया और रेत पर भागते हुए, उसे साथ खींचता हुआ तेज़ी से पहाड़ी की ओर बढ़ा। पहाड़ी के बीच-बीच में कुछ काली नुकीली चट्टानें निकल रही थीं, उन पर पैर टिका कर वह दोनों तेज़ी से ऊपर चढ़ गये। वहाँ पहुँच कर देखा कि ऊपर कोई घड़ियाल नहीं थे, तो त्री ने मुड़ कर मोटरबोट की ओर हाथ हिला कर इशारा किया, और उन्हें वहाँ से जाने के लिए कहा।

घड़ियालों से बच कर निकल आने से ओरी भी खुश हो गया, बोला, "आभा की शक्ति तो बहुत काम की है।"

त्री ने अपनी जेब से वसंत का बनाया नक्शा निकाला जिस पर गुफाएँ बनी हुई थीं और उसे ओरी को दिखाया, बोला, "इस समय, यहाँ पर हम लोग डमरू के बीच के संकरे हिस्से में हैं, जबकि यह गुफाएँ द्वीप के उत्तरी और दक्षिणी किनारों की ओर हैं। हमें चुनना है कि हम उत्तर से शुरु करें या दक्षिण से, तुम क्या कहते हो, हम किस ओर जायें?"

ओरी बोला, "अगर मुझे गुफाओं को नम्बर देना हो तो मैं बायें से, यानि दक्षिण से शुरु करूँगा। इसलिए हमें बायें जा कर, वहाँ से गिन कर, चौदही गुफा को खोजना चाहिये। अगर उसमें मूर्ति नहीं मिलेगी, तो हम उत्तर से शुरु करके चौदहवीं गुफा को खोज सकते हैं।"

त्री कुछ नहीं बोला, तुरंत बायीं दिशा में चल पड़ा। ओरी उसके पीछे-पीछे आया, बोला, "क्या यह सब ब्रह्मपुत्र नदी के द्वीप हैं? यह नदी तो बहुत बड़ी लगती है, इसका पाट कई किलोमीटर चौड़ा लगता है।"

"हाँ, यहाँ पर नदी का पाट छह-सात किलोमीटर चौड़ा है और यह नदी धाराओं में बँट कर बह रही है, इसलिए धाराओं के बीच में इसमें बहुत से द्वीप हैं", त्री ने बताया, "लेकिन जब बारिश का मौसम आता है, तब नदी के पानी का स्तर बढ़ जाता है और छोटे वाले सारे द्वीप पानी में पूरे डूब जाते हैं। केवल यह बड़े द्वीप, जहाँ पहाड़ियाँ है, चट्टाने हैं, यह पूरे नहीं डूबते और तब इस डमरू द्वीप पर उतरना कठिन हो जाता होगा।"

पंद्रह-बीस मिनट तक चल कर जब वह गुफाओं वाले हिस्से में पहुँचे तो देखा कि वहाँ की चट्टानें सफेद, सलेटी और मटमैले से हरे रंग के पत्थर की थीं, और वह पहले वाली काली चट्टानों की तरह नुकीली भी नहीं थीं। सदियों की सीली हवा और पानी की वजह से घिसते-घिसते उन चट्टानों का नुकीलापन खत्म हो गया था। वहाँ ऊँची-नीची पहाड़ियाँ थीं, जिनके बीच में गुफाएँ दिख रही थीं। गुफाओं के बीच में पगडँडियाँ दिख रही थीं।

त्री ने इशारा किया और बोला, "इन पगडँडियों को देखो, इनका मतलब है कि यहाँ पर श्रद्धालु आते हैं। शायद वह घड़ियाल यहाँ सारा साल नहीं रहते, केवल अँडे देने के समय आते हैं और फिर चले जाते हैं। क्योंकि अगर वह घड़ियाल यहाँ सारा साल रहते हों तो तीर्थयात्री यहाँ नहीं आ सकते।"

ओरी बोला, "मैंने गिना है, उधर तीन गुफाए हैं, यह सामने वाली चौथी गुफा है। ऐसे गिन कर हमें चौदह नम्बर की गुफा को पहले देखना चाहिये। मैंने अन्वेषण-किरण से देखा है, उस ओर से मुझे शक्ति का एक प्रबल स्रोत दिख रहा है। इसका मतलब है कि हम सही जगह पर आये हैं।"

त्री को पीछे छोड़ कर, अब ओरी तेज़ी से आगे बढ़ा, वह उस मूर्ति को देखने के लिए बेचैन था। जब उसे चौदहवीं गुफा दिखी तो सीधा उसमें घुस गया। उस गुफा का रास्ता कुछ नीचे जा कर था और उसका द्वार थोड़ा छोटा था, उसमें घुसने के लिए उसे नीचे झुकना पड़ा। भीतर पहुँचा तो देखा कि गुफा का कक्ष बहुत बड़ा है और उसकी छत में एक छेद है जहाँ से भीतर सूरज की रोशनी आ रही है। गुफा की खुरदरी दीवारों पर कत्थई खड़िया मिट्टी और सफेद चूने से आदिमानवों के बनाये चित्र दिख रहे थे, जिनमें विभिन्न पशु-पक्षी और उनका शिकार करते हुए मानव दिख रहे थे।

जब त्री वहाँ पहुँचा तो देखा कि ओरी एक खाली गुफा में खड़ा है, वहाँ कोई मूर्ति नहीं दिख रही थी।

ओरी बोला, "इस गुफा की धरती के भीतर एक शक्ति-स्रोत छुपा हुआ है, मैं उसे महसूस कर सकता हूँ, लेकिन मैं समझ नहीं पाया कि उसका रास्ता कहाँ से है।"

त्री हँसा, बोला, "तुम वह कविता भूल गये? उसमें गुरु जी पूछते हैं कि त्रिनेत्र कहाँ है? इसका मतलब है कि मेरे बिना तुम्हें वह मूर्ति नहीं मिलेगी।"

वह घूम कर गुफा की दीवारों को देखने लगा, बोला, "देखो, क्या कहीं पर शिव जी का कोई चिन्ह दिख रहा है? गुरु जी जब त्रिनेत्र के बारे में पूछ रहे हैं, इसका मतलब है कि हमें इस गुफा में शिव जी के किसी चिन्ह को खोजना है।"

ओरी को पता नहीं था कि शिव जी कौन से चिन्ह होते हैं, उसे त्री की बात समझ में नहीं आई, तो त्री बोला, "त्रिशूल, डमरू या नाग देवता या चंद्रमा, यह सभी शिव जी के चिन्ह हैं, क्या गुफा की दीवारों पर इनमें से कुछ दिख रहा है?"

दोनों गुफा में घूम-घूम कर चित्रों को देखने लगे, तब ओरी बोला, "देखो, इधर एक घड़ियाल बना है।"

त्री वहाँ गया तो देखा कि वहाँ घड़ियाल के ऊपर लम्बे बालों वाली एक युवती की आकृति बनी है, बोला, "हाँ, यही है शिव जी का चिन्ह, गंगा माँ और उनका वाहन घड़ियाल। गंगा माँ भी शिव जी की जटाओं में ही रहती हैं।"

उसने पास जा कर गंगा की आकृति पर हाथ के सामने हाथ फिराया तो पीछे से सर्र-सर्र की आवाज़ आयी और गुफा के बीचों-बीच, ज़मीन में एक रास्ता खुल गया। वहाँ से नीचे जाती हुई बारह सीढ़ियाँ दिख रही थीं और अंत में एक छोटा सा गोल तालाब बना था, जिसके बीच में सफेद पत्थर की, हँस पर बैठी हुई, वीणावादिनी सरस्वती की मूर्ति लगी थी। ओरी ने महसूस किया कि उस मूर्ति से शक्ति का प्रचंड स्पंदन निकल रहा था, वह तुरंत सीढ़ियाँ उतर कर नीचे गया।

त्री थोड़ी देर तक ऊपर ही खड़ा रहा, फिर धीरे-धीरे सीढ़ियाँ उतर कर नीचे पहुँचा तो देखा कि ओरी सरस्वती प्रतिमा के सामने हाथ जोड़े हुए, आँखें बंद करके खड़ा है। वह भी उसके पास जा कर हाथ जोड कर खड़ा हो गया।

कुछ देर के बाद जब त्री ने आँखें खोलीं तो देखा कि ओरी की आँखों से आँसू बह रहे हैं। वह कुछ नहीं बोला।

ओरी उसी जगह पर घुटनों के बल बैठ गया, धीरे से बोला, "इस शक्ति में स्नान करना मेरे लिए अभूतपूर्व अनुभव है। मुझे लगता है कि शक्ति की लहरें मेरे भीतर, मेरे तन और मन के सभी घावों को भर कर मुझे शांति दे रही हैं। इस पवित्र मूर्ति को क्या यहाँ से ले जाना उचित होगा?"

त्री बोला, "मैंने तुम्हें बताया था न कि यह मूर्ति गुरु जी ने पाँच साल पहले बनवायी थी। माँ तारा की हरिताश्म मूर्ति इससे बहुत छोटी थी, उसके अधिकतर टुकड़े इस प्रतिमा में लगे हैं, जैसे कि उनके माथे की बिन्दी में, उनके गले के हार में और उनकी करधनी के मोतियों में। तुम इसे लेने आये हो, ले जाओ, मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि कुछ महीनों में इस जगह पर मैं अपने हाथों से माँ सरस्वती की ऐसी ही एक नयी मूर्ति बना कर लगाऊँगा ताकि श्रद्धालुओं की पूजा में बाधा नहीं आये।"

ओरी चुपचाप मूर्ति को देखता रहा।

त्री बोला, "अब मुझे गुरु जी की कविता की वह पंक्ति समझ में आयी जिसमें वह सती के पर्वतराज के यहाँ लौटने की बात करते हैं। सती यानि पार्वती, वह हिमालय पर्वत की बेटी और शिव की पत्नि थीं और अपने पिता के घर यज्ञ के लिए लौटी थीं। शायद गुरु जी कहना चाहते हैं कि उसी तरह से माँ सरस्वती भी प्रकृति का हिस्सा बन कर यहाँ पर लौटी हैं।"

ओरी बोला, "मैं इस मूर्ति को यहाँ से नहीं ले जा सकता, मैं इसे नहीं तोड सकता। मुझे लगता है कि इस पवित्र जगह से इस मूर्ति को हटाना पाप होगा।"

त्री मुस्कराया, बोला, "तुम्हें कुछ तोड़ना नहीं पड़ेगा। मैं अपने गुरु जी को जानता हूँ। अगर वह नहीं चाहते कि तुम इस प्रतिमा को यहाँ से ले कर जाओ, तो वह उस कविता को लिख कर नहीं जाते। उन्होंने ही हमें यहाँ पर आने का रास्ता दिखाया है, तुम संकोच मत करो। इस प्रतिमा को उठा कर देखो, यह आसानी से उठ जायेगी, तुम्हें कुछ तोड़-फोड़ करने की आवश्यकता ही नहीं होगी।"

जब उसने देखा कि ओरी वहाँ पर निश्चल खड़ा है, आगे नहीं बढ़ रहा, तो त्री उस तालाब में घुसा। उसका पानी गहरा नहीं था। पानी के बीच में जा कर उसने माँ के चरणों में सिर झुका कर प्रणाम किया, फिर उसे दोनों हाथों में उठा कर अपने सिर पर रख लिया। वह प्रतिमा पत्थर के चबूतरे पर रखी हुई थी, उससे जुड़ी हुई नहीं थी, इसलिए आसानी से उठायी गयी। वह भीतर से खोखली थी, इसलिए भारी नहीं थी और उसे उठाना आसान था।

तालाब से निकल कर त्री सीढ़ियाँ चढ़ने लगा, लेकिन ओरी अपनी जगह से नहीं हिला, वह मूर्ति की खाली जगह को देख रहा था और उसके आँसू नहीं रुक रहे थे।

त्री ने उसे कहा, "तुम अपनी आँखें बंद करके, उस मूर्ति के स्थान को अपने मन की दृष्टि से देखो, तुम्हें उस खाली जगह पर एक ज्योति की लौ दिखेगी।" वह ऊपर आया और मूर्ति के साथ ज़मीन पर बैठ गया, बोला, "मैं सोचता था कि इन पाँच साल में, इसकी शक्ति हम सबसे दूर रह कर कमज़ोर हो गयी होगी, लेकिन यह तो अब भी बहुत प्रबल है। इसे छूने में एक अजीब से अनुभूति होती है, लगता है कि जैसे शक्ति की धारा मेरे भीतर बह रही हो।"

ओरी कुछ देर तक तालाब के पास आँखें बंद करके बैठा रहा। जैसा कि त्री ने कहा था, आँखें बंद करके उसे मूर्ति की जगह पर एक ज्योति-पुंज दिख रहा था।

जब वह ऊपर आया तो उसने देखा कि छत के छेद से आने वाली सूर्य की किरणें सीधा मूर्ति पर पड़ रही थी और उसके साथ ज़मीन पर बैठा, मुस्कराता हुआ त्री भी उसी रोशनी में प्रज्जवलित हो रहा था।

ताकानोरी उसे देखता रह गया, फिर धीरे से बोला, "यह एक दिव्य प्रतिमा है और यामागुचि बड़ा गुँडा है। उसके जूआघर हैं, वह युवतियों को वैश्या बनवा कर उनसे धँधा करवाता है, और नवजवानों को नशा बेचता है, इस दिव्य प्रतिमा को उसके पास ले कर जाना क्या सही होगा?"

त्री बोला, "मेरे गुरु जी कहते हैं कि हर बात में हमें मैं, मेरा, मुझे, वगैरा नहीं सोचना चाहिये। हमें याद रखना चाहिये कि हम केवल निमित्त हैं, हमारे पीछे इच्छा माँ तारा, बौद्धिसत्व और माँ सरस्वती की है। शायद वह तुम्हारे यामागुचि सान के जीवन की दिशा बदलना चाहते हैं, इसीलिए गुरु जी चाहते हैं कि तुम यह प्रतिमा उनके पास ले कर जाओ।"

ओरी ने आगे बढ़ कर प्रतिमा को छुआ, बोला, "मैं मां के सिर की कसम खाता हूँ कि इसके बाद मैं यामागुचि के याकूज़ा के जीवन को त्याग दूँगा। इस मूर्ति को उनके पास ले जा कर, मेरा और उनका रिश्ता समाप्त हो जायेगा।"

त्री उठ कर खड़ा हुआ, उसने प्रतिमा को उठाया और उसे ताकानोरी को दिया, बोला, "डरो नहीं, इसे हाथ में ले कर देखो। सौभाग्य से नियति ने तुम्हें यह मौका दिया है कि तुम इसकी शक्ति को अपने तन-मन और अंतरात्मा में महसूस करो, इस मौके को व्यर्थ मत जाने दो। चलो, अब हम वापस चलें।"

फिर वह गुफा की दीवार पर बने गँगा माँ और घड़ियाल के चित्र की ओर गया और उसके सामने हाथ फेरा, तो सर्र-सर्र की आवाज़ से ज़मीन में खुला रास्ता फिर से बंद हो गया।

वह दोनों गुफा से बाहर निकले और मोटरबोट की ओर चल पड़े। उन्हें वहाँ पर आये हुए करीब एक घंटा हुआ था लेकिन उन्हें लग रहा था मानो वह वहाँ पर बहुत समय से हों। ओरी ने मूर्ति को अपनी छाती से लगाया हुआ था।

जब वह द्वीप के घड़ियालों वाले तट के पास पहुँचे तो त्री ने पहाड़ी से हाथ हिला कर आभा को इशारा किया, क्योंकि वह रास्ता फिर से घड़ियालों से भर गया था। आभा ने ध्यान लगाया तो थोड़ी देर में ही घड़ियाल उनका रास्ता छोड कर एक ओर चले गये।

मोटरबोट की ओर जाते हुए त्री बोला, "थोड़े से अभ्यास से ही, आभा उन घड़ियालों से सम्पर्क बनाने में कुशल हो गयी है। अब उसकी शक्ति का विकास और भी आसान हो जायेगा।"

*****

30. मजूली, असम, 8 - 9 मार्च 2026

काज़ीरंगा से लौटते समय त्री ने ओरी से पूछा, “याकूज़ा का क्या काम होता है?”

“उनका सबसे बड़ा काम है लोगों को डराना और धमकाना, ताकि लोग चुपचाप अपना ऋण चुका दें, या प्रतिद्वंदी हमारे क्षेत्र में धँधा नहीं करें या दुश्मन हम पर हमला नहीं करें। इसलिए याकूज़ा का शरीर और भाव ऐसे होने चाहिये कि उन्हें देख कर ही लोग डर जायें। अगर डराने से काम नहीं चलता तो याकूज़ा को मार-पिटाई भी करनी पड़ती है, विशेषकर प्रतिद्वंदियों के गुँडों की। जब बॉस कहें तो याकूज़ा किसी को जान से भी मार सकते हैं।"

“लोगों का खून कर देते हैं? किसका?”

“किसी को भी मार सकते हैं, हमारा काम प्रश्न पूछना नहीं है, आदेश का पालन करना है। याकूज़ा, वह सही-गलत की बहस में नहीं पड़ते, जिसे मारने का आदेश मिले और जिस तरह से मारने का आदेश मिले, उसे वैसे ही मार देते हैं।"

“जिस तरह से मारने का आदेश मिले, इसका क्या मतलब है?”

“अगर किसी को चेतावनी देनी हो कि वह लोग हमसे डर कर रहें, तो हम खुले आम, लोगों के बीच में भी किसी का सिर काट सकते हैं। अगर किसी को केवल रास्ते से हटाना है तो उसे चुपचाप, दूर से गोली भी मार सकते हैं। कभी-कभी किसी को ऐसे मारते हैं कि वह एक्सीडैंट लगे। यह बॉस के आदेश पर निर्भर करता है।"

"औरतों और बच्चों को भी?”

ओरी ने सिर हिला कर मना किया, बोला, “मैं छोटे बच्चों को नहीं मारता और औरतों को मारने से पहले कारण पूछता हूँ, अगर ठीक नहीं लगे तो मना कर देता हूँ। वैसे मैंने अभी तक किसी औरत को नहीं मारा।"

“तुम इस रास्ते पर कैसे आये?”

“यामागुचि दादा जी, अक्को में हमारे पड़ोसी थे। वहाँ उनका परिवार जूएखाने चलाता था और उन्होंने बहुत पैसा बनाया था। मेरे पिता उनके लिए काम करते थे। जब वह गुज़र गये तो यामागुचि सान ने मेरी माँ को घर चलाने का पैसा दिया और मुझे स्कूल भेजा। जब मैं थोड़ा सा बड़ा हुआ तो उन्होंने मुझे अपनी छत्रछाया में ले लिया। उन्होंने मेरी शक्ति को पहचाना और मुझे याकूज़ा बनने की शिक्षा और प्रशिक्षण दिलवाया, उसके बाद मैं उनका याकूज़ा बन गया।"

“और अब, इस काम के बाद?”, त्री ने पूछा।

वह मुस्कराया, बोला, "यह मूर्ति उन्हें दे कर मैं उनका ऋृण चुका दूँगा। जैसे तुम्हारे गुरु जी कहते हैं, शायद शक्ति का उपयोग दुनिया के भले के लिए करना बेहतर है। अगर हो सकेगा तो मैं कुछ समय भारत में तुम लोगों के साथ बिताना चाहता हूँ। यह मूर्ति उन्हें दे कर, मैं तुम्हारे यहाँ लौट कर आऊँगा।"

उन्होंने मोटरबोट में ही खाना खाया, तब ओरी आभा के पास बैठा था, उससे बातें कर रहा था। गार्गी ने त्री से धीरे से कहा, “दादा, मेरे विचार में इन दोनों का मामला फिट हो गया है।"

“क्या आभा को भी वह अच्छा लगता है?” उसने पूछा तो गार्गी ने सिर हिला कर हामी भरी।

बच्चों को मजूली उतार कर, त्री और आभा, ओरी को छोड़ने नारायणपुर गये। बच्चों से विदा लेते हुए ताकानोरी ने कहा, “एक दिन मैं तुम्हारे अनाथाश्रम में तुम लोगों के साथ रहने आऊँगा। तब मैं तुम्हें जूदो, आइकीदो, जिजुत्सु, वगैरा जापानी मार्शियल आर्टस् और लड़ाई करना सिखाऊँगा। अगर तुम सचमुच के योद्धा बनना चाहते हो तो केवल शक्ति से काम नहीं चलेगा, योद्धा को लड़ना भी आना चाहिये।

नारायणपुर में घर पहुँच कर, ओरी ने जापान में अपने बॉस को वीडियो-कॉल किया और उसे सरस्वती माँ की मूर्ति दिखायी, बताया कि उसने मूर्ति को जाँचा है और स्वयं उस मूर्ति की प्रबल शक्ति को महसूस किया है। बोला, “इस प्रतिमा के पास रहो तो मन में शाँति की अनुभूति होती है।"

जापान लौटने के लिए जब ओरी ने अपना सामान पैक कर लिया, तब तीनों ने साथ बैठ कर रात का खाना खाया। ओरी ने सबके लिए रामेन का सूप बनवाया, बोला, "अभी मेरे पास इन जापानी नूडल्स के बहुत सारे पैकेट बचे हुए हैं, मैं उन्हें तुम्हारे लिए छोड जाऊँगा।"

आभा बोली, "हम इसमें सब्जियाँ, मिर्ची, मसाला डाल कर इस रामेन को अपने तरीके से बनायेंगे और जब तुम लौट कर आओगे तब तुम्हें हिन्दुस्तानी रामेन खिलायेंगे।"

अगले दिन सुबह ताकानोरी को कलकत्ता के लिए रवाना होना है, जहाँ से उसे जापान के लिए हवाई जहाज़ मिलेगा।

*

ओरी से विदा ले कर, त्री और आभा को वृद्धाश्रम में लौटे हुए करीब आधा घंटा हुआ था और वे दोनों कैंटीन में बैठ कर जगदीश बाबू के साथ चाय पी रहे थे जब अचानक मन्दिर की घंटियाँ बजने लगीं। घंटियों की आवाज़ कैंटीन में भी स्पष्ट आ रही थी।

जगदीश बाबू घबरा कर उठ खड़े हुए, बोले, "ऐसी घंटियाँ की ध्वनि तो मैंने यहाँ पहले कभी नहीं सुनी थी, शायद कोई तूफान आ रहा है?"

त्री बोला, "जगदीश बाबू, मेरे विचार में यह घंटियाँ गुरु जी बजा रहे हैं और कह रहे हैं कि उनकी समाधी समाप्त हो गयी है।"

जगदीश बाबू को विश्वास नहीं हुआ, बोले, "इतने दिनों तक धरती में दबे रहने के बाद भी क्या जामुन बाबा जीवित हैं?"

वह तीनों उठ कर बाहर आये तो देखा कि वृद्धाश्रम के अन्य बहुत से लोग उनकी तरह वहाँ खड़े हो कर मंदिर की ओर देख रहे थे। वह तीनों मंदिर की ओर आगे बढ़े तो उनके पीछे-पीछे अन्य लोगों की भीड़ भी आ गयी।

त्री मंदिर वाली पहाड़ी की सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर गया। उसके पीछे-पीछे बाकी के सब लोग आ रहे थे। उसने हाथ उठा कर लोगों से रुकने का इशारा किया, फिर बोला, "गुरु जी जिस तपस्या के लिए समाधी में लीन हुए थे, उनकी वह तपस्या पूरी हुई है। यह घंटियाँ उनके प्रभाव से बज रही हैं, वह कह रहे हैं कि उनकी समाधी का समय समाप्त हो गया है, वह हमारे जगत में लौट रहे हैं। जगदीश बाबू, तुरंत उन मजदूरों को बुलाईये, जिन्होंने गुरु जी की समाधी बनायी थी।" उसके यह कहने के बाद मंदिर की घंटियाँ बजनी अपने आप थम गयीं।

जगदीश बाबू ने मजदूर बुलाने के लिए लोग भेजे, फिर बोले, "जब ताकानोरी ने इस समाधी को खुलवाने की कोशिश की थी तो वह इसे नहीं खोद पाये थे, तो अब यह मजदूर क्या इसे खोल पायेंगे?"

त्री हँसा, "जब गुरु जी कह रहे हैं कि उनकी समाधी पूर्ण हो गयी तो अब इसे खोदनें में कोई कठिनाई नहीं आयेगी।"

इस बार मजदूरों को समाधी का पत्थर हटाने में ज़रा सी भी दिक्कत नहीं हुई। समाधी का बक्सा करीब दस फुट मिट्टी के नीचे दबा था, वहाँ से उस मिट्टी को हटाने में करीब दो घंटे लगे। जब वह बक्से तक पहुँचे तो मैदान लोगों से भर चुका था और यह सुन कर कि बाबा की समाधी का बक्सा दिखने लगा है, उन लोगों ने "जामुन बाबा" का नाम जपना शुरु कर दिया।

आसपास की सारी मिट्टी हटाने और बक्से को बाहर निकालने में करीब आधा घंटा और लगा। उसके आगे-पीछे रस्सियाँ लपेट कर मजदूरों ने डिब्बे को ऊपर उठाया तो उत्तेजित हो कर सब लोग चिल्लाने लगे।

त्री ने आगे बढ़ कर बक्से के पाट खोले, भीतर उसके गुरु जी पद्मासन में आँखें बंद किये बैठे थे, उनकी गोद में उनकी भिक्षा का कटोरा था और उसमें तारा की मूर्ति थी। सारे मैदान में सन्नाटा छा गया। लोग हाथ जोड़ कर उस दृश्य को देख रहे थे। त्री ने झुक कर अपने गुरु जी के चरण छूए लेकिन गुरु जी बहुत देर तक वैसे ही बिना हिले-डुले बैठे रहे।

फिर उनकी पलकें थरथराईं और उन्होंने धीरे-धीरे आँखें खोलीं, सारे मैदान में "जय जामुन बाबा" की ध्वनि गूँज उठी, लोग तालियाँ बजाने लगे, कुछ लोग भावविभूत हो कर रोने लगे। गुरु जी कुछ देर तक चुपचाप सबको देखते रहे फिर उन्होंने बक्से के बाहर टाँगें निकाली और बाहर निकल आये, त्री ने उन्हें खड़े होने के लिए सहारा दिया।

आभा और जगदीश बाबू, दोनों ने झुक कर उनके पैर छूए। वह पहले भी दुबले-पतले थे, लेकिन अब वह इतने कमज़ोर हो गये थे कि उनके शरीर की सभी हड्डियाँ दिख रही थीं, लगता था कि हड्डियों और चमड़ी के बीच में माँसपेशियाँ बिल्कल ही नहीं हों।

गुरु जी चुपचाप बिना किसी सहारे के मंदिर की ओर बढ़े, हाथ उठा कर उन्होंने बाहर वाला घंटा बजाया, फिर मंदिर की ओर नमन किया और हाथ ऊपर उठा कर मैदान में खड़े लोगों का अभिवादन किया। फिर वह त्री की ओर मुड़े, बोले, “बेटा, मैं थक गया हूँ, मुझे घर ले चलो।"

एक हाथ त्री के कँधे पर और दूसरा आभा के कंधे पर रख कर, वह धीरे-धीरे सीढ़ियाँ उतरे और लोगों की भीड़ के बीच में अपने घर की ओर चले। जिस जगह वह पैर रख रहे थे, बहुत से लोग उस जगह से मिट्टी ले कर उसे अपने माथे पर लगा रहे थे।

घर के प्रांगण में बच्चे उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। रंगनाथ, गार्गी, वसंत, माधव और तृप्ति ने उन्हें प्रणाम किया और उन्होंने सबके सिर पर प्यार से हाथ रख कर सहलाया। जब तृप्ति की बारी आयी तो वह धीरे से बोले, “तुमने कितनी ज़ोर से घंटियाँ बजायीं, ज़मीन के नीचे से भी मुझे उनकी गूँज सुनाई दे रही थी।" तृप्ति खुश हो कर मुस्करायी।

गुरु जी ने कुछ फलाहार किया और थोड़ा सा दूध पिया, फिर उन्होंने जगदीश बाबू को पास बुलाया, बोले, “अब यहाँ पर मेरा काम समाप्त हो गया है। प्रभु ने मुझे अपना बाकी का जीवन, प्रार्थना में बिताने की आज्ञा दी है। कुछ दिनों में मैं यहाँ से चला जाऊँगा। अब यह वृद्धाश्रम आप को और यहाँ के रहने वाले लोगों को ही चलाना होगा।"

जगदीश बाबू रोने लगे, बोले, “बाबा, आप ने इस आश्रम को जन्म दिया है, आप की कृपा से मेरे जैसे लोगों को, जिनके परिवार नहीं हैं या जिन्हें उनके बच्चे अकेला छोड कर चले गये हैं, हमें गरिमा से जीने का मौका दिया है। आप के बिना हम इसकी ज़िम्मेदारी कैसे उठायेंगे?”

गुरुजी मुस्कराये, बोले, “जब मैंने समाधी ली थी, तब नहीं जानता था कि इस समाधी से लौटूँगा या नहीं। तब आप ने मेरा निर्णय स्वीकार किया था और वृद्धाश्रम को चलाने की ज़िम्मेदारी ली थी, तो अब क्या हो गया? हम वृद्ध अवश्य हैं, लेकिन निस्सहाय नहीं हैं, और दुनिया का कोई काम ऐसा नहीं है जिसे हम लोग नहीं कर सकते। क्या आप इस बात को भूल गये हैं? आप के साथ आप का सहकारी संघ है, आप के साथी हैं, मुझे पूरा विश्वास है कि आप के नेतृत्व में यह वृद्धाश्रम और भी समृद्ध तथा विकसित होगा।"

*****

31. गँगटोक, सिक्किम, 24 अप्रैल 2026

“गँगटोक की पहाड़ी हवा बहुत अच्छी है, लेकिन यहाँ की ऊपर-नीचे जाती हुई सड़कों पर चलना थोड़ा कठिन है", गुरु जी बोले। वह त्री के साथ अखाड़े में बैठे थे।

त्री हँसा, बोला, “गुरु जी, मैं आप को जानता हूँ। आप अभी भी कमज़ोर हैं, लेकिन मैं शर्त लगा कर कह सकता हूँ कि और एक महीने के अंदर आप बिना थके, यहाँ से देवराली बौद्ध-विहार तक का पूरा चक्कर लगा कर आयेंगे। बस आप हर रोज, सुबह-शाम सैर करना नहीं छोड़िये।”

गुरु जी भी मुस्कराये, बोले, “जब तुम छोटे थे तो मैं तुम्हें कहता था कि एक बार और कोशिश करो, मैं पक्का जानता हूँ कि तुम अगली बार इसे बेहतर करोगे। अब मैं बूढ़ा हूँ तो तुम मुझे वही सबक सिखाते हो।"

थोड़ी देर के बाद जब आभा वहाँ चाय ले कर आयी तो देखा कि वह दोनों शतरंज खेल रहे हैं। कुर्सी पास खींच कर वह उनके करीब बैठ कर उनका खेल देखनी लगी।

त्री ने चाय पीते हुए उससे पूछा, “ओरी से बात हुई?”

आभा ने सिर हिला कर मना किया, बोली, “पिछले हफ्ते हुई थी। उसके बाद मैंने उसे मैसेज भी भेजे, लेकिन उसका उत्तर नहीं आया।"

गुरु जी बोले, “चिंता नहीं करो बेटी, कुछ ही दिनों की बात है, उसने कहा है कि वह यहाँ आयेगा, और वह अपने वचन का पक्का है, जो कहता है, उसे अवश्य करता है।”

त्री बोला, “गुरु जी, आप ने अच्छा प्लैन बनाया, एक तो हमें यामागुचि से छुट्टी मिल गयी, और साथ में आभा को ताकानोरी भी मिल गया।"

"क्या मतलब, कैसा प्लैन? मुझे भी बताओ”, वह बोली। मजूली से लौट कर वह मणिपुर में अपने गाँव चली गयी थी और कुछ दिन पहले ही उनके अनाथाश्रम में लौटी है।

“कई दशकों से यामागुचि के आदमी गुरु जी का पीछा कर रहे थे। करीब दस साल पहले जब मैंने यहाँ यह अनाथाश्रम खोला, तब मैंने गुरु जी से यहाँ आने के लिए बहुत कहा, लेकिन वह नहीं माने। वह डरते थे कि यामागुचि के आदमी उन्हें खोजते हुए यहाँ भी आ जायेंगे और उनकी वजह से हमारे अनाथाश्रम के बच्चों की जान को खतरा हो जायेगा", त्री ने बताया।

“माँ तारा की मेरी वह मूर्ति, जिसे मैं कोरिया से ले कर आया था और जिसे यामागुचि लेना चाहता था, दस साल पहले मैंने वह मूर्ति त्री को दे दी थी। तब से वह मूर्ति यहीं रखी है। हमने देखा था कि जब शक्ति वाले लोग साथ रहते हैं तो उनकी शक्ति बढ़ जाती है। यहाँ पर त्री ने उस मूर्ति के साथ कुछ नये प्रयोग किये जिससे हमें पता चला कि अगर हम बिना शक्ति वाले हरिताश्म पत्थरों को, माँ तारा की शक्तिवाहिनी मूर्ति के पास रखें तो उनमें शक्ति आ जाती है। वैसे ही हरिताश्म पत्थरों के आसपास अगर शक्ति वाले लोग रहें तब भी उन पत्थरों में भी शक्ति आ जाती है। लेकिन यह सभी हरिताश्म पत्थरों में नहीं होता। तब हमने उन पत्थरों की वैज्ञानिक जाँच करवायी, इससे पता चला कि हरिताश्म पत्थर कई तरह के होते हैं। कुछ पत्थरों के भीतर के क्रिस्टल ऐसे होते हैं कि उनमें शक्ति-लहरों के प्रभाव से शक्ति जमा होने लगती है। जैसे कि बैटरी में ऊर्जा भरते हैं, वैसे ही उनमें शक्ति भर जाती है", गुरु जी बोले।

त्री हँसा, बोला, “सबसे पहले इस बात को गार्गी ने पहचाना। एक दिन वह बोली कि हमारी नटराज की प्रतिमा में भी शक्ति महसूस होती है। हमने उस मूर्ति की जाँच की, तब समझे कि शक्ति पूरी मूर्ति में नहीं थी, केवल उसके हरिताश्म पत्थर के बने मोतियों में थी। दूसरी बात जो हम समझे, वह है कि अगर मूर्ति को शक्ति वाले लोगों का साथ नहीं मिले तो धीरे-धीरे उनकी शक्ति क्षीण हो जाती है। यानि यह शक्ति जल की तरह है, जब तक बहती रहती है, तभी तक जीवित रहती है। इसलिए हमने सोचा कि अगर यामागुचि उस मूर्ति के लिए इतना तरस रहा है, तो क्यों न हम उसे एक शक्ति वाली मूर्ति बना कर दें?"

गुरु जी बोले, "पहले मैं डरता था कि अगर यामागुचि को वह प्रतिमा मिल गयी तो वह शक्ति का गलत कामों के लिए उपयोग कर सकता है। लेकिन त्री बोला कि केवल मूर्ति से उसका कुछ नहीं होगा, उसे शक्ति वाले बच्चे भी खोजने हैं और उन्हें खोजना इतना आसान नहीं है। इस तरह से त्री ने यह सारा प्लैन बनाया।"

त्री बोला, “पहले मैंने सरस्वती की मूर्ति बनायी और उसमें हरिताश्म पत्थर के टुकड़े लगाये। उसे दिन में इस अखाड़े में रखते थे और रात को रंगनाथ, वसंत और माधव उसके पास सोते थे। करीब छह महीने पहले जब हमें लगा कि अब उस मूर्ति में शक्ति बहुत प्रबल हो गयी है तो हमने उसे डमरू द्वीप की गुफा में लगा दिया। फिर हमने गुरु जी के वीडियो बनाये और उन्हें फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, वगैरा पर चढ़ा दिया, और उनके साथ लिखा कि वह वीडियो एक कोरियन भिक्षुक के हैं। तब से हम प्रतीक्षा कर रहे थे कि यामागुचि के आदमी उसे देखें और वह किसी को गुरु जी को खोजने के लिए भेजे।"

"यानि, तुम दोनों ने यामागुचि को फसाने के लिए एक जाल फ़ैंका था, और उसने ताकानोरी को यहाँ भेज दिया। पर क्या गुरु जी की समाधी लेने में खतरा नहीं था?”, आभा ने पूछा।

त्री बोला, “मुझे मालूम है कि गुरु जी समाधी में एक महीने तक, कम अक्सीजन और खाने-पीने के बिना भी जीवित रह सकते हैं। लेकिन साथ ही हम लोग, विशेषकर गार्गी, दूर से ही गुरु जी के स्वास्थ्य पर नजर रखे हुए थे। मजूली के वृद्धाश्रम के पास वाले खण्डहर के नीचे जो गुरु जी का छुपा हुआ तहखाना है, वहाँ से गार्गी आसानी से गुरु जी की मानसिक लहरों को महसूस कर सकती थी। वह वहाँ से नियमित जाँच कर लेती थी कि गुरु जी की तबियत कैसी है।"

“यानि, मुझे छोड़ कर तुम सबको मालूम था कि यह एक ड्रामा है?”

त्री मुस्कराया, “यह पूरा ड्रामा नहीं था। हमने प्लैन बनाया था लेकिन उसकी हर चीज हमारे हाथ में नहीं थी। तुम्हारे अतिरिक्त, वसंत, माधव और तृप्ति को भी यह सब बातें पता नहीं थीं, तभी तो ताकानोरी जब तुम्हें पकड़ कर ले गया और उसने तुम्हारे दिमाग में देखा, फिर भी उसे कुछ पता नहीं चला। लेकिन काज़ीरंगा में हमारी गैंडों के तस्करों से टक्कर हो जायेगी, इस बात का हमें अंदाज़ा नहीं था, और न ही हमने सोचा था कि ताकानोरी एक गार्ड को बचाने के लिए एक तस्कर को मार देगा। हमें डमरू द्वीप पर इतने सारे घड़ियालों के इकट्ठा होने वाली बात का भी पता नहीं था। सौभाग्य से उस समय तुम हमारे साथ थीं, वरना हमारा सारा प्लैन बेकार हो जाता।"

“और डमरू द्वीप की उस गुफा में छिपी हुई सीढ़ियाँ और नीचे जाने का रास्ता, क्या वह भी तुमने बनाया था? क्या तुम सचमुच वहाँ पर नयी मूर्ति लगाओगे?”

त्री बोला, “वह गुफा सचमुच बहुत पुरानी है और उसमें बने भित्तिचित्र आदिमानव के समय के हैं, हज़ारों साल पुराने हैं। सदियों से हर साल वहाँ पर दूर-दूर से तीर्थयात्री आते हैं। हमने वहाँ दीवार पर एक खाली जगह पर केवल घड़ियाल और गँगा का चित्र बनाया था। वह सीढ़ियाँ और तालाब वहाँ पर पहले से थे, और उस तालाब में एक पुरानी सरस्वती की मूर्ति लगी थी, हमने उसकी जगह पर वहाँ एक नयी मूर्ति रख दी और उसके ऊपर खुलने-बंद होने वाला गुप्त दरवाज़ा लगा दिया। अब वह सारी जगह जैसे पहले थी, बिल्कुल वैसी ही हो गयी है, क्योंकि ऐसी जगहें हमारी एतिहासिक और साँस्कृतिक सम्पदा हैं, हम उनकी रक्षा करना चाहते हैं।"

गुरु जी बोले, “मेरी आशा है कि यामागुचि उस मूर्ति को पा कर खुश होगा और अब वह मुझे भूल जायेगा। इसलिए अब मैं यहाँ आया हूँ और त्री और बच्चों के बीच में रह सकता हूँ। त्री ही मेरा परिवार है और बुढ़ापे में, उसके और छोटे बच्चों के साथ रह पाना, मेरे लिए बहुत सुखदायक है। मेरी यही कामना है कि हम लोग शक्तिवान बच्चों की एक सैना बनायें, जिसके तिरंगा यौद्धा अपनी शक्ति से निर्बल, शोषित और असहाय लोगों को आत्मनिर्भर बनने में सहायता करें, प्रकृति और वातावरण की रक्षा करें और इस पृथ्वी को ऐसा बेहतर स्थान बनायें जहाँ मानव के साथ-साथ, सभी प्राणी भी फलें-फूलें।"

थोड़ी देर के बाद जब गुरु जी सैर करने गये तो त्री आभा को अपनी शिल्पशाला में ले कर गया, बोला, "देखो, यह मेरी नयी कलाकृति है, बताओ कैसी लगी?”

आभा ने देखा कि उसकी नयी कलाकृति, ताँबे की दोमुही मूर्ति है, जिसमें एक ओर शिव जी हैं और दूसरी ओर महात्मा बुद्ध, और दोनों योगमुद्रा में हैं। उसने पूछा, “शिव और बुद्ध, एक साथ, क्या यह कोई नया एक्सपैरिमैंट कर रहे हो?”

त्री बोला , "मैं शिव का भक्त हूँ और गुरु जी बुद्ध के, इसलिए मैंने सोचा कि उन दोनों को एक साथ बनाऊँ। अंत में परमेश्वर तो एक ही है, हम मानव उसे भिन्न रूपों में देखते हैं और उसकी पूजा के भिन्न रीति-रिवाज़ अपनाते हैं। वैसे भी हमारे भारत में धर्मों के बीच में दीवारें नहीं हैं, बल्कि वह नदी की धाराओं जैसे हैं, जो कभी मिलती हैं, कभी अलग हो जाती हैं और अंत में सभी एक ही सागर की ओर जाती हैं। गुरु जी के साथ रह कर धर्म के बारे में मुझे यही समझ में आया है। यह मूर्ति इसी भाव को अभिव्यक्त करती है। लेकिन इस मूर्ति में एक और बात है, इसमें शिव जी और महात्मा बुद्ध, दोनों की आँखें हरिताश्म पत्थर की बनी हैं।"

वह दोनों यही बातें कर रहे थे, जब तृप्ति भागती हुई आई, बाहर से ही चिल्ला कर बोली, "दीदी, तुम्हारे जापानी भैया आये हैं।" त्री ज़ोर से हँसा, बोला, "ताकानोरी आ गया? लेकिन वह तुम्हारी दीदी का भैया नहीं है, तुम्हारा भैया है।"

दो मिनट बाद, बच्ची के पीछे-पीछे ताकानोरी भी वहाँ आया और सबसे पहले उसने आभा को बाहों में जकड़ा और उसके गाल पर चूमा। यह सब कुछ इतनी जल्दी हुआ कि आभा उसे रोक नहीं पायी, न कुछ कह पायी। त्री मुस्कराया तो आभा का चेहरा शर्म से लाल हो गया।

जब ओरी ने देखा कि तृप्ति उन्हें बड़ी-बड़ी आँखों से देख रही थी, तो उसने उसकी ओर और फिर आभा की ओर हाथ जोड़ दिये, बोला, "सॉरी, तुम्हें देख कर ... तुम इतने दिनों के बाद मिली हो, मुझसे रहा नहीं गया।"

वह सभी लोग हँसते हुए अनाथाश्रम को पार करके वहाँ लगे वृक्षों की ओर बढ़े। वहाँ एक लकड़ी की कुटिया बनी थी। ओरी ने पूछा, "यह कौन सी जगह है?"

त्री बोला , "तुम्हें एक और व्यक्ति से मिलवाना है, जिससे तुम अभी तक नहीं मिले।"

वह लोग जब कुटिया के पास पहुँचे, तभी दूसरी ओर से त्री ने गुरु जी को सैर से लौटते देखा। उसने ओरी से कहा, "वह देखो कौन है? आओ, मैं तुम्हें अपने गुरु जी से मिलवाऊँ।"

"कौन से गुरु जी?"

"जून-मिन गुरु जी, जिन्हें तुम खोजने आये थे।"

"लेकिन उन्होंने तो समाधी ले ली थी?" ओरी को विश्वास नहीं हुआ।

"समाधी ली तो थी, लेकिन जब उनका लक्ष्य पूरा हो गया तो वह मेरे पास लौट आये, क्योंकि वह मेरे पिता समान हैं। उनका शरीर अभी भी बहुत कमज़ोर है, लेकिन उनके मन की शक्ति, वह बिल्कुल कमजोर नहीं हुई है", त्री ने उसके कँधे पर हाथ रख कर कहा।

ओरी ने आगे बढ़ कर, तीन बार झुक कर गुरु जी का जापानी अभिवादन किया। बाद में आभा ने उसे मोबाइल पर गुरु जी के समाधी से बाहर निकलने का वीडियो दिखाया, तो वह बोला, "वीडियो में तो आप बहुत कमज़ोर दिखते हैं।"

गुरुजी बोले, "यहाँ मैं तुम सब लोगों की शक्ति से घिरा हुआ हूँ, उसकी वजह से मुझे बहुत जल्दी स्वास्थ्य-लाभ हुआ है। तुम बताओ, तुम्हारे यामागुचि सान उस प्रतिमा से खुश हैं?"

ओरी ने लम्बी साँस ली, बोला, "हाँ वह मूर्ति से खुश हैं लेकिन कहते हैं कि अब शक्तिवाले बच्चों को कैसे खोजें? उन्होंने मुझे कहा कि इस अनाथाश्रम के कुछ बच्चों को उठा कर जापान लाते हैं, तो मैंने तुरंत मना कर दिया, कहा कि उसके लिए उन्हें पहले मुझसे लड़ना पड़ेगा क्योंकि अब मैं उन बच्चों का रक्षक बन कर यहाँ रहूँगा। वह यह भी कह रहे थे कि त्री से पूछना कि क्या वह उनके लिए काम करेगा? त्री, अगर तुम उनके याकूज़ा बनना चाहते हो तो उनसे सीधा सम्पर्क करो, क्योंकि मैंने उनकी नौकरी को त्याग दिया है।"

शाम को जब अँधेरा हुआ तो आभा और ताकानोरी घूमते हुए अखाड़े में गये और वहाँ एक चबूतरे पर बैठ गये। वह बोला, "यहाँ पर, इस अखाड़े में कितनी शाँति है और यहाँ ऐसा लगता है जैसे कि हम एक शक्ति-धारा में स्नान कर रहे हैं, भीतर आत्मा तक मुझे यहाँ पर शक्ति की ऊर्जा महसूस हो रही है।"

आभा बोली, "हर रोज़ यहाँ पर त्री बच्चों को शक्ति-जागरण का अभ्यास करवाता है, और गुरु जी उन्हें ध्यान करना और मन को एकाग्र करना सिखाते हैं। यहाँ के कण-कण में शक्ति है। तुम चाहो तो तुम भी उनके विद्यार्थी बन सकते हो।"

ओरी बोला, "उसके बारे में बाद में सोचेंगे, पहले मुझे एक और महत्वपूर्ण काम करना है।" वह उठा और उसके सामने एक घुटना मोड़ कर ज़मीन पर बैठ गया, उसके हाथ में एक अँगूठी थी, बोला, “तुमसे तीन महीने दूर रहा तो समझा हूँ कि मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता। क्या तुम मुझसे विवाह करोगी?”

आभा ने कनखियों से चबूतरे के पीछे दीवार में लगी माँ तारा की हरिताश्म प्रतिमा को देखा, मुस्करा कर बोली, “मैं भी यही सपना देख रही हूँ कि तुम मुझसे यह कहोगे। लेकिन अपनी अँगूठी देने में इतनी जल्दी नहीं करो।"

“क्यों?” ओरी के माथे पर बल पड़ गये, बोला, “तुम मुझसे विवाह नहीं करना चाहती?”

“क्या मैंने ऐसा कहा?”

“तो तुमने मेरी अँगूठी क्यों नहीं स्वीकार की?”

“क्योंकि मैं जल्दबाज़ी में कुछ नहीं करना चाहती। हम लोग कुछ दिन साथ रहे हैं, अभी हम एक दूसरे को ठीक से नहीं जानते। कुछ दिन साथ रहेंगे, एक दूसरे को जानेंगे, मैं तुम्हें अपने भैया से मिलवाऊँगी, और तुम्हें अपना गाँव दिखाने मणिपुर ले कर जाऊँगी, फिर आराम से यह निर्णय भी ले लेंगे।"

*****

इति

पाठकों से एक निवेदन

आप ने मेरे उपन्यास को पढ़ा, इसके लिए धन्यवाद। यह आप को कैसा लगा, कृपया इस बारे में अपनी राय मुझे अवश्य दें।

क्या आप त्री, ओरी, आभा और अनाथाश्रम के बच्चों के बारे में अन्य उपन्यास पढ़ना चाहेंगे? अपनी राय अवश्य लिखें।

मेरी ईमेल का पता: sunil@kalpana.it

लेखक की ओर से

मेरा नाम डॉ. सुनील दीपक है। मैं भारत में जन्मा और वहीं मैंने स्कूल और मैडिकल कॉलेज की पढ़ाई की। मैंने अधिकाँश जीवन कुष्ठ रोग, विकलाँगताएँ, प्राथमिक चिकित्सा और सामुदायिक शोध के क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काम किया है और बहुत दुनिया घूमी है। मैं आजकल उत्तर-पूर्वी इटली के पहाड़ों से घिरे एक छोटे से शहर स्किओ में रहता हूँ।

मुझे उपन्यास पढ़ने का बचपन से शौक था। उपन्यास लिखने की पहली कोशिश मैंने करीब पच्चीस साल पहले शुरु की, जब मैं स्विटज़रलैंड में रहता था। मैं बहुभाषी हूँ, विभिन्न यूरोपीय भाषाएँ जानता हूँ, और लेखन की मेरी प्रारम्भिक कोशिशें अंग्रेज़ी और इतालवी भाषाओं में थीं, लेकिन मैं कभी कोई उपन्यास पूरा नहीं कर पाया। करीब दस साल पहले मैं रिटायर हुआ, फिर कुछ साल तक मैंने स्वतंत्र काम किया।

चार साल पहले, 2022 में मैंने हिंदी में लिखने की कोशिश की और इस बार मैं अपना पहला उपन्यास पूरा करने में सफल हुआ। एक बार यह सिलसिला शुरु हुआ, तो मैं लिखता जा रहा हूँ। मेरे पहले दो उपन्यास सामाजिक हैं, जो अभी प्रकाशित नहीं हुए हैं। "देवी प्रतिमा के रक्षक" मेरा तीसरा उपन्यास है, और पाठकों के सामने यही सबसे पहले आ रहा है।

बचपन में मुझे जासूसी, साईन्स-फिक्शन और फैंटेसी की किताबें भी बहुत अच्छी लगती थीं। बहुत समय से मैं भी ऐसी ही कोई हलकी-फुलकी सी किताब लिखना चाहता था। फैंटसी कथानक वाला यह लघु उपन्यास उस दिशा में मेरा पहला प्रयास है। मैं कुछ साल गुवाहाटी में रहा हूँ, और उत्तर-पूर्वी भारत में बहुत घूमा हूँ। इस उपन्यास के लिए मैंने वहीं की पृष्ठभूमि चुनी है। उपन्यास के अधिकतर शहर और गाँव सचमुच हैं, लेकिन सभी नहीं हैं - जैसे कि शंखासुर की पहाड़ी या डमरू द्वीप नहीं हैं। वहाँ के विवरण और उपन्यास की सब घटनाएँ और पात्र काल्पनिक हैं।

यह उपन्यास आप को कैसा लगा, इसमें कौन सी बातें आप को अच्छी लगीं या नहीं लगीं, आदि, अगर आप मुझे लिख कर बतायेंगे, विशेषकर मुझे आलोचना तथा सुझाव देंगे तो मैं आप का आभारी होऊँगा। मेरा ईमेल का पता है - sunil@kalpana.it अगर आप मुझे पत्र लिखेंगे तो मैं आप को उत्तर देने की अवश्य कोशिश करूँगा।

अगर आप मेरे उपन्यास के बारे में अपनी विस्तृत राय लिखेंगे तो मैं उसे अपने ब्लॉग "जो न कह सके" https://jonakehsake.blogspot.com/ तथा मेरी वेबसाईट कल्पना https://www.kalpana.it/ पर भी जगह दूँगा। मेरे ब्लाग और वेबसाईट पर आप को मेरे उपन्यासों के बारे में अन्य जानकारी भी मिल सकती है।

डॉ. सुनील दीपक (सेवा-निवृत)
स्किओ, इटली
अप्रैल 2026